गढ़वाली भाषा, व्याकरण एवं शब्दावली

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्याशाखा
(क्षेत्रीय भाषाएं विभाग)

फोन नं0 05946-261122, 261123
टोल फ्री नं0 18001804025
इ–मेल info@uou.ac.in
http://uou.ac.in

(गढ़वाली भाषा में प्रमाणपत्र कार्यक्रम)

अध्ययन बोर्ड

प्रोफेसर एच. पी. शुक्ल निदेशक, मानविकी विद्याशाखा उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय श्री रमाकांत बेंजवाल लोक साहित्यकार एवं लेखक, देहरादून, उत्तराखण्ड। श्री देवेश जोशी, लोक साहित्यकार एवं लेखक, देहरादून, उत्तराखण्ड।	डॉ0 राकेश चन्द्र रयाल एसोसिएट प्रोफेसर पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विद्याशाखा, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय श्री धर्मेन्द्र नेगी लोक साहित्यकार, लोककवि एवं लेखक, पौडी गढ़वाल, उत्तराखण्ड। श्री गिरीश सुन्दरियाल लोक साहित्यकार, लोककवि एवं लेखक, पौडी गढ़वाल, उत्तराखण्ड।

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

प्रोफेसर एच. पी. शुक्ल निदेशक, मानविकी विद्याशाखा उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय श्री नरेन्द्र सिंह नेगी लोक गायक, लोककवि एवं साहित्यकार, पौडी गढ़वाल, उत्तराखण्ड। श्रीमती बीना बेंजवाल लोक साहित्यकार, लोककवि एवं लेखक, देहरादून, उत्तराखण्ड ।	डॉ0 राकेश चन्द्र रयाल एसोसिएट प्रोफेसर पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विद्याशाखा, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय श्री गणेश खुगशाल 'गणी' लोक साहित्यकार एवं लेखक, पौडी गढ़वाल, उत्तराखण्ड ।

पाठ्यक्रम संयोजन

डॉ0 राकेश चन्द्र रयाल
एसोसिएट प्रोफेसर
पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विद्याशाखा
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

इकाई लेखक

इकाई सं0	इकाई का नाम	लेखक का नाम
1	गढ़वाली भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	श्री रमाकांत बेंजवाल
2	गढवाली भाषा का व्याकरण	श्रीमती बीना बेंजवाल
3	गढ़वाली की व्यावहारिक शब्दावली	श्री रमाकांत बेंजवाल
4	गढ़वाली में संवाद प्रस्तुति	श्रीमती बीना बेंजवाल
5	गढ़वाली की वर्गीकृत शब्दावली	श्री रमाकांत बेंजवाल
6	गढ़वाली की विशिष्ट शब्द संपदा	श्रीमती बीना बेंजवाल
7	शब्दकोश निर्माण एवं प्रयोग विधि	श्री रमाकांत बेंजवाल
8	हिंदी से गढ़वाली में अनुवाद	श्रीमती बीना बेंजवाल

पाठ्यक्रम सम्पादन

श्रीमती बीना बेंजवाल
लोक साहित्यकार, लोक कवि एवं लेखक, देहरादून, उत्तराखण्ड।

कॉपीराइट @/उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय।

संस्करणः प्रथम 2021

प्रकाशक : कुलसचिव, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, 263139 (नैनीताल)

इस सामग्री के किसी भी अंश को उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में अथवा मिमियोग्राफी चक्रमुद्रण द्वारा या अन्य पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इकाई-1

गढ़वाली भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

इकाई संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 गढ़वाल की प्राचीन जातियाँ

1.4 कत्यूरी राजवंश के अभिलेखीय साक्ष्य

1.5 गढ़वाल नाम तथा गढ़वाली भाषा नामकरण

1.6 गढ़वाली भाषा का सर्वेक्षण

1.7 प्रारंभिक गढ़वाली

1.8 मध्यकालीन गढ़वाली

1.9 वर्तमान गढ़वाली

1.10 अभ्यास प्रश्न

1.11 सारांश

1.12 शब्दार्थ

1.13 संदर्भ ग्रंथ सूची

1.14 निबंधात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

मानव समाज का सबसे बड़ा आविष्कार लिपि है। लिपि से पहले आदमी ने चित्र संकेतों से अपनी बात दूसरे तक संप्रेषित की। फिर भाव संकेत सामने आए और इसके बाद अक्षर। लिपि से ही वह अपनी बात हिसाब-किताब को लिखकर रखने लगा। अपने विचारों को सहेजने लगा। माना जाता है कि सत्तर हजार वर्ष पहले मानव जीवन में भाषा का आगमन हुआ और मौखिक स्वरूप को बदलते हुए लगभग 5-6 हजार साल पहले लिपि का आविष्कार हुआ। मानव जीवन में भाषा की उपयोगिता अपरिहार्य है। यह विचार विनिमय का माध्यम है। भाषा मन के भावों और विचारों को दूसरों तक पहुँचाने का कार्य करती है। दुनिया की लगभग साढ़े छह हजार भाषाओं के मूल में उनकी कोई-न-कोई बोली ही रही है। कोई भी भाषा यह दावा नहीं कर सकती है कि वह अपने निर्माण के समय से मानक स्तर पर थी।

गढ़वाली भाषा का उद्भव हिंदी से भी पहले हो गया था, इसकी पुष्टि गढ़वाली भाषा में प्राप्त पुरातात्विक अभिलेखों से हो जाती है। किंतु, गढ़वाली का परिनिष्ठित स्वरूप सामने न आने से यह अपने मानक स्वरूप में नहीं पहुंच सकी। किसी एक क्षेत्र की अनेक बोलियों में से कोई एक बोली विशेष ही राजनैतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और प्रशासनिक स्तर पर स्वीकार हो जाने पर भाषा अथवा मानक भाषा का पद प्राप्त कर लेती है।[1] विश्व में जितनी भाषाएँ हैं उनकी अपेक्षा लिपि बहुत कम हैं। क्योंकि कई भाषाओं की एक ही लिपि होती है। जैसे गढ़वाली भाषा की लिपि भी देवनागरी है।

हिमालय के पांच खण्डों में हरिद्वार से लेकर कैलाश पर्वत तक फैले वर्तमान गढ़वाल को पौराणिक समय में केदारखण्ड नाम से जाना जाता था। स्कंद पुराण (केदारखण्ड) के अध्याय-40 में केदारखण्ड का विस्तार दिया गया है। पुराणों में केदारखण्ड को स्वर्गभूमि माना गया है। वैदिक काल में गढ़वाल क्षेत्र को हिमवन्त देश (यस्येमे हिमवंतो महित्वा-ऋग्वेद 10:121: 4) तथा महाभारत में हिमवान नाम से जाना गया है। वेद, पुराण हों या रामायण अथवा महाभारत, इनमें वर्णित सार तथा रचना स्थलों के पुख्ता प्रमाण देखने से लगता है कि आदि हिन्दू धर्म संस्कृति का क्षेत्र केदारखण्ड (गढ़वाल) रहा है।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद पश्चात् निम्न विषयों को समझने में और उन पर अपनी राय बनाने में सक्षम होंगे:-

- गढ़वाल में निवास करने वाली प्राचीन जातियों के बारे में जानेंगे।
- गढ़वाल नाम तथा गढ़वाली भाषा के नामकरण के विषय में जानकारी होगी।
- भाषा सर्वेक्षण कब-कब हुआ, इसका ज्ञान प्राप्त होगा।
- प्रारंभिक, मध्यकालीन तथा वर्तमान गढ़वाली भाषा की जानकारी मिलेगी।

1.3 गढ़वाल की प्राचीन जातियाँ

भाषा मानव समाज की सबसे बड़ी शक्ति है। किसी भी भाषा के अतीत को जानने के लिए उस भाषाभाषी समाज के बारे में जानना जरूरी होता है। शिव, उमा (नंदा), यक्ष, नाग, गंगा और न जाने कितने देवी-देवता, तीर्थ और धार्मिक भावनाएँ हमें अपने उन पूर्वजों से मिली हैं जो आर्यों के आने से पूर्व इस देश में बसे थे।[2] गढ़वाल की प्राचीन जातियों में कोल, किरात, पुलिंद, तंगण तथा खस प्रमुख हैं। केदारमंडल खस मंडल से पूर्व किरात मंडल था।[3] किरात से भी प्राचीन यहाँ कोल जाति को माना जाता है। किरात मूल रूप में घुमंतू पशुचारक थे। महाभारत के वन पर्व 140:25 में यहाँ की किरात, तंगण व पुलिंद जातियों का पांडवों की बदरिकाश्रम यात्रा के समय यहाँ रहने का वर्णन है। कश्यप संहिता में यमनोत्तरी घाटी, कांगड़ा, बैजनाथ आदि स्थानों में इनके गढ़ों का उल्लेख है। प्राचीन काल में

कोल जाति आखेट और कंद, मूल, फल आदि से अपना निर्वाह करती थी। पूर्व की ओर से लघु हिमालय के ढालों पर पशुचारण करती हुई किरात जाति ने हिमालय प्रदेश में प्रवेश किया था। धीरे-धीरे कोल जाति को बीहड़ क्षेत्रों की ओर धकेल कर या आत्मसात् कर यह जाति असम से नेपाल, कुमाऊँ, गढ़वाल, कांगड़ा होती हुई स्पीति, लाहुल और लद्दाख तक फैल गई।[4]

केदारखंड 206: 4-5 में वर्णित है कि किरात जाति के लोग काले कंबल पहनते थे तथा धनुष-बाण लिए आखेट करते थे। महाभारत वन पर्व अध्याय-36 में उल्लेख है कि शिव ने किरात के वेष में अर्जुन से युद्ध किया था। डबराल 'केदार' शब्द की उत्पत्ति उन अनगढ़ शिलाओं व शिखरों जहाँ शिव रहते हैं, से मानते हैं।[5] किरात जाति को मंगोलों से संबंधित माना जाता है। मंगोलों के समान वे चपटी मुखाकृति, चपटा भाल, पिचकी तथा छोटी नाक, कम मूंछ-दाढ़ी, हृष्ट-पुष्ट, पीले या गेहुएँ रंग के होते हैं।[6] रामायण व महाभारत में इन प्राचीन जातियों का उल्लेख इस पर्वतीय क्षेत्र में होने से निश्चय ही ये जातियाँ महाकाव्य काल से पूर्व भी यहाँ निवास करती रही होंगी। इस क्षेत्र में मानव कब अस्तित्व में आया, इतिहास में स्पष्ट नहीं है। फिर भी अनुमान लगाया जा सकता है कि हिमालय में मानव का अस्तित्व काफी प्राचीनकाल से है।

मध्य हिमालय के इस भू-भाग को आज उत्तराखण्ड नाम से जाना जाता है। उत्तराखण्ड के एक भाग में गढ़वाली तथा दूसरे में कुमाउनी भाषा का प्रयोग होता है। हम यहाँ गढ़वाली भाषा के बारे में जानकारी देंगे। गढ़वाली भाषा के मूल स्रोत या उत्पत्ति पर भाषाविदों ने अलग-अलग मत दिए हैं। डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी इसे दरद-खस से उद्भूत मानते हैं। उनका मानना है कि मध्य हिमालयी भाषा मूलतः दरद खस प्राकृत है, जो मध्यकाल में राजस्थानी और अपभ्रंश से प्रभावित हो गई।[7] डॉ० शिवप्रसाद डबराल भी गढ़वाली का उद्भव खस प्राकृत से मानते हैं। डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, डॉ० उदयनारायण तिवारी, डॉ० भोलाशंकर व्यास, डॉ० टी० एन० दुबे आदि विद्वान गढ़वाली का उद्भव शौरसेनी अपभ्रंश से मानते हैं। वर्तमान में इसकी व्याकरणिक संरचना, वाक्य-विन्यास और विराम चिह्न अधिकांश शब्दावली हिंदी के ही समान है। केशव दत्त रुवाली मानते हैं कि गढ़वाली का मूल खस प्राकृत में निहित है पर हिंदी के अतिशय प्रभाव के कारण यह शौरसेनी से उद्भूत प्रतीत होती है।[8] डॉ० सुरेश ममगाई का मानना है कि गढ़वाली का शब्द-भण्डार अपने आरम्भिक चरण में वैदिक, संस्कृत, प्राकृत तथा विभिन्न अपभ्रंशों द्वारा विकसित भाषाओं से समृद्ध था। आगे चल कर मध्यकालीन भक्ति आंदोलन तथा यहाँ तीर्थ यात्रा पर आये लोगों के कारण उसमें अन्य भाषाओं की शब्दावली बढ़ती गई। वैदिक संस्कृत की शब्दावली पर हरिराम धस्माना जी, गुणानंद जुयाल जी, भजन सिंह 'सिंह' जी ने भी कुछ शब्द दिये हैं लेकिन कौन शब्द वेदों में किस सूक्त में प्रयुक्त हुआ है इस पर विवेचन नहीं किया गया है।

1.4 कत्यूरी राजवंश के अभिलेखीय साक्ष्य

कत्यूरी काल के ललितशूर के पांडुकेश्वर एवं कण्डारा गढ़ी से प्राप्त ताम्रपत्राभिलेख की भाषा पहाड़ी प्राकृत मानी जाती है। यह माना जाता है कि वर्तमान गढ़वाल में प्रारंभिक भाषायी साक्ष्य इसी राजवंश काल के हैं। कत्यूरी हिमालय का प्रथम राजवंश था।[9] एटकिंसन ने कत्यूरी शब्द को कटोर शब्द के समतुल्य मानकर कत्यूरी वंश को काबुल और पश्चिमी हिमालय के ढलानों में बसी कटोर नामक आयुधजीवी जाति का वंशज माना है।[10] डॉ० शिवप्रसाद डबराल पाल नरेशों के अभिलेखों से प्रमाणित करते हुए कत्यूरियों को पंवार नरेशों के समकालीन मानते हैं तथा इन्हें खस ही लिखते हैं।[11] प्राचीन समय में बाहर से आई जातियों में स्थान के नाम पर उपजाति रखने की परंपरा थी। उसी प्रकार कार्तिकेयपुर राजधानी होने से इन शासकों का नाम कत्यूरी पड़ा। कार्तिकेयपुर राजधानी का नामकरण कुल देवता कार्तिकेय के नाम पर पड़ा। राहुल भी कत्यूर को कार्तिकेयपुर का अपभ्रंश मानते हैं। उनके अनुसार कार्तिकेयपुर >कतियउर >कतिउर >कत्यूर अधिक स्वाभाविक प्रतीत होता है।[12]

कार्तिकेयपुर वर्तमान जोशीमठ को माना जाता है। डॉ० कठोच ताम्रपत्रों के साक्ष्य तथा इन शासकों के कुल देवता कार्तिकस्वामी देवस्थल के सामीप्य के आधार पर कार्तिकेयपुर जोशीमठ के दक्षिण में अलकनंदा घाटी में स्थित कहीं अन्य जगह पर होने का उल्लेख करते हैं।[13]

पाण्डुकेश्वर से प्राप्त ताम्र अभिलेखों में कत्यूरी शासकों की वंशावली तथा शासन व्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। ललितशूर, पद्मदेव व सुभिक्षराज द्वारा निर्मित अभिलेखों के आधार पर राहुल सांकृत्यायन ने इनका कार्यकाल 850 ई० से 1050 ई० तक माना है।[14] कत्यूरी नरेशों के प्राप्त ताम्रपत्रों व शिलालेखों से ज्ञात होता है कि इनके शासनकाल में सैन्य संगठन तथा मंत्री पद भी होता था। राजा भूमिकर भी लेता था। कत्यूरी काल में यह क्षेत्र मंदिर व मूर्तिकला के उत्कर्ष पर था। इस काल में ही यहाँ भव्य मूर्तियों तथा मंदिरों का निर्माण हुआ था। कत्यूरी काल में निर्मित मंदिर तथा मूर्ति-शिल्प आज भी 'कत्यूरी शैली' के नाम से विख्यात है।

केशव दत्त रुवाली जी के कथन से हमें सहमत होना चाहिए कि गढ़वाली भाषा दरद खस से उद्भूत हुई और ध्वनि, शब्द समूह, रूप संरचना, वाक्य विन्यास और विराम चिह्न हिंदी से ग्रहण करने पर इसे शौरसेनी अपभ्रंश से उत्पन्न माना जाने लगा। कदाचित् 9वीं-10वीं शताब्दी तक पैशाची-दरद भाषी मानव समाज इस क्षेत्र में निवास करता रहा होगा। कालांतर में राजस्थान, गुजरात, बंगाल, महाराष्ट्र, मध्य एवं दक्षिण भारत से तीर्थ यात्रा या अन्य कारणों से आने वाली विभिन्न प्रजातियाँ भी गढ़वाल के विभिन्न भागों में आकर स्थायी रूप से निवास करने लगीं। उन नवागंतुक जातियों का प्रभाव यहाँ की भाषा पर भी पड़ा।

1.5 गढ़वाल नाम तथा गढ़वाली भाषा नामकरण

गढ़वाल नाम से पूर्व इस भूभाग का नाम केदारखंड था। यह निश्चित है कि जब इस क्षेत्र का नाम गढ़वाल पड़ा होगा तब ही यहाँ बोली जाने वाली भाषा का नाम 'गढ़वाली' हुआ होगा। माना जाता है कि सोलहवीं सदी के प्रारंभ में राजा अजयपाल ने छोटे-छोटे गढ़ों का एकीकरण किया था। गढ़ों के कारण इस प्रदेश का नाम 'गढ़वाल' पड़ा।[15] पातीराम जी के अनुसार 'गढ़पाल' से इस क्षेत्र का नाम 'गढ़वाल' पड़ा।[16] हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'[17] यहाँ बह रही छोटी-बड़ी नदी के लिए 'गाड' शब्द प्रयुक्त होने से गाड वाला क्षेत्र 'गाडवाल' उत्पत्ति बताते हैं। मानशाह (1591-1611 ई.) के सभा कवि भरत ने 'मानोदय काव्य' में 'गढ़देश' नाम का प्रयोग किया है तथा अभिलेखीय साक्ष्यों में हाट गाँव से प्राप्त सन् 1640 ई. के फतेशाह के ताम्रपत्र में 'गढ़वाल संतान' शब्द मिलता है।[18] पन्द्रहवीं सदी से पूर्व किसी राजा (गढ़ाधिपति) की राजधानी को 'गढ़' ही कहा जाता था। गाडवाला से 'ग' में 'आ' की मात्रा विलुप्त नहीं हो सकती है। 'गढ़पाल' शब्द तंत्र-मंत्रों के अलावा कहीं प्रयुक्त नहीं हुआ है। प्राचीन समय में यहाँ बस रही जातियाँ भी अपने गाँव या गढ़ के नाम पर 'वाल' लगाकर अपनी उपजातियाँ रखती थीं। निश्चय ही इसी तरह गढ़ों के क्षेत्र 'गढ़' के साथ 'वाल' लगाकर 'गढ़वाल' शब्द की उत्पत्ति हुई। माना जाता है कि अजयपाल ने बावन प्रमुख गढ़ों पर विजय प्राप्त कर अपने राज्य का विस्तार किया था।

गढ़वाल में निवास करने वालों तथा उनके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को 'गढ़वाली' कहा जाने लगा। गढ़वाल के लोक साहित्य- जागर, पंवाड़े, लोक गाथा आदि 15वीं सदी से पूर्व के माने जाते हैं, इनकी भाषा गढ़वाली ही है। गढ़वाल की गढ़वाली भाषा से पूर्व उस क्षेत्र की भाषा को क्षेत्रीय नाम से जाना जाता था। जैसे- नागपुर की 'नागपुर्‌या', सिरनगर की 'सिरनगर्‌या', बधाण की 'बधाणी', राठ की 'राठी', दशोली की 'दशोल्या', टिहरी की 'टिर्‌याळी, सलाण की 'सलाण्या', गढ़वाल और कुमाऊँ की सीमा पर बोली जाने वाली 'मझ-कुम्मैया' आदि। भारत के भाषा सर्वेक्षण में जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन (1894-1928) ने भी इनके स्वरूप का उल्लेख इसी प्रकार किया है। वर्तमान में भी यह स्वरूप विद्यमान है।

1.6 गढ़वाली भाषा का सर्वेक्षण

1952 के बाद भाषा को आधार बनाकर राज्यों का निर्माण हुआ। 1971 की जनगणना में एक तरफ आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाएँ तथा दूसरी तरफ 'अन्य' में बाकी सभी भाषाएँ रखी गईं। इससे हमारी लोक-भाषाएँ हाशिए पर चली गईं। वर्ष 2001 की जनगणना में 122 भाषाएँ और 234 बोलियों की जानकारी मिलती है। सरकारी नीतियों के हिसाब से 10 हजार लोग अगर किसी भाषा को बोलते हैं तो वह भाषा है। जबकि यह माना जाता है कि वर्ष 2011 की जनगणना में गढ़वाली बोलने वाले 23,22,406 लोग हैं। किसी भी भाषा का संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल होना इतना महत्वपूर्ण

नहीं है जितना कि उस भाषा को कितने लोग बोलते हैं और उस भाषा में कितना साहित्य सृजन किया गया है, ज्यादा महत्व रखता है।

भारत का भाषा सर्वेक्षण जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन (1894-1928) द्वारा सरकारी खर्चे पर किया गया। भारतीय प्रशासनिक सेवा के अंग्रेज अधिकारी द्वारा 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' नाम से 21 खण्डों की प्रकाशित इस रिपोर्ट में 179 भाषा अर 544 बोलियों का सर्वेक्षण है। ग्रियर्सन अपनी रिपोर्ट के खण्ड-9 भाग-4 में पूर्वी पहाड़ी (नेपाली), मध्य पहाड़ी (गढ़वाली-कुमाउनी) और पश्चिमी पहाड़ी (हिमाचल की भाषाएँ) नाम से लिखते हैं कि मध्य पहाड़ी का सम्बन्ध 'आवन्त्य अपभ्रंश' से है और जौनसारी को वे पश्चिमी पहाड़ी से जोड़ते हैं। इस रिपोर्ट में वे गढ़वाली के 8 उपभेद- सिरनगर्या, नागपुर्या, दसौल्या, बधाणी, राठी, टिहर्याळी, सलाणी अर मंझ-कुम्मैया बताते हैं और उदाहरण सहित इनके अंतर को स्पष्ट करते हैं।

लगभग सौ वर्ष के बाद भाषा के जाने माने विद्वान प्रो० गणेश देवी जी ने वर्ष 2010 में भारत के 27 राज्यों के भाषा सर्वेक्षण पर काम शुरू किया। इस सर्वेक्षण में 3 हजार भाषा जानकारों तथा 500 भाषाविदों ने अपना योगदान दिया। प्रो० गणेश देवी बताते हैं कि विश्व में लगभग 6 हजार भाषाएँ बोली जाती हैं। 4 हजार भाषाएँ 30 वर्षों में समाप्त हो जाएँगी। हमारे देश में ही 850 भाषाएँ हैं। 50 साल में 400 भाषाएँ लुप्त हो जाएँगी। पिछले 50 वर्षों में ही हमारी 250 भाषाएँ खत्म हो गई हैं। वे बताते हैं कि 300 लोग जिस भाषा को बोलते हैं वह भाषा है। जिस भाषा में लिखा नहीं जा रहा है वह भाषा जल्दी लुप्त हो रही है। मौखिक परंपरा का युग अब समाप्ति पर है। विगत तीन दशकों से हमारे सामाजिक जीवन में बहुत परिवर्तन हुए हैं। वैश्वीकरण के इस युग में अपनी भाषा को बचाने के लिए शब्द संग्रह जरूरी हो गए हैं। जिस भाषा की शब्दावली जितनी बोधगम्य, परिष्कृत तथा पारिभाषिक होगी उसका साहित्य भी उतना ही स्तरीय होगा। वे बताते हैं कि अरुणाचल में सबसे ज्यादा 90 भाषाएँ और गोवा में सबसे कम 3 भाषाएँ बोली जाती हैं। महानगरों में देश-विदेश के कोनों-कोनों से आए लोग अपनी रोजी-रोटी के लिए काम-धंधा करते हैं इसलिए 300 के आसपास भाषाएँ एक ही महानगर में बोली जाती हैं।

भारत की भाषाओं के सर्वेक्षण पर प्रो० गणेश देवी बोलते हैं कि यह सर्वेक्षण ग्रियर्सन के सर्वेक्षण से भिन्न है। 'पीपुल्स लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' वहाँ के लोगों द्वारा अपनी भाषा पर किया गया सर्वेक्षण है। 35 हजार पृष्ठों वाले इस सर्वेक्षण में 27 राज्यों की 780 भाषाओं के 50 खण्ड हैं और प्रत्येक राज्य का अलग भाग है। भारतीय लोकभाषा सर्वेक्षण का 30वां खण्ड 'उत्तराखण्ड की भाषाएँ' हिंदी में 2014 में प्रकाशित हुआ। 260 पृष्ठों का प्रकाशित 'लैंग्वेज ऑफ उत्तराखण्ड' अंग्रेजी में 2015 में ओरयंट ब्लेकस्वॉन से छपा है। इस तीसवें खण्ड के मुख्य संपादक प्रो० गणेश देवी, संपादक प्रो० शेखर पाठक और प्रो० उमा भट्ट हैं। इस सर्वेक्षण में गढ़वाली के लिए डॉ० अचलानंद जखमोला, जाड- सुरेश ममगाई, जौनपुरी- सुरेन्द्र सिंह पुण्डीर, जौनसारी- इन्द्र सिंह नेगी, बंगाणी- बलवीर सिंह

रावत, मार्च्छा- भूपेन्द्र सिंह राणा, रवांल्टी- महावीर रवांल्टा ने कार्य किया। गढ़वाल की कुल सात भाषाओं का सर्वेक्षण इस खण्ड में हुआ है।

इस सर्वेक्षण में प्रत्येक भाषा का संक्षिप्त इतिहास, जहाँ-जहाँ यह भाषा बोली जाती है उस भौगोलिक क्षेत्र की जानकारी है। ऐसी पुस्तकों का विवरण जिसमें इस भाषा के बारे में लिखा गया हो, की संदर्भ ग्रंथ सूची एवं अनुवाद सहित गीत और कथाओं के उदाहरण तथा एक दूसरे के सांस्कृतिक सम्बन्धों पर भी प्रकाश डाला गया है। भाषाओं के भी उपभेद अलग से दिए गए हैं। गढ़वाली और कुमाउनी में साहित्य के साथ शब्दकोश और व्याकरण पर भी काम हुआ है पर अन्य भाषाओं में न ही शब्दावली पर काम हुआ है और न ही कोई खास लिखित साहित्य है।

1.7 प्रारंभिक गढ़वाली

गढ़वाली का प्रारम्भ कब से हुआ इसके प्रमाण नहीं मिलते हैं। गढ़वाली का बोलचाल या मौखिक रूप तब से है जब से यहाँ लोग रहने लगे। उसका सतही स्वरूप मौखिक रूप से विद्यमान लोक साहित्य में देखा जा सकता है क्योंकि उस समय इसे लिपिबद्ध करने की परम्परा नहीं थी। जैसा कि इससे पूर्व बताया गया है कि कत्यूरी राजवंश काल के ताम्रपत्राभिलेखों की भाषा पहाड़ी प्राकृत है। प्रारंभिक गढ़वाली पंवार कालीन जगतपाल 1455 ई. के लगभग से लिखित रूप में सामने आने लगी। देवप्रयाग मंदिर विषयक महाराज जगतपाल के दानपत्र अभिलेख में गढ़वाली क्रियापद और परसर्गों युक्त संस्कृतनिष्ठ गढ़वाली का प्रयोग मिलता है:-

श्रीसंवत् 1512 शाके 1377 चैत्रमास शुक्लपक्षे चतुर्थी तिथौ रविवासरे जगतपाल रजवार ले शंकर भारती कृष्ण भट्ट कौं रामचंद्र का भट सर्वभूमी जाषिनी कीती जै जा योटो मट सिल का मट लछमन का मट दिनो सर्वकर अकर सबदान गुदान नोट की नटाली भूवै की औताली रामचन्द्र ले यो नी लिखित यातक ये दुलखी जै तु परसोरा दूसरू सहज यामा चललू सु रजना जै मास जगतपाल रजवार ले दिनी तै भास करीक ली रजवारा शंकरनन्द को कृष्ण भारती को दीना सारवगम देव पर सौदा सुरजु सदजवान की तुलुह मीर गां गूह सोधी। जगतपाल रजवार ले दिनी तैं भात करी।

15वीं सदी में पंवार वंशीय राजा अजयपाल ने ही गढ़वाल नाम की नींव डाली और उसने गढ़वासियों पर उदारतापूर्वक शासन करने की नीति अपनाई। गढ़वाल का सीमांकन करने वालों में वही पहला शासक है; इसलिए उसी के समय से उसके अटल सीमा स्तंभ के लिए कहावत चली आ रही है- 'अजैपाल को ओड़ो'। यह कहावत जनभाषा में है, जो उस काल की गढ़वाली का आभास देती है। ओड़ा या ओड़ो गढ़वाली शब्द है।[1] (गढ़वाली- केशव दत्त रुवाली, साहित्य अकादेमी, 2015, पृ. 93) खसप्राकृत में यह ओडो रहा होगा, जो आज भी उसी रूप में प्रयुक्त होता है। देवलगढ़ में अजयपाल का लेख 'अजैपाल को धरम पाथौ भण्डारी करौंउक' पूर्ण गढ़वाली में उत्कीर्ण है। राजा मानशाह का ढांडरी (नांदलस्यूं) काली मंदिर मण्डप अभिलेख संस्कृत और गढ़वाली मिश्रित है। मालद्यूळ, टिहरी गढ़वाल में

लक्ष्मीनारायण मंदिर की नींव के पत्थर पर सन् 1785 ई. का लेख टिहरी की शुद्ध गढ़वाली में है। डॉ० यशवन्त सिंह कठोच ने दीउल केदारेश्वर मंदिर के अभिलेखों को प्रकाशित किया है। इनमें वजीर चंद्रमणि डंगवाल की 24 अगस्त, 1757 की सनद; महाराज प्रदीप शाह की 9 सितम्बर, 1757 की सनद; महाराज प्रदीप शाह की 11 जनवरी, 1761 की सनद; कुंवर सुदर्शन शाह की 9 मई, 1800 की सनद; महाराज सुदर्शन शाह की 9 नवम्बर, 1836 की सनद गढ़वाली में लिखी गई हैं। इस प्रकार प्राचीन अभिलेखों से पता चलता है कि गढ़वाल के राजवंश की राजकीय भाषा गढ़वाली ही थी।

1.8 मध्यकालीन गढ़वाली

गढ़वाल में देवताओं के जागर, आह्वान, स्तुति, मांगलिक गीत व तंत्र-मंत्र पीढ़ी-दर-पीढ़ी याद किए जाते रहे। ढोल सागर इनमें से एक है। इसे सर्वप्रथम 1932 में लिपिबद्ध किया गया। तंत्र-मंत्रों का हस्तलिखित संग्रह गाँवों में मिलता है। इन तंत्र-मंत्रों पर नाथपंथ का प्रभाव दिखाई पड़ता है। इन मंत्रों में राजा अजयपाल को पंवार वंशीय की जगह नाथ संप्रदाय का माना गया है।

ऊँ कार्तिक मास, ब्रह्म पक्ष, आदीत वार, भरणी नक्षत्र जरहर लीऊँ, उपाई माता लक्ष्मी की कूखी लीयो औतार। प्रथम नील। नील को अनील। अनील को अवीक्त। अवीक्त को वीक्त। वीक्त को पुत्र धौं-धौंकार। धौं-धौंकार को भयो अजेपाल राजा। अजेपाल की भई अजला देवी। अजला देवी गर्ववंती भई.....।

तंत्र-मंत्रों के पश्चात् सन 1750 से गढ़वाली पत्र साहित्य, शिलालेख आदि लिखे जाने लगे थे। सन् 1750 ई० में महाराज प्रदीपशाह के राज ज्योतिषी जयदेव बहुगुणा जी की 'रंच जुड्यां पंच जुड्यां जूड़िगे घिमसाण जी' गढ़वाली में पहली कविता मानी जाती है। सन् 1820 ई. के आसपास ईसाई मिशनरी ने बाइबिल (न्यू टेस्टामेंट) का गढ़वाली अनुवाद करवाया था। अमेरिकी मिशनरियों ने सन् 1876 में 'गोस्पेल ऑफ मैथ्यू' का गढ़वाली अनुवाद प्रस्तुत किया। माना जाता है कि राजा सुदर्शन शाह के बाद नरेन्द्र शाह तक की प्राप्त राजाज्ञाएँ गढ़वाली में मिलती हैं। उन्नीसवीं सदी में हर्षपुरी, हरिकृष्ण दौर्गादत्ति, लीलानंद कोटनाला आदि की कविताएँ गढ़वाली में लिखी मिलती हैं। 20वीं सदी के आरम्भ में गढ़वाली भाषा के प्रति रुचि रखने वाले जनमानस ने 'गढ़वाल यूनियन' के नाम से एक संगठन बनाया। यूनियन के कार्यकर्ताओं तथा उनसे प्रेरणा लेकर कई अन्य लोगों की कविताएँ, लेख आदि गढ़वाली में छपने लगे। शुरूआती दौर में प्रमुख रूप से सत्यशरण रतूड़ी, चन्द्रमोहन रतूड़ी, बलदेव प्रसाद शर्मा, तारादत्त गैरोला, शशि शेखरानंद आदि ने गढ़वाली गीत व कविताओं की रचना की थी। गद्य के क्षेत्र में भी इस युग में थोड़ा-बहुत कार्य भवानी दत्त थपलियाल, शालिग्राम वैष्णव, गिरिजादत्त नैथानी आदि ने किया।

सन् 1930 के दशक में भजन सिंह 'सिंह' ने आज तक लिखे गए गढ़वाली साहित्य से हटकर सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध लिखना प्रारम्भ किया। कमल साहित्यालंकार, विशालमणि शर्मा, सत्य

प्रसाद रतूड़ी, ललिता प्रसाद, चन्द्रकुंवर बर्त्वाल आदि लेखकों ने भी इस दशक में गढ़वाली भाषा को स्फूर्ति प्रदान की। स्वतंत्रता आंदोलन से सम्बन्धित रचनाओं का प्रकाशन करके भगवती शरण शर्मा, भगवती प्रसाद पांथरी, घनानंद घिल्डियाल आदि ने राष्ट्र चेतना को जागृत किया।

1.9 वर्तमान गढ़वाली

स्वतंत्रता के बाद गढ़वाली साहित्य में हलचल-सी होने लगी। गीत, कविता, कहानी के साथ गढ़वाली नाटक, निबंध, गढ़वाली व्याकरण, गढ़वाली भाषा कोश, मुहावरा व लोकोक्ति कोश के क्षेत्र में भी कार्य होने लगा। गोविन्द चातक जी के 'गढ़वाली भाषा' (1959), अच्युदानन्द घिल्डियाल जी की 'गढ़वाली भाषा और साहित्य' (1962), मोहनलाल बाबुलकर जी के 'गढ़वाली लोक साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन' (1963), गुणानंद जुयाल जी के 'मध्य पहाड़ी भाषा का अनुशीलन और उसका हिंदी से सम्बन्ध' (1967), हरिदत्त भट्ट 'शैलेश' जी के 'गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य' (1976), गोविंद चातक जी के 'भारतीय लोक संस्कृति का संदर्भः मध्य हिमालय' (1990) तथा अबोध बंधु बहुगुणा जी द्वारा 'गढ़वाली व्याकरण की रूपरेखा' (1960), शिवराज सिंह रावत 'निसंग' जी की 'भाषा तत्व और आर्य भाषा का विकास' (2010), रमाकान्त बेंजवाल की 'गढ़वाली भाषा की शब्द संपदा' (2010), रजनी कुकरेती जी की 'गढ़वाली भाषा का व्याकरण' (2010), सुरेश ममगाई जी की 'गढ़वाली भाषा और व्याकरण' (2019) नामक पुस्तक प्रकाशन के साथ-साथ अन्य लेखकों ने भी गढ़वाली व्याकरण की महत्ता पर प्रकाश डाला। गढ़वाली में शब्दकोशों पर जयलाल वर्मा जी (1982), मालचंद रमोला जी (1994), अरविंद पुरोहित जी व बीना बेंजवाल जी (2007) के गढ़वाली हिंदी शब्दकोश प्रकाशित हुए। उत्तराखण्ड संस्कृति विभाग का डॉ० अचलानंद जखमोला जी एवं भगवती प्रसाद नौटियाल जी द्वारा संपादित गढ़वाली हिंदी अंग्रेजी शब्दकोश 2014 ई. में प्रकाशित हुआ। अब तक गढ़वाली से हिंदी के शब्दकोश प्रकाशित हुए थे लेकिन रमाकान्त बेंजवाल एवं बीना बेंजवाल द्वारा पहला हिंदी गढ़वाली (रोमन रूप सहित) अंग्रेजी शब्दकोश (2018) का प्रकाशन इस बीच हुआ।

1.10 अभ्यास प्रश्न

1. गढ़वाली भाषा की लिपि क्या है?
2. गढ़वाली भाषा का नाम किसके आधार पर पड़ा?
3. 'रंच जुड़्यां पंच जुड़्यां जूड़िगे घिमसाण जी' कविता के कवि का नाम बताइए।
4. 'पीपुल्स लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' में गढ़वाली की.....भाषाओं का सर्वेक्षण किया गया।
5. 'गढ़वाली भाषा' पुस्तक के लेखक गोविंद चातक हैं। सत्य/असत्य

1.11 सारांश

इस इकाई के अध्ययन करने से आप यह जान चुके होंगे कि गढ़वाल में कौन-कौन प्राचीन जातियाँ निवास करती थीं। कैसे इस क्षेत्र का नाम गढ़वाल पड़ा तथा गढ़वाल नाम से ही यहाँ की भाषा का नाम गढ़वाली हुआ। गढ़वाली भाषा से पहले इस क्षेत्र में भाषाओं का नाम क्या था और कब-कब इस भाषा का सर्वेक्षण हुआ। गढ़वाली भाषा के क्रमागत विकास की भी जानकारी आपको हुई होगी।

1.12 शब्दार्थ

उद्भूत- उत्पन्न, ताम्रपत्राभिलेख- ताँबे के पत्रक पर लिखा हुआ अभिलेख, लिपि- ध्वनि चिह्न, ओडो- सीमा का विभाजक चिह्न, पाथो- लगभग दो किलो का एक मापक, प्राकृत भाषा- स्वाभाविक भाषा, अपभ्रंश- प्राकृत से उत्पन्न आर्यभाषा, शौरसेनी- शूरसेन या मध्यदेश की बोली।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर- 1. देवनागरी, 2. गढ़वाल, 3. जयदेव बहुगुणा, 4. सात 5. सत्य

1.13 संदर्भ

1. गढ़वाली- केशव दत्त रुवाली, पृ. 36 एवं 42
2. उत्तराखण्ड यात्रा दर्शन- शिवप्रसाद डबराल, पृ. 2-3
3. हिमालय परिचय-1- राहुल सांकृत्यायन, पृ. 51
4. उत्तराखण्ड का इतिहास- डबराल, पृ. 95
5. उत्तराखण्ड का इतिहास- भाग-4, डबराल, पृ. 48
6. उत्तराखण्डः इतिहास और संस्कृति- दुम्का एवं जोशी, पृ. 6
7. ऑरिजन एण्ड डेवलेपमेंट ऑफ बंगाली लेंग्वेज- डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी, पृ. 6-8
8. गढ़वाली- केशव दत्त रुवाली, पृ. 90
9. हिमालय परिचय-1- राहुल सांकृत्यायन, पृ. 71
10. हिमालयन गजेटियर-2- एटकिंसन, पृ. 381-82
11. उत्तराखण्ड का इतिहास-1- डबराल, पृ. 422
12. हिमालय परिचय-1- राहुल सांकृत्यायन, पृ. 101
13. मध्य हिमालय-1- डॉ. कठोच, पृ. 110
14. हिमालय परिचय-1- राहुल सांकृत्यायन, पृ. 71
15. गढ़वाल का इतिहास- रतूड़ी, पृ. 2
16. गढ़वाल एनशिऐंट एण्ड मॉडर्न- पातीराम, पृ. 13
17. गढ़ सुधा- 1984-85, चण्डीगढ़, पृ. 1

18. उत्तराखण्ड के वीर भड़- चौहान, पृ. 3
19. मध्य हिमालय भाग-1- यशवन्त सिंह कठोच, भागीरथी प्रकाशन, 1996
20. उत्तराखण्ड का नवीन इतिहास- यशवन्त सिंह कठोच, विनसर प्रकाशन, देहरादून, 2010

1.14 निबन्धात्मक प्रश्न

1. गढ़वाली भाषा के प्रारंभिक, मध्यकालीन एवं वर्तमान स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
2. 'पीपुल्स लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' का स्वरूप तथा इसके अंतर्गत हुए गढ़वाली भाषा के सर्वेक्षण की जानकारी दीजिए।

इकाई-2

गढ़वाली भाषा का व्याकरण (Grammar of Garhwali Language)

इकाई संरचना

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 गढ़वाली भाषा वर्ण विचार
2.4 शब्द विचार: संज्ञा- लिंग, वचन, कारक
2.5 सर्वनाम
2.6 विशेषण
2.7 क्रिया
2.8 अव्यय
2.9 वाक्य विचार
2.10 वाच्य
2.11 उपसर्ग
2.12 प्रत्यय
2.13 समास
2.14 रस
2.15 अलंकार
2.16 शब्द स्रोत
2.17 सारांश
2.18 शब्दार्थ
2.19 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
2.20 संदर्भ ग्रंथ सूची
2.21 निबंधात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

भाषा विचार-विनिमय का माध्यम है। मनुष्य समाज में रहते हुए अपनी बात को दूसरों तक पहुँचाने तथा दूसरों की बात समझने के लिए भाषा का प्रयोग करता है। इस समझने और समझाने के लिए व्याकरण का प्रयोग किया जाता है। व्याकरण वह विद्या है जिसके अंतर्गत बोलचाल और साहित्य में प्रयुक्त भाषा के स्वरूप, उसके गठन, अवयवों तथा प्रकारों, उनके पारस्परिक संबंधों और रचना विधान तथा रूप परिवर्तन का विवेचन किया जाता है। भाषा के वर्ण, शब्द एवं वाक्य तीन अंग हैं।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आपः-

- गढ़वाली भाषा के व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- गढ़वाली भाषा के उपसर्ग एवं प्रत्यय जानेंगे।
- गढ़वाली भाषा में रस एवं अलंकारों से परिचित होंगे।

2.3 वर्ण विचार

भाषा का मूल तत्व मुख से निःसृत ध्वनि है। यह ध्वनि जब लिखित संकेतों में व्यक्त की जाती है तो वर्ण कहलाती है। गढ़वाली में हिंदी की ध्वनियों के अतिरिक्त भी कई ध्वनियाँ हैं। जैसे- ह्रस्व स्वरों का अति ह्रस्व उच्चारण भी इसमें मिलता है। उसी प्रकार प्लुत का दीर्घ प्लुत उच्चारण भी गढ़वाली में देखने को मिलता है। इसके पीछे भौगोलिक कारण हैं। पहाड़ी परिवेश होने के कारण लोग दूर-दूर से एक दूसरे के साथ बातें करते हैं, उन्हें बुलाते हैं।

गढ़वाली के प्रमुख स्वर हैंः- अ, अऽ, आ, आऽ, इ, इऽ, ई, उ, उऽ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

गढ़वाली में 'अ' का उच्चारण अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग तरह से होता है। जैसे- 'घर' शब्द घऽर, घौर, घैर, तथा 'डर' शब्द डऽर, डौर, डैर आदि रूपों में उच्चरित होता है।

बल देने के लिए दीर्घ ध्वनियों को अधिक दीर्घ करने की प्रवृत्ति भी गढ़वाली में मिलती है। जैसेः-

छाळि दाळ (पतली दाल) छाळीऽ दाळ (बहुत पतली दाल)

भलि नौनि (अच्छी लड़की) भलीऽ नौनि (बहुत अच्छी लड़की)

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ ह्रस्व एवं दीर्घ ध्वनियों में कई बार उच्चारण में बहुत अंतर नहीं किया जाता जैसेः- पाणि, पाणी; रोटि, रोटी; नौनि, नौनी (इकारान्त का ही ज्यादा प्रयोग होता है)।

'स' और 'श' के साथ जहाँ संस्कृत में अनुस्वार होता है वहाँ गढ़वाली उच्चारण में उसके साथ 'ग' जुड़ जाता है। जैसे- अंग्स, वंग्स, कंग्स, संग्सार।

- व्यंजन : क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, ढ़, ण्हः, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, र्‌ह, ल, ळ, ल्ह, व, श, ष, स, ह।

'ळ' और 'ण' का उच्चारण गढ़वाली में हिंदी से भिन्न है। गढ़वाली में शब्द के मध्य एवं अंत में प्रयुक्त 'न' 'ण' हो जाता है। जैसे- विनाश-बिणास, वनाग्नि-बणाग, कठिन-कठिण, पानी-पाणि, फेन-फेण, रानी-राणि।

कहीं-कहीं शब्दों के प्रारंभ तथा मध्य में 'व' के स्थान पर 'ब' का ही प्रयोग मिलता है। यथा- वनवास-बणबास, वास्तु-बास्तु। 'श' तथा 'ष' का उच्चारण 'स' की तरह होता है। तत्सम शब्दों में 'ष' का उच्चारण 'ख' हो जाता है। जैसे- षष्ठी-खस्ठी, वृष-बिर्ख। संयुक्त व्यंजन 'क्ष' कहीं 'ग', 'ग्छ', 'छ'

और 'ख' रूप में उच्चरित होता है। यथा- राक्षस- रागस, रक्षा- रग्छा, वृक्ष- बृग्छ, क्षार- छारो या खारो। 'य' कहीं-कहीं 'ज' उच्चरित होता है। जैसे- यजमान- जजमान, यात्रा-जातरा, यज्ञ-जज्ञ (जग्गी)।

गढ़वाली की व्यंजन ध्वनियों में 'ळ' एक विशिष्ट ध्वनि है। यह वैदिक ध्वनि है तथा पालि में भी 'ळ', 'ळ्ह' हैं। 'ळ' के उच्चारण से शब्द के अर्थ में निम्नवत् अंतर आ जाता है:-

आलु (गीला, नम)	आळु (चैत्र मास में कन्या को मायके से भेजी गई सौगात)
काली (दुर्गा का एक रूप)	काळी (काले रंग की)
खल्यौण (खाली करना)	खळ्यौण (तालाब से पानी उलीचना)
खाल (चमड़ा)	खाळ (तालाब)
खोल (खोलने के लिए कहना)	खोळ (बाह्य आवरण)
घोल (घोंसला)	घोळ (घोलो [आज्ञार्थक])
चलकण (चमकना)	चळकण (डरना, चौंकना)
चाल (षड्यंत्र/आकाशीय बिजली)	चाळ (छानो [आज्ञार्थक])
छाल (पेड़ की छाल)	छाळ (धो [आज्ञार्थक])
छाला (नदी का किनारा)	छाळा (फफोले)
तालु (तुतलाने वाला)	ताळु (ताला)
तौली (बड़ी पतीली)	तौळी (उतावली)
दियाल (दे दे)	दियाळ (दानी, उदार)
दिवाल (दीवार)	दिवाळ (दीपावली)
न्यौलि (एक गीत)	न्यौळि (नेवले की एक प्रजाति)
ढोल (एक वाद्ययंत्र)	ढोळ (डालो [आज्ञार्थक])
पितलु (बीजरहित कच्ची फली)	पितळु (पीतल)
फूली (फूल गया)	फूळी (देगची)
बेलम (विलंब)	बेळम (मन बहलाने का साधन)
बेल (बिल्व)	बेळ (बेला, समय)
भेल (छत्ता)	भेळ (पहाड़ की खड़ी ढलान)
मंगल (शुभ)	मंगळ (मंगलवार)
मेला (बीज)	मेळा (मेला)
मोल (कीमत)	मोळ (गोबर)
यकुला (अकेला)	यकुळा (एक बार, आधा दिन)
रौला (छोटा-सा नाला)	रौळा (कोलाहल)
लाल (एक रंग)	लाळ (लार)

लूलि (दिव्यांग स्त्री)	लूळि (दुर्बल, कमजोर)
हाल (हालात)	हाळ (आँच)
सलकौण (पीटना)	सळकौण (निगलना)
सलाण (दक्षिण-पूर्वी गढ़वाल)	सळाण (दरार पड़ना)
साल (वर्ष)	साळ (गोशाला)
सिलौण (सिलाना)	सिळौण (जल में विसर्जित करना)

2.4 शब्द विचार: संज्ञा

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, जाति, प्राणी और भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा के तीन भेद हैं:-

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा- राम, गोपेश्वर, रामैण, जमुना।
2. जातिवाचक संज्ञा- गौं, नेता, इस्कुल्या, ग्वेर, पोथि, डांडा, लिख्वार।
3. भाववाचक संज्ञा- तीस, कळकळि, खोप, पिरेम, रौंस, घीण, अपणैस।

- भाववाचक संज्ञा बनाना : जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं क्रिया शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द निम्नवत् बनाए जाते हैं–

1. जातिवाचक संज्ञाओं		से	भाववाचक संज्ञा
	पंडित		पंडितै
	मनखि		मनख्यात
2. सर्वनाम शब्दों से-	अपणो		अपणैस
3. विशेषण शब्दों से-	मोटो		मोटैस
4. क्रिया शब्दों से-	छपण		छपै
	लिखण		लिखै

- संज्ञा के विकारक तत्व : जिन तत्वों के आधार पर वाक्यों में प्रयुक्त होने वाले संज्ञा शब्दों के रूप में परिवर्तन होता रहता है उन्हें संज्ञा के विकारक तत्व कहते हैं। ये तत्व हैं- लिंग, वचन और कारक।

लिंग 2.4.1

संज्ञा के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु या प्राणी के स्त्री या पुरुषवाची होने का बोध होता है उसे लिंग कहते हैं। गढ़वाली में लिंग दो प्रकार के होते हैं–

1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग

गढ़वाली में प्राकृतिक लिंगभेद के आधार पर ही लिंग का निर्धारण होता है। इसके अलावा वस्तु या प्राणी के छोटे या बड़े आकार के आधार पर भी लिंग निर्धारित होता है।

1. प्राकृतिक लिंग भेद के अनुसार–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
बळ्द	गौड़ि
रज्जा	राणि

2. वस्तु के छोटे या बड़े आकार के आधार पर–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
नथुलो	नथुलि
पुंगड़ो	पुंगड़ि
गौड़ो	गौड़ि

2.4.2 वचन

शब्द के जिस रूप से उसके एक अथवा अनेक होने का बोध हो उसे वचन कहते हैं। गढ़वाली में एकवचन और बहुवचन ही मिलते हैं।

1. उकारान्त या ओकारान्त शब्द बहुवचन में आकारान्त हो जाते हैं-

एकवचन	बहुवचन
ढुंगो	ढुंगा
लाखड़ो	लाखड़ा
बाखरो	बाखरा
डाळो	डाळा

2. विकारी आकारान्त शब्दों के बहुवचन में 'ओं' लग जाता है-

एकवचन	बहुवचन
चाचान	चाचोंन
दगड्यान	दगड्योंन

3. विकारी इकारान्त शब्दों के बहुवचन में 'यों' लग जाता है-

एकवचन	बहुवचन
गौड़िन	गौड्योंन
बिराळिन	बिराळ्योंन

2.4.3 कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य में प्रयुक्त अन्य शब्दों के साथ उसके संबंध का ज्ञान होता है उसे कारक कहते हैं। गढ़वाली में कारक आठ होते हैं। इनके कारक चिह्न निम्नवत् हैं–

1. कर्ता कारक- 'न' या 'ल' (नौनान किताब बाँचलि)
2. कर्म कारक- तैं, सणि, खुणि, कु, क (ब्वे नौना तैं बुथ्यौणी च)
3. करण कारक- न, से, सी, ती, ले (मिन दाथुलिन घास काटि)
4. संप्रदान कारक- तैं, तई, खुणि, क, कु (वीं खुणि किताब लई छ)
5. अपादान कारक- न, बिटि (डाळा बिटि आम झड़्णा)
6. संबंध कारक- को, की, का, रो, री, रा (वे को इस्कूल कख च?)

गढ़वाली भाषा में संबंध कारक का यह विशिष्ट रूप दृष्टव्य है:-

पिता का कोट- बुबौ कोट, धरती का दुख- धरत्यू दुख, छोटे भाई का बस्ता- भुलौ बस्ता, भाषा का इतिहास- भाषौ इत्यास, दादी की गोद- दादीऽ खुच्यलि, मामा की किताब- मामै किताब।

7. अधिकरण कारक- पर, मा, मू, मंग, मथे, उंद (सुप्पो छज्जा मा च)
8. संबोधन कारक- हे!, अला!, अली!, अजी!, रे! (अला! बरखा मा ना भीज)

2.5 सर्वनाम

संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। सर्वनाम के निम्न छह भेद हैं-

1. पुरुषवाचक सर्वनाम-

   उत्तम पुरुष- मैं, मि, मी, हम, हमु, मेरो, मेरि, हमारो, हमारि।

   मध्यम पुरुष- तु, तुम, तेरो, तुमारो।

   अन्य पुरुष- सु, उ, वु, स्या, वा, सि।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम- सु, सो, स्यो, सी, सि, स्ये, स्या, वा, यु, वो, इ, ई, या, यों, यूं।
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम- क्वी, कुछ, किछु।
4. संबंधवाचक सर्वनाम- जु, जो, ज्वा, जै, जौंन, जींन।
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम- को, क्व, क्या, क्वा, कै, कौ, कैन।
6. निजवाचक सर्वनाम- अफु, अपणो, अपणि, अप्वी।

2.6 विशेषण

संज्ञा और सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। विशेषण के चार मुख्य भेद हैं-

1. गुणवाचक विशेषण-

गुण - मयाळु, स्वाणिलो, रौंत्याळि, सगोरदार, धणकर।
दोष - दुंदकारि, नखरि, कज्याखोर, सीलि, निकम्मो।
रंग - काळि, पिंगळि, हैरि, सुकेलि, कळसौंगि।
दशा - ढगड्यांदो, ढिमक्या, दुख्यारु, सजिलो, गळ्यूं।
आकार - तिकोण्या, लंबो, गोळ, रींग्यूं।
काल - पुराणो, नयो, सौदो, ब्याळ्यो, परस्यो।
अवस्था - बाळो, ज्वान, अधखड़ो, बुढ्या।
स्पर्श - गदगदो, खरखरो, कटकटो, लसलसो।
स्वाद - चलमलो, खटण्यां, ल्वण्यां, घळताण्यां।

2. संख्यावाचक विशेषण-

निश्चयवाचक- एक, द्वी, तीन, पैलो, दुसरो, तिगुणो।

अनिश्चयवाचक- कतगा, कति, जतगा, उतगा।

3. परिमाणवाचक विशेषण- एक माणि घ्यू, द्वी नाळि जमीन।

4. सार्वनामिक विशेषण- तनो, उनो, या, वा।

विशेषण शब्दों का निर्माण

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
रंग	रंगिलो	सज	सजिलो
नाखरा	नखर्याळो	जोनि	जुन्याळि
चबराट	चबरट्या	दूध	दुधाळ
बसग्याळ	बसग्याळि	खुद	खुदेड़
नाज	नजिलि	कीस	किसाळा

2.7 क्रिया

जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो उसे क्रिया कहते हैं। क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। क्रिया के रूप धातु से बनते हैं। गढ़वाली में संस्कृत से आई कुछ धातुएँ इस प्रकार हैं- बाँचणु (वाच), रटणु (रट), गणनु (गण), करणु (कृ)।

क्रिया के भेद

कर्म के आधार पर : कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं-

1. अकर्मक क्रिया- (अ) बिमला अटगणी छ।

(ब) नौन्याळ हैंसणू छ।

(स) बिमार कणाणू छ।

(द) चखुला उड़णा छन।

2. सकर्मक क्रिया- (अ) मि चिट्ठी लिखदूँ।

(ब) घस्यारि घास काटदि।

(स) पंदेरि पाणि सारदि।

(द) इस्कुल्या किताब बांचद।

संरचना के आधार पर

1. नामधातु क्रिया- खुद- खुदेणु, हात- हत्यौण, झूट- झुट्यौण, भाप- भप्यौण, लात- लत्यौण, घाम- घम्यौण, पाणि- पण्यौण, ढुंगु- ढुंग्यौण, धाद- धद्यौण, माटु- मट्यौण, खाड- खड्यौण, जुत्ता- जुत्यौण, गांठु- गंठ्यौण, पूजा- पूजण, बाच- बच्यौण, सोटगि- सोटग्यौण, भाड़- भड्यौण, सोद- सोदण, मुटगि- मुटग्यौण, गाज- गज्यौण, घात- घत्यौण।

2. प्रेरणार्थक क्रिया- प्रथम प्रेरणार्थक द्वितीय प्रेरणार्थक

भरौण	भरवौण
सिलौण	सिलवौण
न्यळौण	न्यळवौण
लिखौण	लिखवौण

3. पूर्वकालिक क्रिया- (अ) वा खाणौ खैक बौण चलिगे।

(ब) इस्कुल्या किताब पढ़ीक स्येगे।

4. संयुक्त क्रिया- (अ) तु वख जै करि।

(ब) वेन काम नि करि सकणु।

5. अनुकरणात्मक क्रिया- (अ) बाखरी लराणी छ।

(ब) घंडोळा घणमणाणा छन।

काल

क्रिया के जिस रूप से किसी काम के होने के समय का बोध होता है उसे काल कहते हैं।

काल के भेद– 1. वर्तमान काल 2. भूतकाल 3. भविष्यत् काल

1. वर्तमान काल– (अ) सामान्य वर्तमान : घाम अछलेंद, बाळो खेलद।

(ब) पूर्ण वर्तमान : डाकवान अयूं छ, हळ्यान हौळ लगै छ।

(स) अपूर्ण वर्तमान : वा कूटणी छ, सि जाणा छन।

2. भूतकाल– (अ) सामान्य भूत : मिन फिलम देखि, सु इस्कूल ग्याई।

(ब) पूर्ण भूत : पौणा ऐ छा, सु डाळा पर चढ़ि छौ।

(स) अपूर्ण भूत : द्यो बरखणू छौ, हम खेलणा छा।

(द) आसन्न भूत : वींन आग जगैलि, तुमुन गौं देखियालि।

3. भविष्यत् काल– (अ) सामान्य भविष्यत् : सु भोळ जालु, सि ब्यखुनि दां औला।

(ब) सम्भाव्य भविष्यत् : भैजि दिल्ली जाला।

(स) हेतु हेतुमद् भविष्यत् : बीदो होलो त बजार जौलो।

(द) अपूर्ण भविष्यत् : हम कौथिग देखणा होला, सु पढ़णो होलो।
घस्यारि घास काटणी होलि।
ग्वेर गोरु चरौणा होला।

क्रिया रूप के सम्बन्ध में

गढ़वाली भाषा में अपूर्ण वर्तमान में धातु के साथ एकवचन में 'णू' तथा बहुवचन में 'णा' लगता है। इसके साथ एकवचन में सहायक क्रिया 'च' या 'छ' तथा बहुवचन में छन भी साथ रहती है। जैसे- सु खाणू छ, नौन्याळ पढ़णा छन। इसी प्रकार सामान्य भविष्यत् काल में धातु में एकवचन में 'लो' या 'लु' तथा बहुवचन में 'ला' जोड़ते हैं। स्त्रीलिंग में 'लि' हो जाता है। जैसे- बट्वे गौं मा रुकलो, कौथिगेर कौथिग देखला, नौनि भोळ सौर्यास जालि। गढ़वाली में क्रिया रूपों के प्रयोग की खूब छूट है। जैसे- 'होता है' के लिए- ह्वांद/होंदु/ ह्वंद; 'हुआ' के लिए- ह्वाई/ह्वे; 'हो गया' के लिए- ह्वे ग्या/ह्वे ग्याई/ ह्वेगि; 'हो रहा है' के लिए- ह्वाणू च/होणू च/ ह्वौणू च; 'होगा' के लिए- ह्वालु/होलु/ह्वलु।

2.8 अव्यय

अव्यय या अविकारी शब्द वे होते हैं जिनमें लिंग, वचन, कारक, काल आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता है। जैसे- सु भोळ जालो, वा भोळ जालि, सि भोळ जाला।

अव्यय के भेद

1. क्रिया विशेषण अव्यय-

(अ) रीतिवाचक- सरासर, मठु-मठु, झट, फटाफट आदि।

(ब) कालवाचक- अबि, कबारि, आज, ब्याळि, भोळ, सदानि।

(स) स्थानवाचक- उब्बु, निस, भैर, भितर, संग्ति, तीर, ढीस।

(द) परिमाणवाचक- जरा, भौत, मस्त, बिण्डि, अमिथ्या, मणि।

2. समुच्चयबोधक अव्यय- अर, पर, कि, किलैकि, नेतर, त, य, इलै।

3. संबंधबोधक अव्यय- बिना, बिगर, निमित्त, सामणि, दगड़ा, तरफां।

4. विस्मयादिबोधक अव्यय- यराँऽ!, याऽ!, चुचि!, अजी!, उई!, औ!, गो!, छिः!, अलाऽ!, दज्जा!, अहा!, बक्किबात!, अरे! हे ब्वे!, हे बब्बा!, त्वा!

2.9 वाक्य विचार

एक विचार को पूर्णता से प्रकट करने वाला शब्द समूह वाक्य कहलाता है। वाक्य के प्रमुख दो खण्ड होते हैं।

1. उद्देश्य- जिसके बारे में कुछ कहा जाए उसे उद्देश्य कहते हैं।
जिनके विषय में कुछ कहा गया है- इस्कुल्या बांचद, मंगसिरु किसाण च।

2. विधेय- जो कुछ कहा जाए उसे विधेय कहते हैं।
जो कुछ कहा गया है- इस्कुल्या बांचद, मंगसिरु किसाण च.

वाक्य के भेद

रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैंः-

1. साधारण वाक्य- जिन वाक्यों में एक कर्ता और उसकी एक ही क्रिया हो, वे साधारण वाक्य कहलाते हैं. जैसे- *ग्वेर गोरु चरौंदा, घस्यारि घास काटदि।*

2. संयुक्त वाक्य- दो या दो से अधिक साधारण वाक्य जब समानाधिकरण समुच्चयबोधकों जैसे- अर, या, पण, लेकिन, परंतु आदि अव्ययों के योग से परस्पर मिलते हैं तो वे संयुक्त वाक्य कहलाते हैं. जैसे- *सुबेर ह्वे अर चखुला बासण बैठिन, नौनि गीत गांदिन अर चौंफला लांदिन, मि जग्वाळणू छौ पण तुम नि ऐन।*

3. मिश्रित वाक्य- जिन वाक्यों में एक मुख्य या प्रधान उपवाक्य और एक अथवा अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं, मिश्रित वाक्य कहलाते हैं। जैसे- *वेन द्येखि कि पन्देरि आणी छन, मिन सूणी कि तुमारि बदलि ह्वेगि।*

अर्थ के आधार पर वाक्य भेद

1. विधान सूचक वाक्य- जिन वाक्यों में क्रिया के करने या होने का सामान्य कथन हो। जैसे-
डांडि-कांठि ह्यूंन अछप ह्वेगेनि।

2. निषेधवाचक वाक्य- जिस वाक्य में किसी बात के न होने का बोध हो।

जैसे- *आज वा साट्टि गोडण नि गे।*

3. आज्ञासूचक वाक्य- जिस वाक्य में किसी को आज्ञा या आदेश दिया गया हो।

जैसे- *सरासर भैर जा।*

4. प्रश्नवाचक वाक्य- जिस वाक्य में प्रश्न किया जाए। जैसे- *तुमुन क्य खाण?*

5. इच्छावाचक वाक्य- जब किसी बात की इच्छा प्रकट हो। जैसे- *जुगराज रयां।*

6. संदेहवाचक वाक्य- जिस वाक्य से किसी बात का संदेह प्रकट हो।

जैसे- *आज बरखा ह्वे सकदि।*

7. संकेतवाचक वाक्य- जहाँ वाक्य में संकेत या शर्त हो।

जैसे- *अगर तु पुंगड़ा जालि त मि बि औलु।*

8. विस्मयादिबोधक वाक्य- जिस वाक्य से विस्मय, क्रोध, भय, दुख आदि का भाव प्रकट हो। जैसे- *अरे! ढांडु पड़ण से वेकि फसल बरबाद ह्वेगि।*

2.10 वाच्य

क्रिया के जिस रूप से ज्ञात हो कि वाक्य में क्रिया द्वारा संपादित विधान का विषय कर्ता है, कर्म है अथवा भाव, वाच्य कहलाता है। वाच्य के तीन प्रकार होते हैं:-

1. कर्तृवाच्य- क्रिया के जिस रूप से वाक्य के उद्देश्य का बोध हो-

(अ) बाळो गेंदुवा खेलद।

(ब) बुढ्या फत्वे पैरद।

2. कर्मवाच्य- क्रिया के जिस रूप से वाक्य का उद्देश्य कर्मप्रधान हो-

(अ) बाळा से गेंदुवा खेल्यै जांदु।

(ब) बुढ्या से फत्वे पैर्यै जांदि।

3. भाववाच्य- क्रिया के जिस रूप से भाव की प्रधानता प्रकट हो-

(अ) दुख्यरा से उठि नि सकेंदो।

(ब) मि से हिटि नि सकेंदो।

2.11 उपसर्ग

वे शब्दांश जो किसी शब्द के आरंभ में लगकर उसके अर्थ में विशेषता ला देते हैं या उसका अर्थ बदल देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।

अ- अगो, अधौ, असज, अधीत, अबाटा, अफबदु, असुखि।

अद- अदलाटो, अदमिरो, अदमरो, अदनाड़ो।

अध- अधखड़ो, अधघैल, अधकपाळ्या, अधखायो, अधपाको।

अण- अणबायो, अणपढ़, अणफोड़ो, अणमणो, अणगोडो।

अप- अपजसि, अपखौ, अपकुर्त्यो।

औ- औतारु, औजाड़, औनार।

कम- कमखौ, कमसल, कमतैस।

कु- कुकाठ, कुखाणौ, कुलाड्या, कुनेथ, कुजगा, कुपथ।

दुर- दुरदसा, दुरगति, दुरदिन।

ना- नाबालिक, नालैक, नासमझ।

नि- निहोण्या, निसेणि, निखाणि, निलाणि।

निर- निरमुंडु, निरभागि, निरबांटु।

पर- परताप, परधान, परपंच, परदेस।

बिन- बिनदेख्याँ, बिनखयाँ, बिनपढ़ूयाँ।

बे- बेमान, बेबग्त, बेनाप।

भौं- भौंकखि, भौंकुछ, भौंकबि।

हर- हरदिन, हरघड़ि, हरबार।

सु- सुपाण, सुबाण, सुफल, सुदिन।

स्यूं- स्यूंजुत्ता, स्यूंबस्ता, स्यूंजड़ा, स्यूंजोर।

2.12 प्रत्यय

प्रत्यय वे अक्षर या अक्षर समूह होते हैं जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर या तो उसके अर्थ में कुछ परिवर्तन कर देते हैं या उसके अर्थ को पूरी तरह बदल देते हैं।

आऊ- कमाऊ, दिखाऊ, बिकाऊ, समाऊ।

आक- धपाक, भचाक, तराक, कचाक, धमाक, पताक।

आट- छमणाट, लराट, खबड़ाट, भिभड़ाट।

आर- गितार, धुनार, जितार।

आण- बौराण, नौकर्याण, रिंगाण।

आर्त- मोळार्त, लवार्त, गोडार्त।

आन- छपान, सरान, भरान, मिजान।

आड़- रिसाड़, नच्वाड़, भज्वाड़।

आड़ा- पथराड़ा, तिल्वाड़ा अल्वाड़ा।

आड़ी- अग्वाड़ी, पिछाड़ी, सट्याड़ी।

आड़ो- कोदाड़ो, भंगल्वाड़ो, गिंवाड़ो।

आळ- छुंयाळ, दुधाळ, रमाळ।

आळु- टुबख्याळु, घुंघर्याळु, नखर्याळु, मनख्याळु।

इलो- जसिलो, रंगिलो, सजिलो।

उड़ि- जिकुड़ि, नाकुड़ि, दंतुड़ि।

उलो- नथुलो, यकुलो, थकुलो।

एर- मंगळेर, खंदेर, घतेर, डोलेर।

ऐत- पंचैत, संजैत, चकड़ैत, लठैत।

ऐस- अपणैस, मोटैस, पैदैस, गरमैस।

एटो- झंगरेटो, सुळेटो, बगेटो, मेळेटो, मसेटो।

एण्डो- लोखरेण्डो, नळेण्डो, डोखरेण्डो, कुतरेण्डो।

औट- दिखलौट, सजौट, मिलौट, तरौट।

कार- सुनकार, यकुलकार, उदंकार, लेणकार।

कौंका- पधान कौंका, समदि कौंका, चचा कौंका।

चारि- पंडाचारि, पधानचारि।

दार- मजुरिदार, कमौदार, दिमागदार, मायादार, जोड़िदार।

दारि- कुटुमदारि, थोकदारि, दुन्यादारि, दिकदारि।

दारो- खंदारो, पढ़दारो, देंदारो।

पट्ट- फुकपट्ट, चिफळपट्ट, सल्लपट्ट।

रोळि- हैंसारोळि, किलारोळि, कवारोळि।

2.13 समास

दो या दो से अधिक शब्दों के विभक्ति चिह्नों को हटाकर उनसे बना हुआ एक नवीन एवं सार्थक शब्द समास कहलाता है।

समास के भेद

1. अव्ययीभाव समास- जिस समास का पहला पद अव्यय हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं. जैसे- हरदिन, यथाशक्ति, हरसाल, निर्जडु, बिचाबिचि।

2. तत्पुरुष समास- जिस समास का दूसरा पद प्रधान होता है। जैसे- घरबैसो, घुड़साळ, गडछाला, मटखाण, ग्वरबाटो, मनचैंदो, गंगाजल, गढ़रतन।

3. कर्मधारय समास- जिस समास का उत्तरपद प्रधान हो और पहले और दूसरे पद में विशेषण-विशेष्य का संबंध हो. जैसे- मळमास, मात्मा, कळमुख, बीरबाला।

4. बहुव्रीहि समास- जिस समास में कोई तीसरा पद प्रधान हो। जैसे-नीलकंठ, पितांबर, गळद्यो, आसबंद, फुलमुंड्या, दुमुख्या, लमपुछ्या।

5. द्विगु समास- जिस समास में पहला पद संख्यावाची हो। जैसे- बारामासा, दुबाटा, तिरजुगी, चौमासो, पंचामिर्त, सत्वांसो, नौर्ता, चौपाया।

6. द्वंद्व समास- जिस समास में दोनों पद प्रधान हों। जैसे- दिन-रात, भै-बैणा, हात-खुटा, डाळि-बोटळि, दूद-घ्यू, डौंरि-थकुलि, डांडि-कांठि।

2.14 रस

रस का शाब्दिक अर्थ आनंद होता है। काव्य को पढ़ते या सुनते समय जो आनंद मिलता है उसे रस कहते हैं। रस के भेद निम्नवत् हैं:-

शृंगार रस-

(अ) संयोग शृंगार-

तेरि मेरि च जोड़ी कै मा न बिंगै दे, सौंजड्यों कि छ्वीं छन तू छ्वीं न लगै दे।
इनि छ्वीं लगौणू मन बोद भारी, बिस बणलो अमृत स्वी-सै न करै दे।

(अबोधबंधु बहुगुणा)

(ब) वियोग शृंगार-

कबि चुल्लू जगांदि बग्त आई, कबि चुल्लू मुझोंदि बग्त आई,
नि घुटेई फेर गफ्फा, तुमारि याद खांदि बग्त आई।

(नरेन्द्र सिंह नेगी)

वीर रस- तु सिंई सिंहणी तैं जगाणू छई,
आगि पर हाथ कैकू लगाणी छई।

(चन्द्रमोहन रतूड़ी)

हास्य रस- सुणिले सुनिता म्यारा हाल, एड़ाणों छौं तेरी खुद मा, जनकि चौर्‌या स्याळ।
प्यार का सरसू घबळाणा छन, रात्यों-रात्यों तड़काणा छन,
तेरि खुद मा धध्वड़ा लगैकि, खर्सण्या ह्वेगि खाल।

(हरीश जुयाल 'कुटज')

रौद्र रस- सूणी विनती गौरि की, अंग होंद नाराज
आंखि धैरी बरमण्डम, ब्वल्दा मैना आज।

(कन्हैयालाल डंडरियाल)

करुण रस- हे उचि डांड्यो तुम निसि जावा, घणी कुळायों तुम छांटि होवा।
मैं कु लगीं छ खुद मैतुड़ा की, बाबा जी को देखण देश द्‌यवा।।

(तारादत्त गैरोला)

वीभत्स रस- खुचल्या पर नौनु उखी हगणू, उखि भात कि थाळि सजाणी च वा,
छन रोटि मा जौंकि जुवां बिलक्यां, द्वीई हाथन गात कन्याणी च वा,
छन भात मा बाळ, त रोटि मा बाळ, त दाळि मा लाळ चुवाणि च वा,
मुंडळो छिमनै कि पकाणि च वा, कुछ खाणि च, हौरि लुकाणि च वा।

(भजन सिंह 'सिंह')

अद्भुत रस- जब छया फुकेन्द छै फुट मा सब रंक अर राजा अपार,
उख 'सत्तर एकड़' चैंद चिता कू यू समाजवाद्यूं तयार।

(भजन सिंह 'सिंह')

शान्त रस- कूड़ा व पुंगड़ा धन-माल सारा, नौना-जनानी छन जो पियांरा।
वे रोज ये नी क्वी काम आला, ये धर्म-सत्कर्म ही साथ जाला।

(योगेन्द्र पुरी)

वात्सल्य रस- ऐजा ऐजा हे निन्दरा, यूं बाळी आख्यूं मा सर,
लीजा लीजा बाळा थैं, स्वीणों की पांख्यू मा फुर्र।

(नरेन्द्र सिंह नेगी)

भक्ति रस- कविता जो तू बणौलि सूणा वर दे, गढ़वाळि गीत बणै,
झुमर्याळा बरदान ज्ञान को दे, ज्वानूक तैं ज्वानि दे...

(सर्वेश्वर दत्त कांडपाल)

2.15 अलंकार

अलंकार अलम+कार से बना है। यहाँ पर 'अलम' का अर्थ 'आभूषण' है। जैसे कोई स्त्री आभूषणों से सुसज्जित या अलंकृत होती है उसी प्रकार भाषा को सुंदर बनाने के लिए अलंकारों का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्व अलंकार कहलाते हैं।

अनुप्रास अलंकार- जब किसी वर्ण की क्रमशः बार-बार आवृत्ति हो तब जो चमत्कार होता है उसे अनुप्रास अलंकार होता है।

बर्सू बाद बौड़ि जन बाळी बग्वाळ ऐ,
पैली-पैली माया की पैली अंग्वाळ छै।

(गिरीश सुन्दरियाल)

यमक अलंकार- जब एक ही शब्द कई बार प्रयोग हो और हर बार उसका अर्थ भिन्न हो, वहाँ पर यमक अलंकार होता है।

यन मा होलू कन जु मन माया नि जोड़ालू,

खेल माया कू न खेल पछतौण पौड़ालू।

(नरेन्द्र सिंह नेगी)

श्लेष अलंकार- जहाँ एक ही शब्द से कई अर्थ जुड़े होते हैं।

मि चांदु कि म्यारा देशौ हर गंगल्वडु भगवान ह्वा।
बेशक ह्वा पर म्वाळौ माद्यो नि ह्वा।

(नेत्रसिंह असवाल)

उपमा अलंकार- जब किसी व्यक्ति या वस्तु की तुलना किसी समान गुण धर्म के आधार पर किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु से की जाए, वहाँ पर उपमा अलंकार होता है।

झुमकि-सीं तुड़तुड़ी मंगरि, मखमली हैरि-सीं अंगड़ी,
फील्वर्यों हलकदी धोंप्यली, घुंगटि-सीं लौंकदी कुयेड़ी।

(कन्हैयालाल डंडरियाल)

रूपक अलंकार- जहाँ पर उपमेय और उपमान के बीच के भेद को समाप्त करके उसे एक कर दिया जाता है, वहाँ पर रूपक अलंकार होता है।

जिन्दगी एक घट छ,
अर जनानि वे घट सणि चलाण वाळि पाणि कि कूल।

(बीना बेंजवाल)

उत्प्रेक्षा अलंकार- जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना प्रकट की जाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

खून से वा भरीं छै दिखेणी कनी
दैत मा हो चढ़ीं क्रुद्ध-चंडी जनी।

(भजन सिंह 'सिंह')

अतिशयोक्ति अलंकार- जब किसी व्यक्ति या वस्तु का लोक की सीमा या मर्यादा से ज्यादा बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाए, उसे अतिशयोक्ति अलंकार कहते हैं।

पकयां चखुलौं तैं बि हवा मा उडै दिंदन उडाण वळा,
ढंडि का माछौं तैं बि डाळौं मा चढ़ै दिंदन चढ़ाण वळा।

(धर्मेन्द्र नेगी)

मानवीकरण अलंकार- जब प्रकृति के विभिन्न उपादानों पर कवि मानवीय गतिविधियों का आरोप करता है।

बथौं लगांद जख धार मा गीत,
डाळा ख्यलणा सरौं छन भैजी।

(मदन मोहन डुकलाण)

2.16 अभ्यास प्रश्न

1. 'खाल' का अर्थ चमड़ा है तो 'खाळ' का क्या होगा?

2. लाखड़ो शब्द का बहुवचन बताइए।

3. भाषा का इतिहास 'भाषौ इत्यास' है तो पिता का कोट को क्या लिखेंगे?

4. 'बर्सू बाद बौड़ि जन बाळी बग्वाळ ऐ' काव्य पंक्ति में.....अलंकार है।

5. 'मयाळु' विशेषण शब्द है। सत्य/असत्य

2.17 सारांश

इस इकाई के अध्ययन करने से आप यह जान चुके होंगे कि गढ़वाली व्याकरण की ध्वनि, शब्द समूह, रूप संरचना, वाक्य विन्यास और विराम चिह्न हिंदी से ग्रहण किए गए हैं। गढ़वाली की व्यंजन ध्वनियों में 'ळ' एक विशिष्ट ध्वनि है। 'ल' के स्थान पर 'ळ' का प्रयोग होने से शब्द का अर्थ बदल जाता है। गढ़वाली भाषा में सम्बन्ध कारक के चिह्न अधिकांश संज्ञा शब्दों के साथ ही प्रयुक्त होते हैं, वे अलग से नहीं लिखे जाते हैं। गढ़वाली के क्रिया रूपों में विभेद देखने को मिलता है। गढ़वाली भाषा के मानकीकरण की ओर बढ़ने के लिए इन विभिन्न रूपों में एकरूपता जरूरी है।

2.18 शब्दार्थ

बग्वाळ- दीपावली, अंग्वाळ- आलिंगन, बथौं- हवा, कुयेड़ी- कोहरा, खुचल्या- गोद, मैतुड़ा- मायका, सिंई- सोई हुई, पुंगड़ा- खेत, स्वीणा- सपने, सौंजड़्या- साथी, कुळायों- चीड़ के वृक्षों।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर- 1. तालाब, 2. लाखड़ा, 3. बुबौ कोट, 4. अनुप्रास 5. सत्य

2.19 संदर्भ

1. गढ़वाली हिंदी शब्दकोश- अरविंद पुरोहित एवं बीना बेंजवाल

2. हिंदी गढ़वाली अंग्रेजी शब्दकोश- रमाकान्त बेंजवाल एवं बीना बेंजवाल

3. गढ़वाली भाषा की शब्द संपदा- रमाकान्त बेंजवाल

4. गढ़वाली भाषा और व्याकरण- सुरेश ममगाई

5. गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य- हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'

6. गढ़वाली भाषा- गोविंद चातक

2.20 निबन्धात्मक प्रश्न

1. अर्थ के आधार पर वाक्यों के प्रकार उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
2. सम्बन्ध कारक में गढ़वाली और हिंदी में क्या भिन्नता है? उदाहरण सहित बताइए।

इकाई-3

गढ़वाली की मानक व्यावहारिक शब्दावली

(Standard practical vocabulary of Garhwali Language)

इकाई संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 गढ़वाली भाषा में औच्चारणिक विभेद

3.4 गढ़वाली भाषा के मानक स्वरूप पर विमर्श

3.5 गढ़वाली भाषा की मानक व्यावहारिक शब्दावली

3.6 समानार्थी शब्द

3.7 अभ्यास प्रश्न

3.8 सारांश

3.9 शब्दार्थ

3.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

3.11 निबंधात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

भाषा का विकास एक सतत् प्रक्रिया है। इसका क्रम इस प्रकार है- व्यक्ति-बोली> बोली> उपभाषा> भाषा> राजभाषा> राष्ट्रभाषा> विश्वभाषा। इन सात चरणों से ही भाषा की विकास यात्रा संपन्न होती है। इस विकास यात्रा में लोकभाषा और जनभाषा दो प्रमुख पड़ाव भी होते हैं। स्वरूप की दृष्टि से भाषा के दो रूप होते हैं। पहला मौखिक स्वरूप तथा दूसरा लिखित स्वरूप। लिखित भाषा के भी दो भाग होते हैं। पहली साहित्यिक भाषा और दूसरी कामकाज की भाषा। कामकाज की भाषा सरकारी कार्यालयों में काम करने की भाषा और तकनीकी एवं ज्ञान-विज्ञान की भाषा होती है।

भाषा-साहित्य का इतिहास, व्याकरण और शब्दकोश किसी भी भाषा की विकास यात्रा में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। यदि उक्त सात पड़ावों को संक्षिप्त किया जाए तो दुनिया की सभी भाषाएँ अपने तीन सोपानों से होकर आगे बढ़ी हैं। सबसे पहले वह बोली के रूप में रहती है। दूसरे में वह भाषा बन जाती है और तीसरा और महत्वपूर्ण पड़ाव उसका मानक रूप में आना है। एडवर्ड फिनेगन लिखते हैं कि- 'मानक भाषा किसी भाषा का वह भाषायी प्रयोग या भाषिका होती है जो किसी समुदाय, राज्य या राष्ट्र में संपर्क भाषा का दर्जा रखे और लोक-संवाद में प्रयोग हो। इन भाषाओं को अक्सर एक मानकीकरण की प्रक्रिया से गुजारकर मानक बना दिया जाता है, जिसमें उनके लिए औपचारिक व्याकरण, शब्दकोशों

और अन्य भाषा वैज्ञानिक कृतियों का गठन व प्रकाशन किया जाता है।' कोई मानक भाषा बहुकेन्द्रीय या एककेन्द्रीय हो सकती है। अरबी, अंग्रेजी, फारसी, जर्मन और फ्रांसीसी भाषाएँ बहुकेन्द्रीय हैं, यानि उनके एक से अधिक मानक रूप हैं। इनके विपरीत रूसी, इतालवी, जापानी और हिंदी आदि कई भाषाएँ एककेन्द्रीय हैं, यानि उनका एक मानक रूप है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य है:-

- गढ़वाली भाषा में औच्चारणिक विभेद के विषय में बताना।
- गढ़वाली भाषा के मानक स्वरूप की जानकारी हासिल करना।
- मानक शब्दावली से परिचित कराना।

3.3 गढ़वाली भाषा में औच्चारणिक विभेद

गढ़वाल के अलग-अलग क्षेत्रों में गढ़वाली भाषा में औच्चारणिक भिन्नता है। समाज में मौजूद भाषा के कई भेदों में से किसी एक का चयन करके मानक बनाने की प्रक्रिया शुरू होती है। जो मानक एक होने की आवश्यकता है। किसी भी क्षेत्र को लें, सभी क्षेत्रीय बोलियों/भाषाओं में प्रशासनिक कार्य, साहित्य रचना, शिक्षा देना या आपस में बातचीत कठिन और अव्यावहारिक भी है। गढ़वाली की ही बात लें तो इसके आठों रूपों में ऐसा करना बहुत सम्भव नहीं है। सिरनगर्या और सलाणी भाषी समाज गढ़वाली के दसोल्या या बधाणी रूप को समझने में कठिनाई महसूस करता है। यदि गढ़वाली का एक मानक स्वरूप होगा तो सभी क्षेत्रों के लोग उस एक मानक भाषा के माध्यम से आपस में संवाद कर सकते हैं और लिख व पढ़ सकते हैं। मानक भाषा किसी भाषा के उस रूप को कहते हैं जिसे उस क्षेत्र का शिक्षित समाज अपनी भाषा का आदर्श रूप मानता है और प्रायः सभी औपचारिक परिस्थितियों में, लेखन, प्रशासन, शिक्षा और मीडिया में यथासाध्य उसी का प्रयोग करने का प्रयत्न करता है।

गढ़वाली व्याकरण एवं शब्दकोशों का प्रकाशन हो जाने से गढ़वाली के औच्चारणिक विभेद पर चर्चा होने लगी। साहित्य में एक ही शब्द को अलग-अलग ढंग से लिखा जा रहा है। लेखन में इस विभेद को एकरूप किया जाना आवश्यक है। गढ़वाली में औच्चारणिक विभेद पर पत्र-पत्रिकाओं में आलेख, विमर्श तथा कार्यशालाओं का आयोजन भी हो रहा है। इन कार्यशालाओं में गहन विचार विमर्श के बाद कुछ व्यावहारिक शब्दों के औच्चारणिक मानक पर अधिकांश भाषा जानकारों तथा गढ़वाली साहित्यकारों की सहमति बनी है। गढ़वाली भाषा अब अपने मानक स्वरूप अपनाने के अंतिम सोपान पर है।

3.4 गढ़वाली भाषा के मानक स्वरूप पर विमर्श

औच्चारणिक विभेद पर अधिकांश भाषा जानकारों एवं साहित्यकारों ने इन बिंदुओं पर सहमति व्यक्त की:-

1- सभी भाषाओं का इतिहास है कि वे कठिन से सरल की ओर अग्रसर होती हैं। आज गढ़वाली में सभी विधाओं में लेखक सरलता की ओर बढ़ रहे हैं जिससे पढ़ने वालों को आसानी हो रही है। आधे अक्षर जहाँ बहुत जरूरी हों वहीं प्रयोग किए जाएँ।

2- गढ़वाली भाषा के अधिकांश विद्वान संज्ञा और क्रिया के मूल पदों को ईकारान्त किए जाने की बात करते रहे हैं लेकिन ज्यादातर गढ़वाली लेखक इकारान्त का ही प्रयोग कर रहे हैं तथा गढ़वाली की मूल ध्वनि भी इकारान्त ही है। जैसे- अपनी (अपणि), अपनी ही (अपणी), तुम्हारी (तुमारि), तुम्हारी ही (तुमारी), पानी (पाणि) आदि।

3- व्यावहारिक शब्दों में उकारान्त और ओकारान्त का प्रयोग अपनी-अपनी सुविधानुसार कर सकते हैं। जैसे- मेरु/मेरो, पुंगड़ु/पुंगड़ो, नथुलु/नथुलो आदि।

4- जैसे हिंदी को मानक स्वरूप बनाने के लिए मेरठ के आसपास की खड़ी बोली को आधार बनाया गया वैसे ही सिरनगर्या गढ़वाली को आधार माना गया। गढ़वाल के बाकी इलाकों के शब्द पर्यायवाची के रूप में प्रयोग होते रहेंगे।

5- सम्बन्ध कारक की जहाँ तक बात है हम हिंदी की तरह का, को, कु रूप में लिख रहे हैं। जबकि गढ़वाली के संज्ञा अर सर्वनाम के साथ सम्बन्ध कारक जोड़ा जाता है। जैसे- भाषा की- भाषै, भाषा का- भाषौ, पिता जी का- बाबौ/बुबौ, मानकीकरण की- मानकीकरणै, मामा का- मामौ, सलाण की- सलाणै, गढ़वाल की- गढ़वाळै, गढ़वाली का- गढ़वाळ्यौ, गढ़वाली के- गढ़वाळ्या, उत्तराखण्ड का- उत्तराखण्डौ, पहाड़ की- पाड़ै, भाई की चिट्ठी- भुलै चिट्ठी/भैजी चिट्ठी, देश का- देसौ, मुल्क का- मुलुकौ, श्रीनगर की- सिरनगरै।

5- गढ़वाली बोलने में 'ष' और 'श' का प्रयोग नहीं होता है पर लिखने में 'ष', 'श', 'स' तीनों का प्रयोग हो रहा है। ऐसा तय हुआ कि तीनों का प्रयोग अपनी सुविधानुसार कर सकते हैं।

6- 'ळ' और 'ल़' ध्वनि पर भी बातचीत हुई। यह तय हुआ कि सुविधानुसार दोनों का प्रयोग कर सकते हैं। 'है' के लिए भी अपनी सुविधानुसार 'च' या 'छ' का प्रयोग कर सकते हैं।

7- क्रिया रूपों पर गहन चर्चा के बाद तय हुआ कि क्रिया का मूल पद अकारान्त होगा और तीनों कालों में इनका रूप इस प्रकार होना चाहिए। जैसे- पढ़ना (बांचण), पढ़ दिया (बांच्यालि), पढ़ा (बांचि), पढ़ता है (बांचद), पढ़ रहा है (बांचणू छ), पढ़ेगा (बांचलु/बांचलो)।

8- अगर गढ़वाली का एक मानक रूप बन जाएगा तो उसमें पत्राचार करने में भी सुविधा होगी और इससे प्रिंट मीडिया भी उसी रूप को अपनाएगा।

9- मानक रूप बनने से सबसे ज्यादा फायदा पाठ्यक्रम बनाने में होगा और संविधान की आठवीं अनुसूची में गढ़वाली को शामिल करने की बात हम दमदार ढंग से रख सकते हैं।

3.5 गढ़वाली भाषा की मानक व्यावहारिक शब्दावली

कुछ शब्द जिनको मानक रूप में इस प्रकार लिखा जा सकता है। मूल प्रविष्टि हिंदी में है तथा उसके बाद व्याकरणिक कोटि और उसके बाद गढ़वाली शब्द दिया गया है:-

अंकुर (पु०)- अंगरो.
अंकुरना (क्रि०)- अंगर्यण.
अंगीठी (स्त्री०)- अगेठि.
अंगुली (स्त्री०)- अंगुळि.
अंगूठी (स्त्री०)- मुंदड़ि, गुंठि.
अंगोछा (पु०)- अंग्वीछा.
अंचल (पु०)- आंचळ, पल्ला.
अंजन (पु०)- काजळ, सुरमा.
अंजलि (स्त्री०)- अंज्वाळ.
अंदाज (पु०)- अंताज.
अंदेशा (पु०)- खटकु.
अंधकार (पु०)- अंध्यारो.
अंबार (पु०)- थुपड़ो, रास.
अकड़ (स्त्री०)- टिपोड़.
अकाल (पु०)- अकाळ.
अकेला (वि०)- यकुलो.
अक्ल (स्त्री०)- अकल.
अक्षर (पु०)- आखर.
अखरोट (पु०)- अखोड़.
अग्नि (स्त्री०)- आग.
अग्निकांड (पु०)- अग्यों.
अचल (वि०)- अजम.
अचानक (क्रि०वि०)-अचणचक.
अजान (वि०)- अजाण.
अतिथि (पु०)- पौणो.
अदरक (पु०)- आदो.
अधिक (वि०)- बिण्डि.
अनधुला (वि०)- अधोया.
अनपढ़ (वि०)- अणपढ़.
अनाज (पु०)- नाज.
अन्न (पु०)- नाज.
अन्यत्र (क्रि०वि०)- अण्थ.
अन्याय (पु०)- अन्यो.
अपथ्य (वि०)- कुपथ.
अपनत्व (पु०)-अपणैस (स्त्री०).
अपना (सर्व०)- अपणो.
अपनाना (क्रि०)- अपण्यौण.
अपनी (सर्व०)- अपणि.
अपरिचय (पु०)- अपछ्याण.
अपुत्र (वि०)- निपूतो.
अभिलाषा (स्त्री०)-सुरता, मनसा.
अभिशाप (पु०)- सरापि, सराप.
अभी (क्रि०वि०)- अबि, अबारि.
अरी (विस्म०)- अली.
अरुचि (स्त्री०)- विकूळ.
अविभाज्य (वि०)- अनबण्ट.
अशौच (पु०)- सूतक.
असंख्य (वि०)- अणगिणत.
असंतुष्ट (वि०)- अधीतो, अरंच.
असमंजस (पु०)- घंघतोळ.
अस्त्र (पु०)- हत्यार.
आँख (स्त्री०)- आँखि.
आँच (स्त्री०)- हाळ.
आँत (स्त्री०)- आंदड़ि.
आँधी (स्त्री०)- अंधालोटि.
आकाश (पु०)-द्यो, सर्ग, अगास.
आगे (क्रि०वि०)-अगनै, अगाड़ि.
आच्छादित (वि०)- अछप.
आजकल (क्रि०वि०)- अजक्याल
आटा (पु०)- पिस्यान, आट्ु.
आड़ू (पु०)- आरु.
आधा कच्चा (वि०)- अदकचो.
आनंद (पु०)- रौंस.
आनंदित (वि०)- बगछट.
आपदा (स्त्री०)- आफत.
आपूर्ण (वि०)-छुलबुल, उलछुल.
आरम्भ (पु०)- सुर्वात.
आलसी (वि०)- आलकसि.
आलेपन (पु०)- लीपण.
आशीष (पु०)- आसीस.
आसपास (क्रि०वि०)- ओड़ु-नेड़ु.
आसमान (पु०)- अगास, सरग.
आस्तीन (स्त्री०)- बौंळो (पु०).
आस्वाद (पु०)-रस्याण (स्त्री०).
इंसान (पु०)- मनखि.
इतना (क्रि०वि०)- इतगा.
इतिहास (पु०)- इत्यास.
इधर (क्रि०वि०)- इनैं.
इस (सर्व०)- यीं/ये.
इस ओर (क्रि०वि०)- इनैं.
इसका (सर्व०)- यींको/येको.
इसकी (सर्व०)- यींकि/येकि.
इससे (सर्व०)- ये से/यीं से.
उंगली (पु०)- अंगुळि.
उकताहट (स्त्री०)- कै बै.
उछल-कूद(स्त्री०)- ओतरा-ओतरि.
उछाल (स्त्री०)- उफाळ, उफाट.
उजाला (पु०)- उजाळो.
उतना (क्रि०वि०)- उतगा.
उतना ही (क्रि०वि०)- उतगै.
उतराई (स्त्री०)- उतरै.
उतावली (स्त्री०)- तौळिबौळि.
उत्तर (पु०)- जबाब.
उत्तरायण (पु०)-उतरैण (स्त्री०).
उत्साह (पु०)- हौंस, रौंफो.
उद्गम (पु०)- सोत, मुंड्याळ.
उधर (क्रि०वि०)- उनैं/उनां.
उनके (सर्व०)- वूंका, तौंका.
उपजाऊ (वि०)- नजिलि.

उपद्रव (पु०)- उपदर.
उपार्जन (पु०)- कमौण.
उबटन (पु०)- उगाळ (स्त्री०).
उबला हुआ (वि०)- उज्यायूं.
उल्लास (पु०)- हुबलास.
उल्लू (पु०)- घूगु.
उस (सर्व०)- वीं/वे.
उसका (सर्व०)- वेको/वींको.
उसके लिए (सर्व०)- वेकु/वे तैं.
ऊपर (क्रि०वि०)- ऐंच, उब्ब.
एक (पु०)- एक.
एकाग्र (वि०)- एकागर.
एड़ी (स्त्री०)- फिफनि.
ऐतिहासिक (वि०)- ऐत्यासिक.
ओखली (स्त्री०)-उरख्याळो (पु०).
ओला (पु०)- ढांडु.
ओस (स्त्री०)- वोंस.
औकात (स्त्री०)- औखात.
और (अ०)- अर, हौर (वि०).
औरत (स्त्री०)- जनानि, बैरबाण.
कंगन (पु०)- कंगण.
कंघा (पु०)- कांगलो.
कंजूस (वि०)- कंजड़.
कंटक (पु०)- कांडो.
कंठ (पु०)- गौळ, कंठ.
कंधा (पु०)- कांध, ब्यूंद.
कंपन (पु०)- कंपण, थथराट.
कंबल (पु०)- कामळो.
कच (पु०)- बाळ, लटुला.
कटवाना (क्रि०)- कटौण.
कठिन (वि०)- कठिण.
कठोर (वि०)- कटकटो.
कतरा (पु०)- कत्तर.
कतार (स्त्री०)- पंगत.
कपाल (पु०)- कपाळ.
कब (क्रि०वि०)- कबारि.
कम (वि०)- जरा, मणि.
कमाऊ (वि०)- कमौदार.
करछुल (पु०)- करछुलु, डाडुळो.
करवट (स्त्री०)- हौड़.
कर्कट (पु०)- गेगाडु.
कल बीता हुआ (क्रि०वि०)- ब्याळि.
कल आने वाला (क्रिवि)- भोळ.
कलह (पु०)- कलेस.
कली (स्त्री०)- कुटमणि.
कलेजा (पु०)- कळेजो.
कष्ट (पु०)- खैरि (स्त्री०)
कसम (स्त्री०)- सौं.
कहाँ (क्रि०वि०)- कख.
काँख (स्त्री०)- कखराळि.
काग (पु०)- कव्वा, कागा.
कान (पु०)- कंदूड़.
कार्तिक (पु०)- कातिग.
काला (वि०)- काळो.
काली (वि०)- काळि.
काष्ठ (पु०)- काठ.
किधर (क्रि०वि०)- कनैं.
किनारा (पु०)- छाला.
किलकारी (स्त्री०)- किलक्वारि.
किवाड़ (पु०)- द्वार.
किसलय (पु०)- कोंपळ.
कीचड़ (पु०)- किचड़ो, कचील.
कुत्ता (पु०)- कुकूर.
कुदाल (स्त्री०)- कुटळि, कूटी.
कुद्रव (पु०)- कोदो.
कूटना (क्रि०)- कूटण.
केंचुआ (पु०)- कितलो.
केंचुल (स्त्री०)- कांचळ.
कोख (स्त्री०)- कूखि, कोखि.
कोठरी (स्त्री०)- गौड़खि.
कोयला (पु०)- क्वीलो.
कोहनी (स्त्री०)- क्वीनो (पु०).
कौन (सर्व०)- को.
कौशल (पु०)- सल्ल, हुनर.
क्या (सर्व०)- क्य.
क्यारी (स्त्री०)- बाड़ि, सग्वाड़ि.
खंडहर (पु०)- खंद्वार, खंड्वार.
खजूर (पु०)- खजिरु.
खटमल (पु०)- सरसु.
खर्राटा (पु०)- फुंकराफुंकरि.
खल्वाट (वि०)- लोळकु.
खाज (स्त्री०)- खज्याळि.
खाना (पु०)- खाणौ.
खाल (स्त्री०)- खलड़ो (पु०).
खाली (वि०)- रीतु.
खिड़की (स्त्री०)- मोरि.
खीर (स्त्री०)- तस्मै.
खीरा (पु०)- काखड़ि (स्त्री०).
खुदाई (स्त्री०)- खुदै.
खुरदरा (वि०)- खरखरो.
खूँटा (पु०)- कीलु.
खून (पु०)- ल्वे.
खेत (पु०)- पुंगड़ा, डोखरा.
खोल (पु०)- खोळ.
ख्याति (स्त्री०)- हाम.
गंध (स्त्री०)- बास.
गठरी (स्त्री०)- फंचि.
गप (स्त्री०)- फसाकि.
गरदन (स्त्री०)- मोण, धौण.
गर्म (वि०)- तातो, गरम.
गला (पु०)- गौळ, कंठ.
गहना (पु०)- गैणा.
गाँठ (स्त्री०)- गेड़.
गाँव (पु०)- गौं.
गाय (स्त्री०)- गौड़ि.
गाभिन (वि०)- गैबणि.
गाल (पु०)- गलोड़ा, गलोठा.
गाली (स्त्री०)- गाळी.
गीला (वि०)- तींदो.
गुच्छा (पु०)- छुम्मा, छुब्का.
गुदगुदी (स्त्री०)- कुतग्याळि.
गुफा (स्त्री०)- उड्यार, वड्यार.
गूँगा (वि०)- लाटो.
गूँज (स्त्री०)- गजौ (पु०).
गेंद (स्त्री०)- गेंदुवा (पु०).
गेहूँ (पु०)- ग्यूँ.
गोद (स्त्री०)- खुचलि, खोकली.
गोधूलि (पु०)- रुमुक.
गोबर (पु०)- मोळ.
गोरा (वि०)- ग्वारो.
गोल (वि०)- गोळ.
गोश्त (पु०)- सिकार.
गौरैया (स्त्री०)- घिंडुड़ि.

ग्रहण (पु०)- गरण.
ग्रास (पु०)- कौळु.
ग्लेशियर (पु०)- हिंवारो.
ग्वाला (पु०)- ग्वेर.
घंटा (पु०)- घांड.
घंटी (स्त्री०)- घंडोळि.
घना (वि०)- घणो.
घपला (पु०)- घपरोळ.
घर (पु०)- घौर.
घसियारिन (स्त्री०)- घसारि.
घाघरा (पु०)- घाघरु.
घायल (वि०)- घैल, अदघैल.
घिन (स्त्री०)- घीण.
घी (पु०)- घ्यू.
घुटना (पु०)- घुंडो.
घुन (पु०)- घूण.
घुला-मिला (वि०)-घुल्यूं-मिल्यूं.
घूँघट (पु०)- घुंघटो.
घूमना (क्रि०)- घूमण.
घोंघा (पु०)- गनेळ.
घोंसला (पु०)- घोल.
चंद्र (पु०)- जोनि (स्त्री०).
चँवर (पु०)- चौंर.
चटकनी (स्त्री०)- चटगणि.
चटकारा (पु०)- टपकारा.
चटपटा (वि०)- चटपटो.
चटवाना (क्रि०)- चटवौण.
चढ़ाई (स्त्री०)- उकाळ.
चढ़ावा (पु०)- चढ़ौट.
चना (पु०)- चणा.
चपरासी (पु०)- चपड़ासि.
चबाना (क्रि०)- चबौण.
चमड़ा (पु०)- खलड़ो.
चरणामृत (पु०)- चरणामिर्त.
चर्बी (स्त्री०)- चर्बि, बंवाळि.
चाँद (पु०)- जोन.
चाचा (पु०)- काका.
चाची (स्त्री०)- काकी.
चावल (पु०)- चौंळ.
चिकना (वि०)- चिफळो, चलचलो.
चिड़िया (स्त्री)-चखुलि, पोथलि.
चिनगारी (स्त्री०)- फिनगारि.
चिबुक (पु०)- च्योंठि (स्त्री०).
चिल्लाना (क्रि०)- किल्कण.
चिल्लाहट (स्त्री०)- किबलाट.
चींटी (स्त्री०)- किरमलि.
चीख (स्त्री०)- किल्कताळ.
चीड़ (पु०)- कुळैं.
चुंबन (पु०)- भुक्कि (स्त्री०).
चुग्गा (पु०)- गाळो.
चूल्हा (पु०)- चुल्लो.
चूहा (पु०)- मूसो.
चेहरा (पु०)- मुखड़ि.
चोंच (पु०)- ठोंड.
चोटी (स्त्री०)- चुफलि, धौंपेलि.
चौंरगाय (स्त्री०)- चौंरगै.
छत्र (पु०)- छत्तर.
छपाई (स्त्री०)- छपै.
छरहरा (वि०)- लड़छड़ो.
छलांग (स्त्री०)- फाळ.
छाँह (स्त्री०)- छैल (पु०).
छाल (स्त्री०)- बगोट (पु०).
छिद्र (पु०)- दूंळि (स्त्री०).
छिपकली (स्त्री०)- छिपाड़ो.
छींटा (पु०)- छिटगा.
छूत (स्त्री०)- छौं.
जंगल (पु०)- बौण, जंगळ.
जंगली सुअर (पु०)- बणसुंगर.
जड़ (स्त्री०)- जलड़ो (पु०).
जनक (वि०)- जणदारो.
जननी (वि०)- जणदारी.
जब (अ०)- जबारि.
जरूरत (पु०)- जर्वत.
जला हुआ (वि०)- फुक्यूं.
जल्दी (क्रि०वि०)- सनक्वाळि, चणै, झट, जल्दि.
जवान (वि०)- ज्वान.
जहाँ (अ०)- जख.
जाँघ (स्त्री०)- जंगड़ो (पु०).
जानकार (वि०)- जाणकार.
जाल (पु०)- जाळ.
जिगर (पु०)- बुकड़ि.
जिन्होंने (सर्व०)- जौंन.
जिह्वा (स्त्री०)- जीब.
जीभ (स्त्री०)- जीब.
जीवित (वि०)- ज्यूंदो.
जुगनू (पु०)- जुगेणो, झळकीड़ो.
जुगाड़ (पु०)- ब्यूंत.
जुड़वाँ (वि०)- जौंळ्या.
जेठानी (स्त्री०)- जेठाण.
जेब (स्त्री०)- खीसो (पु०).
जैसा (वि०)-जनौ.
जो (सर्व०)- जु/जो.
जोड़ा (पु०)- जोंटा.
झगड़ालू (वि०)- झगड़ैल.
झरना (पु०)- छौड़ो, छिछड़ो.
झाड़ू (पु०)- ब्वानु.
झींगुर (पु०)- निन्यारु.
झुनझुना (पु०)- खुणखुणि.
झुरमुट (पु०)- झिपल्याण.
झुर्री (स्त्री०)- चिमोड़ा (पु०).
झूठ (पु०)- झूट.
झूला (पु०)- हिंडोळा.
टहनी (स्त्री०)- फौंगी, फौंटी.
टांग (पु०)- टंगड़ि (स्त्री०).
टिड्डी (स्त्री०)- सळो (पु०).
टीका (पु०)- पिठैं (स्त्री०).
टूटा हुआ (वि०)- टुट्यूं.
टोकरी (स्त्री०)- टोखरी.
टोपी (स्त्री०)- टोपली.
टोला (पु०)- खोळा.
ठंडा (वि०)- चस्सो, ठंडो, ऐड़ो.
ठगना (क्रि०)- ठगौण.
ठाँय (स्त्री०)- ठ्याँ.
ठिकाना (पु०)- ठिकाणो.
ठूँठ (पु०)- मूण्डो.
ठूँसना (क्रि०)- कोचण.
ठेठ (वि०)- निचट्ट, निराट.
ठोड़ी (स्त्री०)- च्योंठि.
डंठल (स्त्री०)- डांकळ.
डँसना (क्रि०)- तड़कौण.
डर (स्त्री०)- डौर.
डरपोक (वि०)- डरखु, डरख्वा.

डराना (वि०)- डरौण.
डाँट (स्त्री०)- खिजौण, हितराड़.
डाकिन (स्त्री०)- डागीण, डैण.
डाट (स्त्री०)- बुज्याड़ो (पु०).
डाली (स्त्री०)- फौंगी, सौंटी.
डाह (स्त्री०)- हीस, रीस, खेद्द.
डिगाना (क्रि०)- डिगौण.
डींग (स्त्री०)- फसाकि.
डुबकी (स्त्री०)- गोता.
डूबना (क्रि०)- डूबण.
डेला (पु०)- डेबळु.
डैना (पु०)- डैणा.
डोरी (स्त्री०)- डोरड़ि.
ड्योढ़ी (स्त्री०)- डेळी.
ढंग (पु०)- ढब.
ढीला (वि०)- झिल्लो.
ढूह (पु०)- ढिमको.
ढेर (पु०)- थुपड़ो, चट्टा, रास.
तंग (वि०)- गट्टो.
तकिया (पु०)- सिराणो.
ततैया (स्त्री०)- चिमाड़ो.
तबीयत (स्त्री०)- तब्यत.
तमाशबीन (पु०)- कौथिगेर.
तरंग (स्त्री०)- ल्हेर.
तरकारी (स्त्री०)- भुज्जि.
तरबतर (वि०)- तिरपिण्ड.
तरस (पु०)- टिटखि.
तरावट (स्त्री०)- तरौट.
तरुणाई (स्त्री०)- ज्वानि.
तवा (पु०)- तवाळो.
तारा (पु०)- गैंणो.
ताल (पु०)- तलौ.
ताला (पु०)- ताळो.
ताली (स्त्री०)- ताळी.
तालु (पु०)- नकताळो.
तिरछा (वि०)- कराळो.
तीक्ष्ण (वि०)- पैण्डो.
तीसरा (वि०)- तिसरो.
तुझे (सर्व०)- त्वेतैं, त्वेखुणि.
तुतला (वि०)- तालो.
तुम (सर्व०)- तुम.
तुमने (सर्व०)- तिन, तुमुन.
तुम्हारा (सर्व०)- तुमारो.
तुम्हारे (सर्व०)- तुमारा.
तुम्हारे पास (सर्व०)- तुम मू.
तुम्हारे लिए (सर्व०)- त्वे तैं.
तुरई (स्त्री०)- गोदड़ी.
तू (सर्व०)- तु.
तेरा (सर्व०)- तेरु/त्यारु.
तेरी (सर्व०)- तेरि/त्यारि.
तैराक (पु०)- बावत्या.
तो (अ०)- त.
तोड़ना (क्रि०)- तोड़ण.
तोलना (क्रि०)- तोलण.
त्यक्त (वि०)- त्याग्यूँ, छोड्यूँ.
त्योहार (पु०)- त्यवार.
त्वचा (स्त्री०)- खल्ला, खलड़ि.
थाली (स्त्री०)- थाळी, थकुलि.
थुलथुल (वि०)- ग्यळदड़.
थूकना (क्रि०)- थूकण.
थैला (पु०)- झोळा.
थोड़ा (वि०)- कम, जरा, मणि.
दंड (पु०)- डंड.
दंत (पु०)- दाँत, दाँतुड़ी.
दँतार (वि०)- दांतुरु.
दक्ष (वि०)- सल्लि.
दक्षिणा (स्त्री०)- दछणा.
दग्ध (वि०)- फुक्यूँ.
दरांती (स्त्री०)- दाथुलि.
दरिद्र (वि०)- दरेद्दर.
दर्द (पु०)- पीड़ (स्त्री०).
दही (स्त्री०)- दै.
दाढ़ी (स्त्री०)- दाड़ि.
दानेदार (वि०)- गरगरो.
दामाद (पु०)- जवैं.
दाल (स्त्री०)- दाळ.
दावाग्नि (स्त्री०)- बणाग.
दाहिना (वि०)- दैणो.
दिखना (क्रि०)- दिखैण.
दिन (पु०)- दिन.
दिल (पु०)- जिकुड़ि.
दिहाड़ी (स्त्री०)- ध्याड़ि.
दीप (पु०)- द्यू, दिवा, दिवाड्ु.
दीपावली (स्त्री०)- बग्वाळ, दिवाळ.
दीवार (स्त्री०)- दिवाल, पाळ.
दुगना (वि०)- दुगणो.
दुधारू (वि०)- दुधाळ.
दुनिया (स्त्री०)- दुन्या.
दुलार (पु०)- लाड.
दुलारा (वि०)- लाड्या.
दुविधा (स्त्री०)- घंघतोळ.
दुहरा (वि०)- द्वारु.
दूब (स्त्री०)- दुबड़ो.
दूसरा (वि०)- हैंको.
दूसरी (वि०)- हैंकि.
देखना (क्रि०)- देखण.
देग (पु०)- डिबलो.
देर (स्त्री०)- अबेर.
देवर (पु०)- द्यूर.
देवालय (पु०)- द्यूळ.
देशी (वि०)- देसी.
देहली (स्त्री०)- डेळि.
दो (वि०)- द्वी.
दोना (पु०)- पुड़खो.
दोपहर (स्त्री०)- द्वफरा.
दोपाया (वि०)- दुपाया.
दोबारा (क्रि०वि०)- दुबारा.
दोशाखा (वि०)- दुफांग्याळो.
दोस्त (पु०)- दगड्या, गैल्या.
दोहराना (क्रि०)- दुरौण.
दौड़ना (क्रि०)- अटगण, भागण.
दौड़-भाग (स्त्री०)-अटगा-अटगि.
धँसना (क्रि०)- धंसण.
धकेलना (क्रि०)- धक्यौण.
धनिया (पु०)- धण्या.
धमकाना (क्रि०)- धमकौण.
धरती (स्त्री०)- धर्ति.
धवल (वि०)- धौळ्या.
धुआँ (पु०)- धुवां.
धीरे-धीरे (क्रि०वि०)- मठु-मठु.
धान (पु०)- साट्टि.
धूप (स्त्री०)- घाम (पु०).
धूमिल (वि०)- धुवाण्यां.

धूल (स्त्री०)- धूळो (पु०).
नकेल (स्त्री०)- नथेण्डो.
नख (पु०)- नंग.
नजदीक (क्रि०वि०)- नजीक.
नथ (स्त्री०)- नथुलि.
ननिहाल (पु०)- मामाकोट.
नमक (पु०)- लूण.
नमकीन (वि०)- लोण्यां.
नया (वि०)- नयो, नै, नवाड़.
नर्तक (पु०)- नच्वाड़.
नवमी (स्त्री०)- नौमी.
नवान्न (पु०)- नवाण.
नाखून (पु०)- नंग.
नाचना (क्रि०)- नाचण.
नाजुक (वि०)- क्वांसो/क्वांसि.
नाथना (क्रि०)- नाथण.
नापना (क्रि०)- नापण.
नाबालिग (वि०)- नाबालिक.
नाभि (स्त्री०)- नौलु.
नाम (पु०)- नौं.
नारायण (पु०)- नारैण.
नारियल (पु०)- नर्यूळ.
नाल (स्त्री०)- नाळ.
नालायक (वि०)- नालैक.
निकट (क्रि०वि०)- नजीक.
निकम्मा (वि०)- निकज्जो.
निगलना (क्रि०)- घूळण.
निचोड़ना (क्रि०)- निचोड्ण.
निजी (वि०)- अपणो.
नितांत (वि०)- निराट, निचट्ट.
निद्रा (स्त्री०)- निंद.
निधन (पु०)- मिरत्यु (स्त्री०).
निपटना (क्रि०)- निपटण.
निपटारा (पु०)- निपटारो.
निपुण (वि०)- सल्लि.
निपुत्र (वि०)- निपूतो.
निबद्ध (वि०)- बंध्यूँ.
निभाना (क्रि०)- निभौण.
निमंत्रण (पु०)- न्यूतो.
निरंतर (क्रि०वि०)- सदानि.
निराई (स्त्री०)- न्यळै.
निर्मूल (वि०)- निरजड़ो.
निवाला (पु०)- गफ्फा, कौळो.
निवास (पु०)- बास.
निशानी (स्त्री०)- समळौण.
निश्चिंत (वि०)- निस्तुक.
निषिद्ध (वि०)- निखिद्द.
निष्ठुर (वि०)- निठूर.
नींद (स्त्री०)- निंद.
नीचे (क्रि०वि०)- बेड़, निस.
नीयत (स्त्री०)- नेथ.
नुमाइश (स्त्री०)- नुमैस.
नेवला (पु०)- नोळि (स्त्री०).
नैवेद्य (पु०)- नैबेद.
नौनिहाल (पु०)- नौन्याळ.
न्याय (पु०)- न्यौ, निसाब.
पंक (पु०)- कचील, किचड़ो.
पंक्ति (स्त्री०)- पंगत.
पंख (पु०)- पंख्यूड़, पांखुर.
पंचायत (स्त्री०)- पंचैत.
पका (वि०)- पक्यूँ.
पढ़ना (क्रि०)- पढ्ण, बाँचण.
पतला (वि०)- पतळो, छाळो.
पतीला (पु०)- पतेलो.
पतुरिया (स्त्री०)- पातर.
पत्ता (पु०)- पतगो, पात.
पत्थर (पु०)- ढुंगो.
पत्नी (स्त्री०)- घरवाळि, जनानि.
पत्र (पु०)- चिट्ठी (स्त्री०).
पथरीला (वि०)- ढुंग्या.
पनपना (क्रि०)- पनपण, रजण.
पनहरा (पु०)- पणसारु.
पराया (वि०)- बिराणो.
परिणय (पु०)- ब्यो.
परिवार (पु०)- मौ (स्त्री०).
परिवेष्टित (वि०)- अछप.
परोसना (क्रि०)- परोसण.
परोसा (पु०)- परोसो.
पलक (स्त्री०)- चेप्पु (पु०).
पसीना (पु०)- पस्यो.
पहला (वि०)- पैलो.
पहले (क्रि०वि०)- पैलि.
पहाड़ (पु०)- पाड़.
पहाड़ी (स्त्री०)- पाड़ी.
पहुँचना (क्रि०)- पौंछण.
पहुँचाना (क्रि०)- पौंछौंण.
पांडव (पु०)- पंडौं.
पाँव (पु०)- खुट्टो.
पागल (वि०)- बौळ्या.
पाथना (क्रि०)- पाथण.
पाथेय (पु०)- सामळ.
पानी (पु०)- पाणि.
पालथी (स्त्री०)- थालमाल.
पाला (पु०)- पाळो.
पालागन (स्त्री०)- पैलागु (पु०).
पालित (वि०)- पाळ्यूँ.
पास (क्रि०वि०)- नजीक.
पाहुना (पु०)- पौणो.
पिघलाना (क्रि०)- गळौण.
पिचकाना (क्रि०)- पिचकौण.
पिछड़ा (वि०)- पिछड्यूँ.
पिता (पु०)- बाबा, बुबा.
पिछला (वि०)- पैथरो.
पिपासा (स्त्री०)- तीस.
पिपासु (वि०)- तिसाळो.
पिस्सू (पु०)- उपाणो.
पीछे (क्रि०वि०)-पिछनै, पिछाड़ि.
पीटना (क्रि०)- पीटण.
पीढ़ा (पु०)- चौकी, चौकली.
पीढ़ी (स्त्री०)- छ्वाळि.
पीला (वि०)- पिंगळो.
पीलिया (पु०)- कौंळबै.
पीसना (क्रि०)- पीसण.
पीहर (पु०)- मैत.
पुकार (स्त्री०)- धाद, धै.
पुत्र (पु०)- नौनु, नौन्याळ.
पुत्री (स्त्री०)- नौनि.
पुराना (वि०)- पुराणो.
पुरुष (पु०)- बैख.
पुल (पु०)- पूळ.
पुलिंदा (पु०)- बोदगु.
पूँछ (स्त्री०)- पुछड़ि.
पूजना (क्रि०)- पूजण.

पूरा (वि०)- पूरो, सैडो, सैरो.
पेट (पु०)- पोटगो.
पेड़ (पु०)- डाळो.
पैर (पु०)- खुट्टो.
पोटली (स्त्री०)- कुट्यारि.
प्यास (स्त्री०)- तीस.
प्यासा (वि०)- तिसाळो.
प्रकाश (पु०)- उज्याळो, उदंकार.
प्रतिमा (स्त्री०)- मूरत.
प्रतीक्षा (स्त्री०)- जग्वाळ.
प्रथम (वि०)- पैलो.
प्रभात (पु०)- सुबेर.
प्रमाण (पु०)- परचो.
प्रश्न (पु०)- सवाल.
प्रसार (पु०)- फैलार.
प्रसिद्धि (स्त्री०)- हाम.
प्रसूता (स्त्री०)- स्वीलि.
प्रेम (पु०)- पिरेम.
फंसना (क्रि०)- फंसण.
फंसाना (क्रि०)- फंसौंण.
फजीहत (स्त्री०)- फजितु (पु०)
फटकार (स्त्री०)- खिज्यौण.
फटकारना (क्रि०)- खिज्यण.
फटना (क्रि०)- फाटण.
फटा (वि०)- फाट्यूं/चिर्यूं.
फफोला (पु०)- छाळु.
फर्श (पु०)- मेळो.
फायदा (पु०)- फैदा.
फिक्र (स्त्री०)- फिकर.
फिसलना (क्रि०)- रड्न.
फीका (वि०)- घळताण्यां.
फुसलाना (क्रि०)- फसकौण.
फूँकना (क्रि०)- फूकण.
बंदर (पु०)- बांदर.
बकरा (पु०)- बाखरो.
बचपन (पु०)- बाळपन.
बछड़ा (पु०)- बछलो.
बटोही (पु०)- बट्वै.
बताना (क्रि०)- बतौण.
बदबू (स्त्री०)- सड्याण.
बदलना (क्रि०)- संटौंण.
बर्तन (पु०)- भाण्डो.
बर्फ (स्त्री०)- ह्यूँ (पु०).
बहन (स्त्री०)- बैण.
बहाना (पु०)- बानो.
बाँह (पु०)- बौंफर, सांपड़ो.
बातचीत (स्त्री०)- छ्वींबथ.
बाराती (पु०)- पौणा.
बारिश (स्त्री०)- बरखा.
बादल (पु०)- बादळ.
बिगड़ा (वि०)- बिगड्यूं.
बिल (स्त्री०)- दूंळि.
बिल्ली (स्त्री०)- बिराळि.
बीमार (वि०)- बिमार, रोगिलु.
बेटी (स्त्री०)- नौनि, ब्यटुलो.
बेमेल (वि०)- अणमेल.
बेल (स्त्री०)- लगुलि.
बैल (पु०)- बळ्द.
बोना (क्रि०)- बूतण.
बोलना (क्रि०)- बुलाण, बच्याण.
भग्नावशेष (पु०)- खंड्वार.
भलाई (स्त्री०)- भलै, भल्यार.
भविष्य वक्ता (पु०)- बाक्या.
भाई (बड़ा) (पु०)- भैजि.
भाई (छोटा) (पु०)- भुला.
भारी (वि०)- गर्यो.
भिगोना (क्रि०)- भिजौण.
भुलक्कड़ (वि०)- बिसर्वा.
भुलक्कड़ी (स्त्री०)- बिसरंत.
भूतल (पु०)- वबरा.
भूसा (पु०)- बूसो.
भेजना (क्रि०)- भेजण.
भोंकना (क्रि०)- भूकण.
भोजन (पु०)- खाणौ.
भौंरा (पु०)- अंगर्याळ.
मकान (पु०)- कूड़ो.
मक्का (पु०)- मुंगरि (स्त्री०).
मक्खन (पु०)- नौण.
मक्खी (स्त्री०)- माखो (पु०).
मछली (स्त्री०)- माछी.
मथना (क्रि०)- छोळण.
मथनी (स्त्री०)- रोड़ी.
मनुष्य (पु०)- मनखि.
मर्द (पु०)- बैख.
मधुमक्खी (स्त्री०)- म्वारि.
मटमैला (वि०)- मटण्या.
मलना (क्रि०)- घूसण.
मवाद (पु०)- पाक.
महँगा (वि०)- अकरो.
महात्म्य (पु०)- माथम.
माँ (स्त्री०)- ब्वे.
मांगलिक (वि०)- मंगळी.
मांस (पु०)- मासु.
मांसल (वि०)- गुदखलि.
मिटाना (क्रि०)- मिटौण.
मिट्टी (स्त्री०)- माटो (पु०).
मित्र (पु०)- दगड्या, गैल्या.
मुँह (पु०)- गिच्चो.
मुझे (सर्व०)- मि तैं.
मुर्गा (पु०)- मैर, कुखड़ो.
मुसकराना (क्रि०)- हैंसण.
मूँछ (स्त्री०)- जोंगा (पु०).
मेरा (सर्व०)- मेरा/मेरो.
मेरी (सर्व०)- मेरि.
मेहमान (पु०)- मैमान.
मैं (सर्व०)- मि.
मैला (वि०)- मैलो.
यह (सर्व०)- यु/या.
यात्रा (स्त्री०)- जातरा, जात.
रचना (स्त्री०)- रंचणा.
रजाई (स्त्री०)- रजै.
राख (स्त्री०)- छारु/छारो (पु०).
रात (स्त्री०)- रात.
रेत (पु०)- बळु/बळो.
रोकना (क्रि०)- रोकण.
रोजाना (अ०)- सदानि.
रोटी (स्त्री०)- र्वट्टि.
रोना (क्रि०)- रोण.
लंगूर (पु०)- गूणि.
लकड़ियाँ (स्त्री०)- लाखड़ा.
लटें (पु०)- लटुला.
लम्बा (वि०)- लम्बो.
ललाट (पु०)- कपाळ.

लहू (पु०)- ल्वे.
लाल (वि०)- लाल.
लेखक (पु०)- लिख्वार.
लोमड़ी (स्त्री०)- स्याळ (पु०).
वक्त (पु०)- बग्त.
वन (पु०)- बौण.
वह (सर्व०)- वु, सु (पु०).
वह (सर्व०)- वा (स्त्री०).
वहाँ (क्रि०वि०)- वख.
वहाँ का (वि०)- वखौ.
वहीं (क्रि०वि०)- वखि.
वसंत (पु०)- मौळ्यार, बसंत.
विद्यार्थी (पु०)- इस्कुल्या.
विश्लेषण (पु०)- छाळछांट.
वे/वो (सर्व०)- सि/स्या.
व्यवहार (पु०)- ब्यवार.
शऊर (पु०)- सगोर.
शाम (स्त्री०)- ब्यखुनि.
शुभारंभ (पु०)- पंवाण.
श्रोता (पु०)- सुणदरा.
सजग (वि०)- चिताळो, चेतनि.
सड़क (स्त्री०)- सड़क.
समय (पु०)- समै, टैम.
समुद्र (पु०)- समोदर.
सहिष्णु (वि०)- सूरो.
सफेद (वि०)- सफेद, सुकेलु.
सांप (पु०)- गुरौ.
सांवली (वि०)-सौंळि, कळसौंगि.
साहस (पु०)- सांसु.
सास (स्त्री०)- सासु.
सींग (पु०)- सिंग.
सिर (पु०)- मुण्ड, बरमण्ड.
सुंदर (वि०)- स्वाणो, बिगरैलो.
सुंदर (वि०)- स्वाणि, बिगरैलि.
सुई (स्त्री०)- स्यूणि.
सुधरा (वि०)- सुधर्यूं.
सुबह (स्त्री०)- सुबेर.
सूजा हुआ (वि०)- उस्यायूं.
सूखा (वि०)- सूखो.
सूरत (स्त्री०)- अन्वार.
सौगात (स्त्री०)- समूण, सैंदाण.
स्कूल (स्त्री०)- इस्कूल.
स्वाद (पु०)- सवाद, रस्याण.
हड्डी (स्त्री०)- हाडगि.
हँसना (क्रि०)- हैंसण.
हथेली (स्त्री०)- हथगुळि.
हम (सर्व०)- हम.
हमारा (सर्व०)- हमारो.
हमारी (सर्व०)- हमारि.
हरा (वि०)- हैरो/हैरि.
हल (पु०)- हौळ.
हलवाहा (पु०)- हळ्या.
हाथ (पु०)- हात.
हिम्मत (स्त्री०)- हिकमत.
हेमंत (पु०)- ह्यूंद.
होंठ (पु०)- ओंठ.
होशियार (वि०)- होस्यार.

3.5.1 क्रिया शब्द

हिन्दी	गढ़वाळि	हिन्दी	गढ़वाळि
पीना	पीण	खाना	खाण
काटना	काटण	देखना	देखण, हेरण
सुनना	सुण्न	समझना	बींगण, समझण
जानना	जाण्न	सोना	सेण
मरना	मरण	मारना	म्वन्न
तैरना	बौति काटण, तैरण	उड़ना	उड़ण
चलना	हिटण	आना	आण
लेटना	लेटण, पोड्ण	बैठना	बैठण
खड़ा होना	खड्ु होण	देना	देण
कहना	ब्वन्न	सो रहा है	सेणू छ
सोयेगा	सेलु	सो गया	सेगि
पढ़ रहा है	पढ़णू छ, बांचणू छ	पढ़ा	पढ़ि
पढ़ेगा	पढ़लो	करना	कन्न

रो रहा है	रोणू छ	खा रहा है	खाणू छ
खाया	खायि	खायेगा	खालो
जाएगा	जालो	जा रहा है	जाणू छ
हँस रहा है	हैंसणू छ	उठ रहा है	उठणू छ

3.6 समानार्थी शब्द

गढ़वाल के विभिन्न क्षेत्रों में कई शब्द ऐसे हैं जिन्हें अलग-अलग नामों से जाना जाता है। उदाहरणार्थ 'सांप' को गुरौ, सर्पु, कीड़ो, गाग्गु, खौऊ आदि बोला जाता है। इस प्रकार जिन शब्दों के अर्थ में समानता होती है उन्हें समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहते हैं। परस्पर संबंध की दृष्टि से ये शब्द सामान्यतः किसी एक ही भाव का बोध कराते हैं। यद्यपि भाषा में प्रयुक्त होने वाले ये शब्द अपना स्वतंत्र अर्थ रखते हैं। कोई शब्द किसी का वास्तविक पर्याय नहीं होता फिर भी कुछ समानताओं के आधार पर इन्हें पर्यायवाची मान लिया जाता है। ऐसे ही कुछ समानार्थी शब्द नीचे दिए जा रहे हैं:-

हिंदी गढ़वाली समानार्थी

अंगूठी- मुंदड़ि, अंगोठि, गुंठि.
अंजलि- अंज्वाळ, चुम्खि, अंजूळ.
अभी- अबि, अबरि, अमणि.
अरुचि- बिच्छन, बिखळाण, बिकूळ.
आँधी- अंधालोटि, औडळु, बतरोळु.
आकाश- आगास, द्यो, सर्ग.
आजकल-अजब्याळि, अजक्यालु, अचकाल.
आला- खादरु, ब्यांरु, ताक.
इच्छा- मनसा, मर्जि, सुरता, अबलेखा.
ईर्ष्या- हीस, रीस, खेद्द.
ईर्ष्यालु- रिसाड़, हिरस्याळु, खेदि्द.
उपद्रव- उफन्दर, उपदर, उतपात, उछ्याद, उपड़ंग.
उमंग- मतंग, रौंफु, हौंस, रंगताट.
ओखल- उरख्याळो, वखळो, उखल्यार.
कंजूस- कमचूस, चुंगण, कंजड़, लिच्चड़.
कपड़ा- जुनखा, लत्ता, गात्ति, झुलड़ा, खंतड़ा.
क्रोध- नड़कु, कुरोध, भिरंगि.
कीचड़- हिल्लु, कचील, किचड्डु, कीच.
कुशल- सल्लि, होस्यार, गराड़.
खेत- पुंगड़ा, डोखरा, रिगड़.
गर्भवती- बैसनार, असकदि, गर्रि, दुबस्ता.
गाँठ- गेड़, फांस, ख्वरफांस.
गाल- गल्वाड़ा, जमाळो, गलाड़ो, गलफाड़ो.
गोरा- फुरपट्ट, फुर्या, गोरो.
गोशाला- गोठ, छानि, मरड़ो, गुठ्यार.
घमंड- टिपोड़, टटाटेर, मरोड़, अकड़.
चक्कर- भ्यूंरि, रिंग.
छलांग- फाळ, सौंफाळ, उफाट, उफाळ.
छिद्र- छेद, दूंळि, पौंर, औळ, वाड़, वऽळ.
ज्यादा- निम्कु, मसत, बिण्डि, छकण्यां, बिज्यां.
टहनी- सांगि, फांगि, फौंटि.
ठंड- जाड्डो, चस्सो, चचकार, टटगार.
डांट- हितराड़, अतराड़, लताड़, खिजौण.
तृप्ति- धीत, धौ, छपछपि.
तालाब- तलौ, रौ, खाळ, ताल.
थोड़ा- मणि, जरा, कम.
दुख- कष्ट, बिथा, पीड़, बेदना, खैरि.
दूल्हा- बरनारैण, बंदड़ा, बर, ब्यौंला.
नकेल- नाथो, सेंता, स्यन्तु, नक्वाळो.
नदी- गाड, गंगाळ, गंगाजी.
नया- नयु, नैलु, नवारु, नै.
नीचे- मूड़ि, निस, बेड़.

पंक्ति- पंगत, मंग्याळ, लंगत्यार.
पति- स्वामी, आदिम, घरवाळो, मालिक, भरतार.
पत्ते- लाबा, पथेला, पतगा, पात.
पत्नी- जनानि, घरवाळी, बैरबाण.
पनघट- मंगरि, छोया, पंदेरो, धारो.
पक्षी- पंछी, चखुलो, पोथलो.
परिश्रमी- धणकर, मेनति, किसाण.
प्रकाश- उजाळो, दिमकारु, उदंकार, उजावो.
पृथ्वी- धर्ति, जमीन, पिरथि.
पहेलियाँ- आणा, भ्वीणा, मैंणा, मौंणा.
पास- धोरा, नजीक, नेड़ो.
पिता- जणदारो, बाबा, बुबा, धरदारो.
पुत्र- नौन्याळ, लड़ीक, नौनु.
पुत्री- बेटि, नौनि, जयेड़ि, बेटुलि.
पेड़- बिरिछ, डाळो, डाव, बूट, गाछ.
पोटली- कुट्यारि, फंचि, बोदगी.
भाभी- बो, भावज, भौज, बौटी.
माँ- ब्वे, मैड़ि, जणदारि, धरदारि.
मित्र- दगड़्या, संघाति, गैल्या, सौंजड़्या.
मेला- मेळा, कौथिग, थौळ, मेड़ा.
राख- छारो, खारो, रख्या, छरमाळो.
राक्षस- रागस, दैंत, राकछस, खबेस.
रिश्ता- सुराळि, सोतु-गोतु, नातो.
विलंब- अबेर, बेलम, बिंवाळ, अंदाळ.
हठ- सिरड़, अमोड़, घ्वऽर, धत्त.
हिम्मत- हिकमत, हांगु, हियाड़, सांसु.
सांप- गुरौ, सर्पु, कीड़ो, गाग्गु, खौऊ.
सुंदर- बिगरैली, स्वाणिली, बांद, रुपसी.
सेवक- भुर्त्या, चाकर, छुनारु, टल्वा.
शाम- ब्यखुनि, रुमुक, संझ.
शिखर- चुलंखि, चुंट, टुक्ख.
शीशा- ऐना, दरपण, आरसि.

3.7 अभ्यास प्रश्न

1. आमतौर पर गढ़वाल के किस क्षेत्र की गढ़वाली को मानक मानने की बात होती है?
2. 'किलकारी' के लिए गढ़वाली में कौन-सा शब्द प्रयुक्त होता है?
3. गढ़वाली में 'च' तथा 'छ' हिंदी.....के लिए प्रयोग होता है।
4. 'हँस रहा है' को गढ़वाली में किस प्रकार लिखा जाएगा?
5. गढ़वाली में 'ल' तथा 'ळ' एक ही ध्वनियाँ हैं। सत्य/असत्य

3.8 सारांश

इस इकाई के अध्ययन करने से आप यह जान चुके होंगे कि गढ़वाली भाषा में व्यावहारिक शब्दों को कैसे लिखा जाएगा। साथ ही यह भी जानकारी मिली होगी कि संज्ञा शब्दों को उकारान्त या ओकारान्त दोनों प्रकार से प्रयोग किया जा सकता है। लेखन में 'ल़' या 'ळ' तथा तथा 'है' के लिए 'च' या 'छ' दोनों प्रयुक्त कर सकते हैं। गढ़वाली में क्रिया पदों तथा समानार्थी शब्दों की भी जानकारी आपको मिली होगी।

3.9 शब्दार्थ

औच्चारणिक- उच्चारण सम्बन्धी, विभेद- अंतर, मानक- स्टैण्डर्ड, व्यावहारिक- व्यवहार में आने योग्य, इकारान्त- जिसके अन्त में 'इ' हो।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर- 1. श्रीनगर, 2. किलक्वारि, 3. 'च' तथा 'छ', 4. हैंसणू छ, 5. असत्य

3.10 संदर्भ

1. गढ़वाली हिंदी शब्दकोश- अरविंद पुरोहित एवं बीना बेंजवाल
2. हिंदी गढ़वाली अंग्रेजी शब्दकोश- रमाकान्त बेंजवाल एवं बीना बेंजवाल
3. गढ़वाली भाषा की शब्द संपदा- रमाकान्त बेंजवाल
4. गढ़वाल हिमालय- रमाकान्त बेंजवाल
5. 'धाद' मासिक पत्रिका सितम्बर, 2019

3.11 निबन्धात्मक प्रश्न

1. हिंदी के 25 संज्ञा शब्दों का गढ़वाली में अर्थ लिखिए।
2. हिंदी के 20 क्रिया शब्दों का गढ़वाली में अर्थ लिखिए।

इकाई-4

गढ़वाली भाषा में संवाद प्रस्तुति (Dialogue delivery in Garhwali Language)

इकाई संरचना

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 छोटे-छोटे वाक्य

4.4 आज्ञा या आदेशात्मक वाक्य

4.5 शिष्टाचार के वाक्य

4.6 विस्मयादिबोधक वाक्य

4.7 सराहना संबंधी वाक्य

4.8 संकेतात्मक वाक्य

4.9 अभ्यास प्रश्न

4.10 सारांश

4.11 शब्दार्थ

4.12 संदर्भ ग्रंथ सूची

4.13 निबंधात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

गढ़वाली भाषा का इतिहास जानने के बाद आपको उसके व्याकरण और व्यावहारिक शब्दों की भी जानकारी हो गई है। अब आप इस भाषा ज्ञान को अपने दैनिक व्यवहार में ला सकते हैं। अपने मन के भावों तथा विचारों को प्रकट करने के लिए पद समूहों या वाक्यों का निर्माण कर सकते हैं। इस इकाई में दी गई विभिन्न संवाद प्रस्तुतियों के आधार पर किसी से भेंट होने पर अभिवादन से लेकर बातचीत भी गढ़वाली में की जा सकती है। गढ़वाली उच्चारण को रोमन में भी दिया गया है। रोमन में 'ड़', 'ण', 'त', 'द' और 'ळ' का उच्चारण स्पष्ट होना मुश्किल है। इसलिए 'ड़'-r̲, 'ण'-n̲, 'त'-t̲, 'द'-d̲ और 'ळ'-l̲ यानी इन्हें रेखांकित किया गया है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई से आपको यह जानकारी मिलेगी:-

- गढ़वाली भाषा में बातचीत करना सीखेंगे।
- आदेशपरक वाक्यों से परिचित होंगे।
- सार्वजनिक स्थानों पर गढ़वाली में लिखे गए निर्देशों को पढ़ तथा समझ पायेंगे।

4.3 छोटे-छोटे वाक्य

इन छोटे-छोटे वाक्यों के माध्यम से आप गढ़वाली में बातचीत करना शुरू कर सकते हैं। किसी का अभिवादन करना हो या सराहना। किसी के प्रति आभार प्रकट करना हो भरोसा दिलाना। छोटे-छोटे वाक्यों से आरंभ हुआ यह प्रयास गढ़वाली में बातचीत का प्रथम सोपान होगा।

1. आइए. — *आवा.*
   Please Come. — *Awa.*
2. अच्छी बात है. — *भलि छ्वीं छ.*
   It's fine. — *Bhali Chnwee chha.*
3. बस, रहने दो। — *बस, रैण द्या.*
   Please, leave it. — *Bas, rain dya.*
4. बहुत अच्छा. — *भौत बढ़िया.*
   Excellent. — *Bhaut badhiya.*
5. जैसी आपकी मर्जी. — *जनि तुमारि मनसा.*
   As you like. — *Jani tumari manasa.*
6. और कुछ? — *हौर कुछ?*
   Anything else? — *Hor kuchh?*
7. क्यों नहीं. — *किलै न.*
   Why not. — *Kiley na.*
8. ध्यान रखना. — *ध्यान रख्या.*
   Please take care. — *Dhyan rakhya.*
9. बहुत है. — *भौत छ.*
   It is sufficient. — *Bhaut cha.*
10. कोई बात नहीं. — *क्वी बात नी.*
    It doesn't matter. — *Kwi baat ne.*

11. मैं अभी आ रहा हूँ. *मि अबि छौं आणू.*
I am just coming. *Me abbi chhaun aanu.*

12. थोड़ा भी नहीं. *जरा बि ना.*
Not even a bit. *Jara be na.*

13. कल मिलेंगे. *भोळ मिलला.*
See you tomorrow. *Bhol milala.*

14. जरूर. *जरूर.*
Sure. *jarur.*

15. नहीं, कभी नहीं. *ना, कबि ना.*
Never. *Na, kabi na.*

16. इस सम्मान के लिए धन्यवाद. *ये सम्माना वास्ता धन्यबाद.*
Thanks for this honour. *Ye sammana wasta dhanyabad.*

17. कोई खास बात नहीं है. *क्वी खास बात नी छ.*
Nothing special. *Kwi khas baat ni cha.*

18. बहुत दिन से देखा नहीं. *भौत दिन बिटि देखि नी.*
You have not been seen for a long time. *Bhaut din biti dekhi ni*

19. और कुछ नहीं. *हौर कुछ नी.*
Nothing else. *Hor kuchh ni.*

20. भरोसा रखें. *भरोसो रख्या.*
Believe it/ Have trust. *Bharoso rakhya.*

4.4 आज्ञा या आदेश के वाक्य

आदेशपरक वाक्यों में किसी को कोई कार्य करने के लिए आदेश दिया जाता है। इन वाक्यों के माध्यम से आप सरलतापूर्वक गढ़वाली बोलने का अभ्यास करके अपने भाषा ज्ञान को बढ़ा सकते हैं।

1. रुको. *ठैरा/रुका.*
Stop. *Thtera/Ruka.*

2. चलो. *हिटा.*
Move on. *Hita.*

3. बोलो. *बोला.*
Speak. *Bola.*

4. सुनो. *सूणा.*
Please Listen. *Soona.*

5. इधर आओ.	*इनैं आवा.*
Come here.	*Enai awa.*
6. उधर जाओ.	*उथैं जावा.*
Move There.	*Uthain jawa.*
7. नीचे उतरो.	*निस उतरा.*
Get down.	*Nis utara.*
8. पास आओ.	*नजीक आवा.*
Come near.	*Najeek awa.*
9. इधर देखो.	*इनैं देखा.*
See here.	*Inai dekha.*
10. तैयार हो जाओ.	*तैयार ह्वे जावा.*
Please get ready.	*Teyaar hwe jawa.*
11. तुरन्त जाओ.	*जल्दि जावा.*
Go at once.	*Jaldi jawa.*
12. अंदर रखो.	*भितर धैरा.*
Put it inside.	*Bhitar dhera.*
13. बाहर जाओ.	*भैर जावा.*
Go outside.	*Bhair jawa.*
14. धीरे-धीरे चलो.	*माठु-माठु हिटा.*
Walk slowly.	*Mathu-mathu hita.*
15. यहाँ रुको.	*यख रुका/ठैरा.*
Stop here.	*Yakh ruka/thtaira.*
16. जल्दी चलो.	*सरासर हिटा.*
Move fast.	*Sarasar hita.*
17. यहाँ आओ.	*इख आवा.*
Come here.	*Yakh awa.*
18. सीधे जाओ.	*सीदो जावा.*
Go straight.	*Seedo jawa.*
19. सामने देखो.	*सामणि देखा.*
Look straight.	*Samani dekha.*
20. पीछे हटो.	*पिछनै हटा.*
Move back.	*Pichhene hata.*

4.5 शिष्टाचार के वाक्य

जब भी हम किसी से मिलते हैं तो अभिवादन के पश्चात शिष्टाचार के तहत कुशल-क्षेम पूछी जाती है और फिर बातचीत के द्वारा एक-दूसरे से परिचय आगे बढ़ता है। गढ़वाली भाषा में ऐसी ही बातचीत इन वाक्यों को सीखकर की जा सकती है।

1. घर में सब कुशल-मंगल हैं.	***डेरा मू सबि राजि-खुसि छन.***
Everything is fine at home.	*Dera mu sabi raji-khusi chhan.*
2. बहुत दिनों बाद दर्शन दिए.	***भौत दिनों बाद दरसन दीनिन.***
Seen after a long gap.	*Bhaut dino baad darsan dinin.*
3. आपकी कृपा है.	***आपै किरपा छ.***
Have your blessings.	*apai kirpa chha.*
4. बस, इतना काफी है.	***बस्स, इतगा काफि छ.***
Thanks, it's enough.	*Buss, etaga kafi chha.*
5. बुरा मत मानिएगा.	***बुरो नि माण्या.***
Please don't mind it.	Buro ni manya.
6. आपने क्यों कष्ट किया.	***आपन किलै करि कष्ट.***
Why did you bother.	*Apan kilai kari kast.*
7. मैं क्या सेवा कर सकता हूँ.	***मि क्य सेवा करि सकदूं.***
What can I do for you.	*Me kya sewa kari sakadun.*
8. आप चिन्ता मत कीजिए.	***आप फिकर ना करा.***
Please, do not worry.	*Aap fikar na kara.*
9. मैं कुछ मदद करूं.	***मि कुछ मदत करुं.***
May I help you.	*Me kuchh madat karun.*
10. पानी पीजिए.	***पाणि पील्या.***
Please take water.	*Pani pilya.*
11. क्षमा करें.	***माफ कर्यान.***
Excuse me.	*Maaf karyan.*
12. यहाँ बैठिए.	***इख बैठा.***
Please sit here.	*Ikh bethta.*
13. आपने सही सलाह दी.	***आपन सै राय दीनि.***
You gave a good advice.	*Apan sai raya dini.*

14. आप भी खाइए. *आप/तुम बि खैल्या.*

You also have it, please. *Aap bi khailya.*

15. मैं उठा लूंगा. *मि उठै द्यूलो.*

I shall pick up. *Me uthtai dyulo.*

16. खाना खाकर जाइएगा. *खाणौ खै तैं जया.*

Please proceed after taking food. *Khanau khai tain jaya.*

17. अच्छा, अब चलेंगे. *अच्छा, अब हिटला.*

O.K.now, we shall proceed. *Achha, ab hitala.*

18. फिर आइएगा. *अज्यूं अया/फेर अया.*

Please come again. *Ajyun aya/Pher aya.*

19. मुझे माफ करें. *मि तैं माफ कर्या.*

I'm sorry. *Me tain maaf karya.*

20. मुझे थोड़ी देर हो गई है. *मि जरा लेट ह्वेग्यूं.*

I got a little late. *Me jara late hwegyun.*

21. मेरी ओर से माफी माँग लीजिए. *मेरी तरपां बिटि माफी मांगि दिया.*

Please convey my apologies. *Meri tarapa biti mafi mangi diya.*

22. ऐसा गलती से हो गया. *इनु गळति से ह्वेगि.*

It was all by mistake. *Inu galati se hwegi.*

23. मुझे बड़ा दुःख है. *मि तैं बड़ो दुख छ.*

I'm very sorry. *Me tain baro dukh chha.*

24. क्या आप मुझे बैठने देंगे? *क्या आप मि तैं बैठण देला?*

May I have a seat? *Kya aap me tain bethan dela?*

4.5.1 किसी बुजुर्ग से मुलाकात

1. दादाजी प्रणाम. *दादाजी प्रणाम/स्यमन्या.*

Good morning, Grandfather. *Dada ji pranam.*

2. स्वास्थ्य ठीक है? *तब्यत ठिक छ?*

Are you keeping well. *Tabyat thik chha.*

3. खाना खा लिया? *खाणौ खैलि?*

Have you taken food. *Khano kheili?*

4. ये है चश्मा. *यो च चश्मा.*

Specs is here. *Yo cha chashma.*

5. कब बनवाया ? *कबारि बणवै?*

When did you get it? *Kabari banawai?*

6. आपकी लाठी. *तुमारि लाठि.*

Here is your stick. *Tumari lathti.*

7. साफा ये है. *साफा यो छ.*

Scarf is here. *Safa yo cha.*

8. किसे बुलाना है? *कै तैं बुलौण?*

Who is to be called? *Kaitain bulaun?*

9. आपका पोता आ गया. *तुमारो नाति ऐगि.*

Your grandson has come. *Tumaro nati egi.*

10. क्या नाम है इसका? *क्य नौं च येकु?*

What is his name. *Kya no cha yeku.*

11. कौन-सी क्लास में पढ़ता है? *कै क्लास मा पढ्द?*

In which class does he read. *Kai class ma parad.*

12. सुनाई देता है? *सुणैंदु छैंच?*

Can you listen. *Sunendu chhench.*

13. आपके बेटे की चिट्ठी. *तुमारा नौनै चिट्ठी.*

It's your son's letter. *Tumara nonai chithti.*

14. कुशल-मंगल हैं. *राजि-खुसि छन.*

They are all right. *Raji-khusi chhan.*

15. सामान भी भेजा है. *सामान बि छ भेज्यूं.*

Some stuff is also sent. *Samaan bi chha bhejyun.*

16. अगले महीने आएँगे. *अगला मैना औला.*

They will come next month. *Agala maina aula.*

17. मकान की मरम्मत करवा रहे हैं? *कूड़ो छन सल्यौणा?*

Geting their house repaired? *Kuro chhan salyona?*

18. अच्छा, चलता हूँ. **अच्छा, चलदूं.**

Now I proceed. *Achha chaldun.*

4.5.2 ग्रामीण महिला से बातचीत

1. दीदी नमस्कार.	*दीदी स्यमन्या.*
Hi, Didi.	*Didi syamanya.*
2. इस गाँव का नाम क्या है?	*ये गौं को नौं क्य छ?*
What is the name of this village?	*Ea Gnau ko nau kya chha?*
3. बहुत सुंदर गाँव है.	*भौत सुंदर गौं छ.*
It's beautiful village	*Bhaut sundar gaon chha.*
4. फलदार पेड़ बहुत हैं.	*फलदार डाळा बिज्यां छन.*
Large number of fruit trees.	*Faldar dala bijyan chhan.*
5. ये पंचायत घर है.	*यु पंचैतघर छ.*
This is community hall.	*Yu panchetghar chha.*
6. स्कूल सामने है.	*इस्कूल सामणि छ.*
The school is ahead.	*eschool samani chha.*
7. गाँव में एक मंदिर भी है.	*गौं मा एक द्यूळ बि छ.*
A temple also in th village	*Gaun ma ek dyul bi chha.*
8. फसल कट गई है.	*फसल कटिगि.*
Crops have been harvested.	*Fasal katigi.*
9. गाँव के चारों ओर जंगल है.	*गौं का चौतिर्पु बौण छ.*
Village is surrounded by jungle.	*Gnau ka chautirpu baun chha.*
10. पानी का स्रोत दूर है क्या?	*मंगरो दूर छ क्या?*
Is the water source far away?	*Manaro dur chha kya?*
11. गाँव में कुआँ भी है.	*गौं मा कुवाँ बि छ.*
A well is also in the Village.	*Gaun ma kunwa bi chha.*
12. खेत छोटे हैं.	*पुंगड़ा छोटा छन.*
Fields are small in size.	*Pungara chhota chhan.*
13. जमीन उपजाऊ है.	*जमीन नजिलि छ.*
Land is fertile.	*Jameen najili chha.*
15. बच्चे खेल रहे हैं.	*नौना खेलणा छन.*
Children are playing.	*Nauna khelana chhan.*
16. गाएँ गोशाला में आ गई हैं.	*गोरु साळि/गोठ मु ऐगेनि.*
Cows have returned to shed.	*Goru sali mu eageni.*

17. ठंडी हवा चल रही है. *ठंडु बथौं छ चलणू.*

Cold wind is blowing. *Thandu bathno chha chalanu.*

18. सूर्यास्त हो गया. *घाम अछळैगे.*

Sun has set. *Gham achhalege.*

19. चूल्हों में आग जल गई. *चुल्लौं उंद आग जगिगे.*

Hearthes have been put on. *Chullo und aag jagige.*

20. अब चलना चाहिए. *अब चलण चैंद.*

Now I proceed. *Ab chalan chend.*

4.5.2 दुकानदार से बातचीत

1. चीनी होगी? चिन्नि होलि?

Do you have sugar? *Chinni holi?*

2. दो किलो चाहिए. *द्वी किलो चैंदि.*

Please give me 2 kg. *Dwi kilo chendi.*

3. एक चाय पुड़िया भी. *एक चा पुड़्या बि.*

A pack of tea-leaves also. *ek cha purya bi.*

4. दो किलो अरहर. *द्वी किलो हरड़.*

Please give 2 kg. arhar also. *Dwi kilo harar.*

5. और नमक का पैकेट. *अर लूणो पैकेट.*

And a pack of salt. *Ar loono pecket.*

6. पहाड़ी दाल होगी? *पाड़ि दाळ होलि?*

Do you have local pulses? *Pahari daal holi?*

7. चार किलो दे दीजिए. *चार किलो दी द्या.*

Please weigh 4 kg. *Char kilo di dya.*

8. गहथ हैं? *गौथ छन?*

Do you have Gahath? *Gauth chhan?*

9. चलिए, कोई बात नहीं. *चला, क्वी बात नी.*

No problem. *Chala, kwi baat ni.*

10. दूसरी दुकान से ले लेंगे. *हैकि दुकानि बिटि ल्ही ल्यूला.*

I shall get it from other shop. *Hekki dukani biti lhi lyula.*

11. सब सामान रख दिया न? *सब सामान धल्लि न?*

Is everything packed? *Sub saman dhalli na?*

12. थैला है मेरे पास. *झोळा छ मि मा.*

I have my bag. *Jhola chha me ma.*

13. कितना हुआ हिसाब? *कतगा ह्वे हिसाब?*

How much do I have to pay? *Kataga hwe hisab?*

14. बड़ा नोट है. *बड्डु नोट छ.*

It's a big note. *Baru note cha.*

15. छुट्टे होंगे आपके पास? *टूटा होला आप मू?*

Have you got change? *Tuta hola aap moo?*

16. ये ले लीजिए. *यि ल्ही ल्या.*

Please take it. *Yi lhi lya.*

17. पर्ची दे दीजिए. *पर्चि दी द्या.*

Please return the list. *Parchi di dya.*

18. सामान काफी हो गया. *सामान काफि ह्वेगि.*

Stuff is too heavy. *Samaan kafi hwegi.*

19. अच्छा, धन्यवाद. *अच्छा, धन्यबाद.*

O K Thanks. *Achha dhanyabad.*

20. नमस्कार, आपका फिर स्वागत है. *नमस्कार. आपो फेर स्वागत छ.*

You are welcome, bye. *Namaskar. Aapo fer swagat chha.*

4.5.3 बस में किसी मुसाफिर से बातचीत

1. आप श्रीनगर जा रहे हैं? *तुम सिरनगर छन जाणा?*

Are you going to Srinagar? *Tum Sirnagar chhan jana?*

2. आपका गाँव कहाँ है? *तुमारु गौं कख छ?*

Where is your village? *Tumaru gaun kakh chha?*

3. गाँव में कौन-कौन रहता है? *गौं मा को-को रंदन?*

Who lives in the village? *Gaun ma ku-ku randan?*

4. ये बस देवप्रयाग कितने बजे तक पहुँचेगी? *या बस देवप्रयाग कथगा बजि तक पौंछलि?*

When does this bus reach Devpryag? *Ya bus Devpryag kathaga baji tak paunchhali?*

5. आप कहाँ सर्विस करते हैं? *आप सर्विस कख करदन?*

Where do you work? *Aap survice kakh karadan?*

6. मसूरी तो बहुत सुंदर जगह है. *मसुरी त भौत सुन्दर जगा छ.*

Mussorie is a beautiful place. *Mussorie ta bhaut sunder jaga chha.*

7. यहाँ से औली कितनी दूर है? *इख बिटि औली कतगा दूर छ?*
How far is Auli from here? *Ikh biti Auli kataga dur cha?*

8. मैं आज श्रीनगर जा रहा हूँ. *मि आज सिरनगर छौं जाणू.*
Today I am going to Srinagar. *Me aaj Sirnagar chhno janu*

9. कल पौड़ी जाऊँगा. *भोळ पौड़ी जौलो.*
Tomorrow, I will go to Pauri. *Bhol Pauri jolo.*

10. पौड़ी में दो दिन रुकूँगा. *पौड़ी द्वी दिन ठैरलो.*
I will stay at Pauri for two days. *Pauri dwi din thtairalo.*

11. वहाँ सरकारी काम है. *वख सरकारि काम छ.*
I have some official work there. *Wakh sarkari kam chha.*

12. पौड़ी से कोटद्वार जाऊँगा. *पौड़ी बिटि कोटद्वार जौलो.*
I will proceed to Kotadwar from Pauri. *Pauri biti Kotadwar jolo.*

4.6 विस्मयादिबोधक वाक्य

विस्मय, हर्ष, शोक आदि भावों को गढ़वाली भाषा में किस तरह से प्रकट किया जाता है, इन वाक्यों के माध्यम से सीखा जा सकता है।

1. अच्छा! ये बात है. *आ! य बात च.*
Oh! it's the matter. *Aa! ya baat cha.*

2. अरी! धान कूटने चल. *अली! साट्टि कूटण चल.*
Let's come to thrash the paddy. *Ali! saatti kutan chal.*

3. अरे! इतना कम पानी. *हैं! इतगा कम पाणि.*
Oh! so less water. *Hain! etaga kam pani.*

4. अरे! क्या कहा तूने? *ऐं! क्य बोलि तिन?*
What did you say! *Eain! kya boli tin.*

5. अरे! धूप में मत जाओ. *अला! घाम मा ना जा.*
Don't move in sun! *Aala! ghaam ma na ja.*

6. देखा! अब लगी न ठोकर. *दज्जा! अब लगि न ठोकर.*
See! have got stumbled. *Dajja! ab lagi na thokar.*

7. खबरदार! ऐसा मत करना. *खबरदार! इन ना करि.*
Be careful! Don't do it. *Khabardar! en na kari.*

8. धन्य-धन्य! यह गढ़भूमि. *धन-धन! या गढ़भूमि.*

Salute to land of Garhwal. *Dhan-dhan! ya Garhbhumi.*

9. सच! तुम घर आ रहे हो. *सच्चि! तुम डेरा छन औणा.*

Really! are you coming home. *Sachi! Tum dera chhan auna.*

10. छिः-छिः! कितना कीचड़ है. *छि! छि! कथगा कचील छ.*

Ouch! it's too much muddy. *Chhi-chhi kathaga kacheel cha.*

11. अफसोस! गाँव उजड़ रहे हैं. *बक्किबात! गौं उजड़ूणा छन.*

Alas! villages are deserted. *Bakkibaat! Gaun ujarana chhan.*

12. अहा! कितनी ठंडी हवा है. *अहा! कन ठंडु बथौं छ.*

Cool wind is blowing. *Aha! Kan thtandu bathaun chha*

13. हाय राम! वो बहुत बीमार है. *यरां! सु भौत बिमार छ.*

Oh God! he is sick. *Yarna! su bhaut bimar cha.*

14. उफ! कितनी उमस है. *छि भै! कतगा उमस छ.*

It's too humid! *Chhi bhai! Kataga umas chha.*

15. अजी! वो तो अमीर लोग हैं. *द् माराज! सि त सोकार छन.*

Oh! they are rich. *Tha maraj! si ta sokar chhan.*

4.7 सराहना संबंधी वाक्य

किसी का व्यवहार अच्छा है या कोई अच्छा कार्य करता है तो गढ़वाली भाषा में उस व्यक्ति की प्रशंसा इस प्रकार की जा सकती है।

1. वक्त पर आ गए. *बग्त पर ऐगेनि.*

You are on time. *Bagt par eageni.*

2. अच्छा किया. *भलु करि.*

Well done. *Bhalu kari.*

3. बच्चे चढ़ाई पर थकते नहीं हैं. *नौन्याळ उकाळि पर थकदा नी.*

Children don't tire while climbing. *Nonyal ukali par thhakada ni.*

4. वे बहुत काम करते हैं. *सि भौत धाण करदन.*

They work too hard. *Si bhaut dhaan kardan.*

5. डरपोक बिलकुल नहीं हैं. *डरख्वा कतै नि छन.*

He is not a coward. *Darkhwa katai ni chhan.*

6. पेड़ पर चढ़ जाते हैं. *डाळा पर चढ़ि जांदन.*

Can climb on the tree. *Dala par chari jandan.*

7. पनघट से पानी लाते हैं. *मंगरा बिटि पाणि लांदन.*

They do bring water from the well. *Mangara biti paani landan.*

8. हमेशा खुश रहते हैं. *सदानि मगन रंदन.*

They are always happy. *Sadani magan randan.*

9. सबको हँसाते हैं. *सब्यूं तैं हैंसांदन.*

They make laugh everone. *Sabyu tain hainsandan.*

10. मिल-बांटकर खाते हैं. *बांटि-च्यूंटि खांदन.*

They do share with everyone. *Banti-chyunti khandan.*

11. किसी के साथ लड़ते नहीं हैं. *कै दगड़ि नि लड़दन.*

They don't quarrel. *Kai dagari ni laradan.*

12. खूब पढ़ते हैं. *खूब पढ़दन.*

The study hard. *Khoob paradan.*

13. बड़ों का आदर करते हैं. *बड़ों को आदर करदन.*

They Respect elders. *Barno ko aadar karadan.*

14. चीजें सम्हालकर रखते हैं. *चीजबस्त समाळी धरदन.*

They keep things properly. *Cheejbast samali dhardan.*

15. समय की कद्र करते हैं. *समै कि कदर करदन.*

They respect the time. *Samai ki kadar kardan.*

16. अपना काम खुद करते हैं. *अपणु काम अप्वी करदन.*

They do their work themselves. *Apanu kaam afwi kardan.*

17. माँ-बाप का कहना मानते हैं. *ब्वे-बाबौ बोल्यूं माणदन.*

They obey to their parents. *Bwe-babo bolyun mandan.*

18. सफाई का ध्यान रखते हैं. *सफै कु ध्यान रखदन.*

They are careful about cleanliness *Safai ku dhyan rakhadan.*

4.8 संकेतात्मक वाक्य

यहाँ वे वाक्य दिए गए हैं जो किसी सार्वजनिक स्थल या सड़कों के साइन बोर्ड पर लिखे होते हैं। गढ़वाली भाषा सीखने वालों के लिए इस तरह के वाक्यों का ज्ञान भी जरूरी है।

1. आपका स्वागत है. *आपकु स्वागत छ.*

You are welcome. *Apaku swagat cha.*

2. आहिस्ता चलें. *मेसि पर चल्यान.*

Walk slowly. *Mesi par chalyan.*

3. जल्दबाजी न करें. *रटाबटि नि कर्यान.*

Don't haste. *Ratabati ni karyan.*

4. आगे तीव्र मोड़ है. *अगनै तेज घूम छ.*

Sharp turn ahead. *Aganai tej ghoom cha.*

5. पुल निर्माणाधीन है. *पूळ बण्नू छ.*

Bridge under construction. *Pool bannu cha.*

6. कष्ट के लिए खेद है. *कष्टा वास्ता खेद छ.*

Sorry for trouble. *Kasta wasta khed cha.*

7. पत्थर गिरने का भय है. *ढुंगा पड़णै डौर छ.*

Boulders may fall. *Dhunga parane daur cha.*

8. आगे रास्ता बंद है. *अगनै बाटो बंद छ.*

Road closed ahead. *Aganai bato band cha.*

9. बायीं ओर चलें. *बौं तरफां चल्यान.*

Keep left. *Bauntarfna chalyan.*

10. अन्दर जाने का रास्ता. *भितर जाणौ बाटो.*

Path to inside. *Bhittar janau bato.*

11. आगे स्कूल है. *अगनै इस्कूल छ.*

School ahead. *Aganai eskool chha.*

12. ताजा भोजन करें. *सौदु खाणौ खावन.*

Eat fresh food. *Saudu khanau khawan.*

13. साफ पानी पिएँ. *साफ पाणि पीवन.*

Use potable water. *Saaf pani peewan.*

14. खुली चीजें न खाएँ. *खुलि चीज नि खावन.*

Don't eat exposed items. *Khuli cheej ni khawan.*

15. खुले रखे कटे फल न खाएँ. खुला मा धर्यां *कट्यां फल नि खावन.*

Don't eat exposed cut fruits. *Khula ma dharyan katyna fal ni khawan.*

16. रास्ता खुला है. *बाटो खुल्यों छ.*

Road is clear. *Bato khulyno cha.*

17. पंक्तिबद्ध खड़े हों. *पंगत मा खड़ा होवन.*

Be in Queue. *Pangat ma khara howan.*

4.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. 'आइए' के लिए गढ़वाली में क्या लिखेंगे?
2. 'चलो' के लिए गढ़वाली में क्या कहेंगे?
3. 'इधर देखो' को गढ़वाली में क्या लिखेंगे?
4. 'सूर्यास्त हो गया' के लिए गढ़वाली में.....कहा जाएगा।
5. 'कुशल-मंगल' के लिए गढ़वाली में 'राजि-खुसि' कहा जाता है। सत्य/असत्य

4.10 सारांश

इस इकाई के अध्ययन करने से आप यह जान चुके होंगे कि किस प्रकार छोटे-छोटे वाक्यों के द्वारा गढ़वाली भाषा सीखने की शुरूआत की जा सकती है और फिर आज्ञा या आदेशात्मक, शिष्टाचार विषयक, विस्मयादिबोधक, सराहना संबंधी तथा संकेतात्मक वाक्य आदि आसानी से लिखे, पढ़े एवं बोले जा सकते हैं।

4.10 शब्दार्थ

संवाद- बातचीत, आदेशात्मक- जिसमें कुछ करने का आदेश दिया गया हो, शिष्टाचार- अच्छा आचरण, विस्मयादिबोधक- आश्चर्य आदि भावों का ज्ञान कराने वाले, सराहना- प्रशंसा, संकेतात्मक- संकेत देने वाले, हर्ष- खुशी, शोक- दुख, साइन बोर्ड- नाम पट।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर- 1. आवा, 2. हिटा, 3. इनै देखा, 4. घाम अछळैगे 5. सत्य

4.12 संदर्भ

1. गढ़वाली हिंदी शब्दकोश- अरविंद पुरोहित एवं बीना बेंजवाल
2. हिंदी गढ़वाली अंग्रेजी शब्दकोश- रमाकान्त बेंजवाल एवं बीना बेंजवाल
3. गढ़वाली भाषा की शब्द संपदा- रमाकान्त बेंजवाल

4.13 निबन्धात्मक प्रश्न

1. गढ़वाली में 10 विस्मयादिबोधक वाक्य लिखिए।
2. गढ़वाली में 15 संकेतात्मक वाक्य लिखिए।

इकाई-5

गढ़वाली की वर्गीकृत शब्दावली (Classified vocabulary of Garhwali Language)

5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3 मकान सम्बन्धी शब्दावली
5.4 बर्तन सम्बन्धी शब्दावली
5.5 कृषि सम्बन्धी शब्दावली
5.6 जल सम्बन्धी शब्दावली
5.7 लकड़ी सम्बन्धी शब्दावली
5.8 पत्थर सम्बन्धी शब्दावली
5.9 बचपन के खेल-खिलौने
5.10 लोक व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली
5.11 दिन, राशि, नक्षत्र, तिथि, महीने
5.12 अभ्यास प्रश्न
5.13 सारांश
5.14 संदर्भ ग्रंथ सूची
5.15 निबंधात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

बच्चे की प्रथम पाठशाला उसकी माँ होती है। जिस भाषा को वह माँ के मुँह से सुनता है उसी को सबसे पहले तुतलाते हुए बोलना शुरू करता है। इसीलिए माँ की भाषा को 'दुदबोली' कहा जाता है। कुटुम्बीजन भी उसके इस भाषा ज्ञान को बढ़ाने में सहायक होते हैं। परिवार के इस दायरे से निकलकर बच्चा जब विद्यालय जाता है तो पढ़ाई का माध्यम हिंदी या अंग्रेजी होने पर भी उसकी अपनी 'दुदबोली' का असर उसके उच्चारण एवं लहजे पर जरूर पड़ता है। एक तरह से कहें तो कोई बच्चा अपनी मातृभाषा में जितनी आसानी से समझ सकता है उतनी अन्य भाषा में नहीं। इसीलिए नई शिक्षा नीति में प्रारम्भिक शिक्षा मातृभाषा की सहायता से दिए जाने की बात कही गई है।

किसी भी क्षेत्र की संस्कृति तथा परंपराओं की जानकारी में उस क्षेत्र का भाषा ज्ञान महत्त्वपूर्ण होता है। अपनी लोकभाषा में भावों और विचारों की अभिव्यक्ति जितनी प्रभावपूर्ण एवं सशक्त ढंग से हो सकती है उतनी दूसरी भाषा में नहीं। गढ़वाली भाषाभाषी समाज की बात करें तो वह अपने संसाधनों के लिए अधिकांशतः प्रकृति पर निर्भर है। मूल रूप से कृषि एवं पशुपालन पर निर्भर यहाँ का समाज पत्थर एवं

मिट्टी से निर्मित मकान, जल, लकड़ी, पत्थर आदि के अधिक निकट है। यहाँ लोक में ऐसे ज्ञान की किसी विधा विशेष में प्रयोग किए जाने वाले शब्दों की अर्थ सहित जानकारी वर्गीकृत शब्दावली में दी जा रही है।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः-

- वर्गीकृत शब्दावली का अर्थ जानेंगे।
- गढ़वाली भावों में वर्गीकृत शब्दावली से परिचित होंगे।
- बचपन के खेल-खिलौनों से सम्बन्धित शब्दों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

5.3 मकान से सम्बन्धित शब्दावली

उत्तराखण्ड के पर्वतीय भू-भाग में स्थित गाँवों में पुराने मकान पारंपरिक लोकशैली के बने होते हैं। इन मकानों में प्रथम तल पर जाने के लिए बनी 'खोळी' पर सुंदर काष्ठकला विशेष आकर्षण का केन्द्र होती है। प्रथम तल का बाहरी खुला भाग जिसे 'तिबारी' कहा जाता है, पर भी लकड़ी की अद्भुत कारीगरी देखी जा सकती है। उसका मिट्टी का बना फर्श 'डिंड्याळी' कहलाता है। प्राकृतिक संसाधन मिट्टी, पत्थर, लकड़ी के ये मकान भू-पारिस्थितिकी के अनुरूप बनाए जाते थे। ढलवाँ छत वाले इन मकानों के आगे आँगन वाला भाग 'चौक' या 'खौळा' कहलाता है। जिस पर पठालियाँ लगी होती हैं। मकानों का समूह 'खोळा' या 'बाखळि' कहलाता है। मकान के भीतरी कमरे को 'भितल्याखण्ड' तथा बाहरी कमरे को 'भैल्याखण्ड' कहते हैं। रसोई वाले कमरे में चूल्हे के बगल वाला खाली स्थान 'चुलखान्दो' कहलाता है, जहाँ लकड़ियाँ आदि रखी जाती हैं। बाहर दजवाजे के बगल में दोनों ओर ताला-चाबी आदि रखने के लिए ताक या खादरे बने होते हैं। दीवारों पर सामान आदि टाँगने के लिए लकड़ी की खूँटियाँ लगी होती हैं। ऐसे मकानों के विभिन्न भागों को गढ़वाली में किन नामों से जाना जाता है, इसकी जानकारी इस शब्दावली से मिलेगी।

आळा/खादरो- आला.

काकर- छत का निचला भाग.

कूड़ो- मकान.

कोठड़ि- छोटा कमरा.

कौरो- मकान के अगल- बगल वाली गली.

क्वणेठि- कमरे का कोना.

खडवबरि- मकान के भूतल के नीचे बना कमरा.

खोळी- नक्काशीदार मुख्य द्वार जो 'बौंड' जाने के लिए होता है.

खौळो/चौक- आँगन.

गेड़ो/क्वलणो- मकान का पिछला भाग.

जंगला- जंगला.

छांत- मकान की छत का दीवार से बाहर निकला हुआ भाग.

छाजा- छज्जा.

डंड्याळि- तिबारी के फर्श या प्रथम तल की बाहरी लॉबी.

ढेपरो- छत के निचले हिस्से में लकड़ी का बना सामान रखने का स्थान.

ताक- मकान की दीवार पर बनाया गया आला.

तिबारी- मकान के प्रथम तल पर बना नक्काशीदार खुला बरामदा.

दार- बल्लियाँ.
धुरपळो- मकान की छत का ऊपरी भाग.
निमदरि-मकान की बालकनी.
पठाळ- स्लेट.
पाळ- दीवार.
पांड- मकान की ऊपरी मंज़िल का बरामदा.
फैड़ि- सीढ़ी.
बांदण- ढलवाँ छत वाले मकानों में ढलवाँ छतों के मिलन स्थल स्थान पर की जाने वाली चिनाई, 'धुरपळे' की चिनाई.
बौंड- दुमंजिले कमरे, प्रथम तल.
मेळो- फर्श.
मोरि- छोटी खिड़की.
द्वार/किवाड़- दरवाज़ा.
रस्वै- रसोई.
वबरि- मकान का भूतल.
हाट्टि- मकान के भूतल का बाहरी बरामदा.
संगाड़- दरवाज़े की चौखट.
साळ- गोशाला.

5.4 बर्तन सम्बन्धी शब्दावली

घर की रसोई जहाँ भोजन की महक बर्तनों की खनक से ही शुरू होती है। भोजन पकाने से लेकर खाना परोसने तक के इन बर्तनों की एक पूरी दुनिया रसोईघर में बसती है। घर में रसोई का क्या स्थान है, ये सभी जानते हैं। ऐसी इस रसोई में प्रयुक्त होने वाले बर्तनों के गढ़वाली नाम इस इकाई में ज्ञात होंगे।

कर्छलो/पौंळि- करछी.
कटोरि- कटोरी.
कप- कप.
कितलि- केतली.
गागर- ताँबे की गगरी.
गिलास- गिलास.
गेडु- दाल बनाने का बड़ा बर्तन.
चमच- चम्मच.
चांळ्ळु- आटा छानने की छलनी.
चासणि- बड़ी कड़ाही.
चिमटा- चिमटा.
छान्नि- चाय छानने की छलनी.
झरना/झेंजर- झरनी.
टोखणी/लोट्या- लोटा.
डाडुळि/भाल- बड़ी करछी.
डिगचि/डिबलि/फुल्टी- देगची.
तमाळि/कसेरी- छोटी गगरी.
तवाळु/तवा- तवा.
ताच- कोंचा.
तौलो- 'बारी' से कुछ छोटा पतीला.
थकुलि- थाली.
परात- परात.
परोठो- दही जमाने का काष्ठ पात्र.
पर्या- दही मथने का पात्र.
प्रेसर कुकर- प्रेशर कुकर.
बंठा- पीतल का 15-20 लीटर का पानी भरने का बर्तन.
कट्वरि- कटोरी.
बाट्टी- बिना कुंडी की कड़ाही.
बार/बारी- तांबे का 70- 80 लीटर का बड़ा पतीला.
भड्डु- दाल बनाने के लिए काँसे का 'फुल्टी' जैसा बर्तन.
भदाळी/कढ़ै- कड़ाही.
मट्याळ्नु- अनाज साफ करने की छलनी.
सन्यासो- संडसी.

5.5 कृषि उपकरण एवं अन्य

कृषि और पशुपालन गढ़वाल के प्रमुख व्यवसाय रहे हैं। गढ़वाल के लोक जीवन को समझने के लिए इन व्यवसायों से जुड़ी शब्दावली का ज्ञान जरूरी है। यहाँ कृषि उपकरण से संबंधित शब्द दिए जा रहे हैं।

कंडी- रिंगाल की बनी बड़ी डलिया जो गोबर या घास ले जाने के काम आती है.

कुटळि- कूटी, कुदाल.

कुलाड़ो- कुल्हाड़ा.

कनेसी- हथियार की धार बनाने की रेती.

गैंती- गैंती.

घण- घन.

छेनी- छैनी.

जुव्वा- हल चलाते समय बैलों के कंधे पर रखी जाने वाली लकड़ी.

थमाळि- पाठल, बड़ी दराँती.

दंदाळो- लोहे के दाँतों वाला हल जिसे मंडुवे के खेत में चलाया जाता है.

दाथुड़ि- दराँती.

नकचुंडी- काँटा निकालने की चिमटी.

पीन- सेफ्टी पिन.

फौड्डु/फाळु- फावड़ा.

बिळचा- बेलचा.

मंजुलु- कन्नी.

मयु- लकड़ी के छोटे दाँतों वाला हल जिसे रोपाई वाले खेतों में चलाया जाता है.

वडगु- रिंगाल का टोकरा जिसमें मिट्टी, गारा या गोबर उठाया जाता है.

हतोड़ा- हथौड़ा.

हौळ- हल.

साबळो- सब्बल.

स्यूंणी- सुई.

5.6 जल से सम्बन्धित शब्दावली

जलस्रोत पहाड़ों को प्रकृति की अनुपम देन है। धारे-पंदेरों तथा झर-झर झरते झरनों का संगीत यहाँ लोकलय में सुनाई देता है। गढ़वाल के इतिहास से पता चलता है कि यहाँ जलस्रोतों के आसपास ही गाँव बसे थे। जल से संबंधित ऐसी शब्दावली भी गढ़वाली भाषा की खास संपदा है।

कुंड/ढंडी- मिट्टी से बना पानी का तालाब. कुंवा/नौलो- कुआँ.

कूल- गूल.

खाळ- प्राकृतिक रूप से बना पशुओं के लिए पानी पीने का तालाब.

गंगाळ- नदी (गंगा तथा उसकी शाखाओं के लिए प्रयुक्त).

गदेरो/गदनो- पहाड़ी नाला.

गाड- नदी.

चोबडळा- जमीन से रिसते पानी से बने छोटे-छोटे गड्ढे.

चौंर- पशुओं के लिए पानी पीने हेतु बनाया गया कृत्रिम तालाब.

छुबडळा- छोटा गड्ढा जिसमें पानी एकत्रित हुआ हो.

छोया- बरसाती पानी का स्रोत.

छौड़ो/छिंचड़ो- झरना, पानी की तीव्र मोटी धार.

तलौ/ढबोटु- तालाब.

नवाळो- पानी का कुंड जिसमें नीचे से पानी आता है.

नैर- नहर.

पंद्यारो- पनघट.

पणधारि- पानी की धार जो मकान की छत से टपकती है.

पनाळ- गूल से घराट चलाने के लिए लकड़ी आदि का बना जल वाहक.

प्वौंण- हिमालय के उच्च स्थलों में होने वाली हल्की वर्षा.

बत्वाणि- वर्षा की बौछार.

बरखा- वर्षा.

बौलु- कच्ची गूल में पानी का बहाव.

मंगरा- पानी का प्राकृतिक स्रोत, पनघट.

रौ/औत- भंवर, नदी में वह स्थान जहाँ पानी गोल-गोल घूमे.

स्यमार- ऐसी जगह जहाँ धूप कम आती है और पानी रहता है.

हौज- सिंचाई के लिए बनाया गया पानी का बड़ा टैंक.

5.7 लकड़ी से सम्बन्धित शब्दावली

भवन निर्माण हो या कृषि उपकरण इनमें काष्ठ या लकड़ी का प्रयोग बहुतायत से होता है। गढ़वाल के लोग पशुओं के लिए घास चारा पत्ती के लिए भी वनों पर निर्भर रहते हैं। वनों की लकड़ी जहाँ खेती के औजार बनाने में काम आती है वहीं उससे कई अन्य गृहोपयोगी वस्तुएँ भी निर्मित होती हैं। गढ़वाली भाषा में लकड़ी से संबंधित ऐसी शब्दावली की जानकारी इस प्रकार है:-

अंगदिरो/अंदखिरो- चूल्हे के ऊपर का स्थान जिसमें लकड़ियाँ रखी जाती हैं ताकि सूखी रहें.

अछाणो- धारदार हथियार से किसी वस्तु को काटने के लिए रखी गई लकड़ी.

अटाळि- लकड़ी का छोटा- सा टुकड़ा जो भीमल के रेशों की रस्सी बटने के काम में प्रयुक्त होता है.

अड्या- गोशाला का दरवाजा बंद करने के काम आने वाली लकड़ी.

अणौ- हल का हत्था.

अदाळो- घिसा हुआ हल.

अवांण/ठांकरो- बेल को सहारा देने के काम आने वाली लकड़ी.

आंधो- दीपावली के अवसर पर चीड़ की लकड़ियों से बना बड़ा 'भैल्लो'.

आथर- दुमंजिले मकानों में ऊपरी मंजिल का तख्तों के ऊपर मिट्टी डालकर बना कच्चा फर्श.

कड़ी- शहतीर.

कापण- पर्या का ढक्कन.

किलड़ि- लकड़ी की बनी कील.

कीलो- खूँटी.

कुठार/पठ्वा- लकड़ी का बड़ा बक्सा जिसमें अनाज आदि रखते हैं.

कोसड़ि- नमक रखने का काष्ठ पात्र.

क्वीलू- जंदरी में प्रयुक्त छोटी लकड़ी की फट्टी जो जंदरी के ऊपरी पाट को स्थिर करती है.

खटुलो/सांग- शव को ले जाने हेतु प्रयोग की जाने वाली लकड़ी.

खोळी- प्रथम तल पर जाने के लिए बना मकान के प्रथम तल में जाने हेतु बना नक्काशीदार मुख्य दरवाजा.

गंज्याळो- मूसल.

गुळ्या/गुंळ- दरवाज़े को अंदर से बंद करने की लकड़ी.

गेंडखि- लकड़ी का छोटा तथा मोटा टुकड़ा.

गेला- पेड़ काटने के बाद बनाए गए तने के 10-12 फिट के टुकड़े.

घांगा- मयु पर लगे लकड़ी के दाँत.

घोगा- बच्चों की देवडोली.

चरेटो- बकरियों को नमक आदि देने के लिए बना काष्ठ पात्र.

चूं-चक्की/कौं-कौं- एक लकड़ी के ऊपर दूसरी लकड़ी रखकर बनी बच्चों के खेलने की चरखी.

चिलम- तंबाकू पीने की काष्ठ नली.

चेलण- घास वाली छत पर रखी जाने वाली लकड़ी के छोटे टुकड़े.

चौकुलो- काष्ठ निर्मित चौकी.

च्वीला- हल पर लगाने के काम आने वाले लकड़ी के छोटे टुकड़े.

छिल्ला- चीड़ की लकड़ी का अधिक लीसायुक्त लाल रंग का हिस्सा.

जांठी- छड़ी.

जुव्वा- हल चलाते समय बैलों को साथ रखने के लिए उनके कंधे पर रखी जाने वाली लकड़ी.

जोबरु- दूध या दही रखने का काष्ठ पात्र.

जोळ- पाटा.

झाटगो/झिंकड़ो- बेल को सहारा देने के काम आने वाली पेड़ की छोटी शाखा.

ठिंटा/क्यौड़ा- भीमल की भीगी टहनियाँ जो रेशे निकालने के बाद आग जलाने के काम आती हैं.

डंडी/पिनस- पालकी.
डोल्ला- डोली.
ड्वींटा- जानवरों को 'पींडा' खिलाने के लिए बना काष्ठ पात्र.
ढिकारो- मिट्टी के ढेले तोड़ने का उपकरण.
तड़वा- दही मथने की मथानी.
ताकुळि- तकली.
दबळी/ड्वीलु- 'गुळथ्या' या 'बाड़ी' को बनाते समय घुमाने में प्रयुक्त डंडी.
दार- गोल बल्लियाँ.
दुणेटु- तेल की पिराई करने का काष्ठ पात्र.
द्वार- दरवाजा.
नटै- सामान्यतः चपटी बल्ली जिस पर 'दार' टिके होते हैं.
नसुड़ो- हल.
निमाउ- जो हल पर लाट को फिक्स करता है.
नौघर्या- काष्ठ निर्मित नौ खानों वाला पिठाई, अक्षत आदि रखने हेतु पूजा का पात्र. पठ्वा- लकड़ी का बना लंबा-सा संदूक.
पनाळ- घराट तक पानी पहुँचाने के लिए बनाई गई खोखली लकड़ी.
पनाळा- घराट की 'भेरण' पर लगे लकड़ी के टुकड़े जिन पर 'पनाळ' से पानी गिरता है और घराट घूमने लगता है.
पराळझड़ि- छोटी, पतली एवं चिकनी डंडी जो धान की मंडाई के बाद पुआल पर बचे धान को झाड़ने के काम आती है.
परोठो- दही रखने हेतु बना लकड़ी का पात्र.
पर्या- दही मथने के लिए बना काष्ठ पात्र.
पसिणा- मिट्टी के कच्चे मकानों में कच्चा फर्श डालने में प्रयुक्त मोटे लट्ठे.
पाटी- तख्ती.
पुर्चा- पठाल वाले मकानों में बल्लियों के ऊपर घने बिछाए जाने वाले फट्टे जिन पर मिट्टी और पठाल रखते हैं.
फणेटा- पेड़ के तने को आरी से चीरने के बजाय कुल्हाड़ी

से काटकर निकाले गए तख्तेनुमा टुकड़े.
फुर्रा-काष्ठ निर्मित नमकदानी.
बंसतोळ्या- बांस का हुक्का, बांस की नली जिससे जानवरों को घी या दवाई पिलाई जाती है.
बळेण्डो- शहतीर, कड़ी.
बल्ली- गोल शहतीर.
बांसा- गोल बल्लियाँ.
बुडुळु- जिस पर जंदरी का क्वीलू फिट होता है.
भरवाण- बहुत मजबूत और मोटी चपटी बल्ली जिस पर 'नटै' और 'दार' टिके होते हैं.
भेरण- घराट के नीचे लगी लकड़ी जो पानी के वेग से घूमती है.
मयु- लकड़ी के दांतों वाला हल जो रोपाई के खेतों को समतल करता है.
मुंगरो- लकड़ी की हथौड़ीनुमा आकृति जो कपड़े धोने या किसी चीज को ठोकने के काम आती है.
मुछ्याळो- जलती हुई लकड़ी.
मूंडा- टूटे या कटे पेड़ के जमीन से लगे तने, बेडौल लकड़ियाँ.
मोरि- खिड़की.
रोड़ो- लकड़ी से बनी मथानी.
लांकुड़- ढोल-दमौ बजाने की डंडी.
लाखड़ा- लकड़ियाँ.
लाट- हल पर प्रयुक्त होने वाली लंबी लकड़ी जिसका एक सिरा बैलों के कंधों से बंधे जुए पर तथा दूसरा सिरा हल से जुड़ा होता है.
संगाड़- लकड़ी की चौखट.
सुळेटो- घास का बोझा ले जाने के काम आने वाली लकड़ी जिसका एक सिरा नुकीला होता है.
सोटगि- बेंत.

5.8 पत्थर सम्बन्धित शब्दावली

गढ़वाल के लोकजीवन में पत्थरों को कई तरह से उपयोग में लाया जाता था। मकान बनाने से लेकर रसोईघर में भी इनका विशेष महत्व था। ग्रामवासियों ने पत्थर का एक महत्वपूर्ण संसाधन की तरह

उपयोग कर इससे जंदरी, ओखल आदि बनाए तथा खेत-जंगलों में वोडो, बिसौण, पळेंथरो आदि के रूप में इसका प्रयोग किया है। भाषा में कर्म कौशल की प्रतीक ऐसी शब्दावली की प्रधानता स्वाभाविक है।

उरख्याळो/वखळो- ओखल.
ऐरण- पत्थर का बड़ा-सा टुकड़ा जिस पर लोहार काम करता है.
ओड्यार/वड्यार- गुफा.
ओडो/वोडो- खेतों के बीच में गाड़ा गया विभाजक पत्थर.
कोंडाळि- पत्थर का बना कटोरानुमा पात्र.
खड़िंजा- रास्ते को बनाने में खड़े लगाए गए पत्थर.
खरड़- मसाले या दवाई पीसने का पात्र.
गंगलोड़ा- नदी के बहाव से बने गोल पत्थर.
गबलु- पत्थर के मकानों के निर्माण में दीवार के बीच भरा जाने वाला गारा.
गारा- बारीक पत्थर.
घंतर- छोटा पत्थर.
घट- घराट.
घय्या- पत्थर का छोटा टुकड़ा जो 'गुत्थि' खेलते समय निशाना साधने के काम आता है.
घुत्तु- पत्थर को काटकर बनाई गई बड़ी ओखली.
चौंतरो/चौंथरो- छोटा-सा गोल या समतल पत्थर जो प्रायः चंदन घिसने के काम आता है.
चौंरि- चबूतरा, पत्थरों की चिनाई करके बनाया गया बैठने का स्थान.
छाजा- मकान का छज्जा.
छापला- पतले पत्थर जो बारीक चिनाई के काम आते हैं.
जंदरी- हाथ से घुमायी जाने वाली अनाज पीसने की चक्की.
जड़घंट- बहुत बड़ा पत्थर जो आसानी से हिलाया न जा सके.
जाड़- बड़ा पत्थर.
झळ्यारु- चूल्हे में आग की लौ को पीछे व्यर्थ जाने से रोकने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाले पत्थर का टुकड़ा.
ठपगणा- नदी पार करने हेतु रखे गए पत्थर.
डंग्याण- पथरीला स्थान.
डांग- बड़ा पत्थर.
ढंगार- सीधा खड़ा पथरीला पहाड़.
ढुंगो- पत्थर.
ढुंग्याण- पत्थरों वाला स्थान.
दांदा- खलिहान के चारों ओर लगे खड़े पत्थर.
पठाळ/छपाल- आंगन में बिछे बड़े टाइलनुमा पत्थर.
पणकट्टा- पत्थरों की छत पर दो पत्थरों के जोड़ पर रखा गया पतला लंबा पत्थर जो जोड़ पर से पानी को अंदर आने से रोकता है.
पथराड़ो- पथरीला ढाल.
पळेंथरो/पळ्यौण- जिस पत्थर पर दरांती की धार तेज की जाती है.
पातु- पंदेरे में कपड़े धोने का पत्थर.
पौड़- पत्थरों की पहाड़ी.
फल्सो- पत्थरों का बना गेट जिसके छेदों में लकड़ी फंसाई जाती है.
बट्टी- खेलने के लिए बनी छोटी-छोटी गिट्टियाँ.
बिसौण- विश्राम का पत्थर.
मुंडकिला- आंगन में गड़े भैंस बांधने हेतु काम आने वाले पत्थर.
ल्वेड़ी- सिल में मसाला आदि पीसने का पत्थर.
वाड़ि- मकान में रोशनी आने के लिए लगाया गया पत्थर.
संगाड़- पत्थर की चौखट.
सिलोटा- सिलबट्टा, सिल, मसाला आदि पीसने का पत्थर.
हुळतरा- चिनाई में जोड़ मारने के लिए प्रयुक्त बड़े पत्थर.

5.9 बचपन के खेल-खिलौने

गढ़वाल के लोक-जीवन में उमंग भरने वाला प्रकृति का संग बचपन में भी खुशियों के रंग भर देता है। यही कारण है कि यहाँ बच्चों के अधिकांश खेल प्रकृति की गोद में खेले जाते हैं और खिलौने भी प्रकृति प्रदत्त उपहार ही होते हैं। कभी दूब घास तथा फूलों के गहने बनते हैं तो कभी पेड़ों के पत्ते और छोटे पत्थर बर्तनों का काम करते हैं और फिर इन पर हिंसर, किलमोड़, काफल, करौंदे, घिंघारू आदि विभिन्न पकवानों की तरह परोसे जाते हैं। गढ़वाली में ऐसे ही कुछ खेल-खिलौनों से संबंधित शब्द इस प्रकार हैं:-

अंटि- बच्चों के खेलने की काँच की गोलियाँ.

अट्ठा/पिठ्ठू- बच्चों का एक खेल जिसमें छोटे-छोटे आठ पत्थरों का ढेर बनाते हैं.

कबड्डि- कबड्डी खेल.

कूड़िभंडि/चुलिभंडि- पत्थर-लकड़ी आदि से घर बनाने का खेल.

कौं-कौं- एक तख्ता जो बीच में खड़ी लकड़ी से टिका होता है तथा जिसके दोनों किनारों पर बच्चे बैठकर झूलते हैं.

खुणखुणि- हिलाने से बजने वाला बाजा.

खो-खो- खो-खो खेल.

गारा/बट्टी- बच्चों के द्वारा खेलने के लिए बनाए गए पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े.

गिल्ली-डंडा- गुल्ली-डंडे का खेल.

गुत्थि- जमीन में एक छोटा-सा गड्ढा करके कुछ दूरी से उसमें सिक्के डाले जाते हैं। गड्ढे में गिरे सिक्के खेलने वाले के होते हैं। बाहर गिरे सिक्कों पर भी एक गोल छोटे पत्थर से निशाना लगाया जाता है.

घुरणि- लकड़ी के टुकड़े के बीच में दो छेद करके धागा डालकर बनाया गया खिलौना.

चूं चक्की- एक के ऊपर दूसरी लकड़ी रखकर बनी बच्चों के खेलने की चरखी.

डाळा पर चढ़ून- पेड़ पर चढ़ने का खेल.

पंच पथरि- इस खेल में पांच चपटे पत्थर एक के ऊपर एक रखे जाते हैं फिर कपड़े की गेंद से इन पर निशाना लगया जाता है। दूसरी टीम को बिना आउट हुए फिर से पत्थर पहले जैसे लगाने होते हैं.

पिच्चड़- कागज के टुकड़ों का खेल.

फाळ मारण- कम ऊँचाई वाले खेतों से कूदना.

फिंफरी- हरे पत्तों को होंठों पर रख कर सीटी बजाना.

फोबती- एक खेल जिसमें पीठ पीछे हाथों को पकड़ कर गोलाई में घूमते हैं.

रड़ाघुस्सि- फिसलन वाला ढलवाँ पत्थर जिसके ऊपरी सिरे पर बैठकर बच्चे फिसलते हुए नीचे आते हैं.

रिंगापत्ति- इस खेल में बच्चे एक-दूसरे का हाथ पकड़कर गोलाई में तेजी से घूमते हैं.

लुकाछिपि- बच्चों का एक खेल जिसमें कुछ बच्चे छिपते हैं और एक उन्हें ढूँढ़ता है.

सागर/ऐच्चि-दुच्चि- इस खेल में बच्चे जमीन पर छह वर्गाकार खाने बनाते हैं और एक छोटे पत्थर को इन खानों में फेंकते हैं तथा एक पाँव से आगे बढ़ा जाता है.

5.10 लोक व्यवसाय

अर्थोपार्जन के लिए पहाड़ के लोग विभिन्न प्रकार के काम-धन्धों पर निर्भर थे। लोक के ऐसे व्यवसायों से संबंधित शब्दों की जानकारी यहाँ दी जा रही है।

अन्वाळ- बकरी चुगाने वाला.
अलखणियां- अलख-अलख पुकारने वाले.
औजी- वादक, दर्जी.
कंडेर- कंडी पर आदमी या बोझा ले जाने वाला.
कुमार- कुम्हार, मिट्टी के बर्तन बनाने वाला.
कोळि- तिलहन से तेल निकालने वाले.
खड्वाळ- भेड़पालक.
खेत्वाळो- खेत मजदूर.
गळदार- पशुओं का व्यापार करने वाला.
गारुड़ि- तांत्रिक.
ग्वेर/ग्वीर- गाय चराने वाले.
घड्यळ्या/जागरी/धामी- डौंर-थाली बजाकर भूत एवं देवता नचाने वाले.
घसारि- घसियारिन.
घोड़ीत- घोड़े वाला.
चिरानि- आरी से लकड़ी चीरने का काम करने वाले.
चुनार- काष्ठ शिल्पी.
टंडेल- प्रधान श्रमिक.
टमोटा- बर्तन बनाने वाले.
डंड्यौर- डांडी ले जाने वाले.
डळ्यो- गाकर माँगने वाले जोगी.
डोल्यौर- कहार, डोली ले जाने वाले.
धयाणी- सिर पर देवता रखकर भविष्य कथन करने वाले.
धुनार- नदियों पर रस्सियों के पुल बनाकर लोगों को नदी पार करवाने वाला.
धूणा- बालू धोकर सोना निकालने वाला.
धौंस्या- डमरू की तरह का एक वाद्य यंत्र 'धौंसी' बजाने वाला.
पंडा- तीर्थस्थल पर पूजा कराने के हकदार.
पंडित- ब्राह्मण.
पऽरि- पहरेदार.
पणतरु- पानी में तैराने वाला.
पणसारु- पानी ढोने वाला.
पतरोळ- जंगल का चौकीदार.
पधान- गाँव का मुखिया.
पस्वा- वह व्यक्ति जिस पर देवता अवतरित होता है.
पालसी- चरवाहा.
पासवान- फसल की देखभाल करने वाला.
पुज्यारि- पुजारी.
पुछ्यारु- भविष्यवक्ता, जिससे भविष्य या देव दोष के विषय में प्रश्न पूछे जाएँ.
पोथल्या- पक्षियों को पालने वाला.
बंदर्वाळो- खेतों से बन्दर भगाने वाला.
बंदुक्या- बंदूक चलाने वाला.
बक्या/नवर्या- देव आवेश में भविष्य कथन करने वाला, भविष्यवक्ता.
बखर्वाळो- भेड़-बकरी चुगाने वाला.
बामण/बिर्त्वान- ब्राह्मण, बिर्ति करने वाला ब्राह्मण.
बादि्द/मिरासि/बेड़ा- गाँव-गाँव जाकर नाचने-गाने वाले.
बैद- वैद्य.
बोझि- बोझा ढोने वाला.
मंगळेर- मांगल गाने वाली स्त्रियाँ.
मछोई- मछुआरा.
मजुरिदार- मजदूर, श्रमिक.
मड़ापति- मठाधिपति, किसी मठ का प्रधान.
मालिया- माला बनाने वाले.
रस्वाळ- रसोइया.
रुड़िया- रिंगाल का बुनकर.
रौळ- रावल, बड़े मंदिरों में प्रधान पुजारी.
ल्वार- लुहार.
हळ्या- हल चलाने वाला.
हुड़क्या- 'हुड़का' बजाने वाला.
सल्लि- शिल्पी, मिस्त्री, कारीगर.
साबरी- साबर विद्या में सिद्धहस्त.

5.11.1 दिन

हिंदी	गढ़वाली	हिंदी	गढ़वाली

रविवार	–	एत्वार	सोमवार	–	सोमबार
मंगलवार	–	मंगळबार	बुधवार	–	बुधबार
बृहस्पतिवार	–	भिप्यार	शुक्रवार	–	सुक्वार
शनिवार	–	छंचर			

5.11.2 राशि

हिंदी		गढ़वाली	हिंदी		गढ़वाली
मेष	–	मेख	तुला	–	तुला
वृष	–	बिर्ख	वृश्चिक	–	बृश्चिक
मिथुन	–	मिथुन	धनु	–	धनु
कर्क	–	कर्क	मकर	–	मकर
सिंह	–	सिंह	कुम्भ	–	कुंभ
कन्या	–	कन्या	मीन	–	मीन

5.11.3 नक्षत्र

हिंदी		गढ़वाली	चित्रा	–	चित्रा
अश्विनी	–	अस्वनि	स्वाति	–	स्वाति
भरणी	–	भरणि	विशाखा	–	बिसाखा
कृत्तिका	–	कृतिका	अनुराधा	–	अनुराधा
रोहिणी	–	रोहिणि	ज्येष्ठा	–	जेस्ठा
मृगशिरा	–	मृगसिरा	मूल	–	मूळ
आर्द्रा	–	आर्द्रा	पूर्वाषाढ़	–	पूर्वासाढ़
पुनर्वसु	–	पुनर्वसु	उत्तराषाढ़	–	उत्तरासाढ़
पुष्य	–	पुख्या	श्रवण	–	श्रवण
अश्लेषा	–	असलेखा	धनिष्ठा	–	धनिस्ठा
मघा	–	मघा	शतभिषा	–	सतविसा
पूर्वफाल्गुनी	–	पूर्वफाल्गुनि	पूर्वभाद्रपद	–	पूर्वभाद्रपद
उत्तरफाल्गुनी	–	उत्तरफाल्गुनि	उत्तरभाद्रपद	–	उत्तरभाद्रपद
हस्त	–	हस्त	रेवती	–	रेवती

5.11.4 तिथि

हिंदी		गढ़वाली	अष्टमी	-	अस्टमि
प्रतिपदा	-	पड़िवा	नवमी	-	नौमी
द्वितीया	-	दूज	दशमी	-	दसमी
तृतीया	-	तीज	एकादशी	-	एकादसि
चतुर्थी	-	चतुर्थि	द्वादशी	-	द्वादसि
पंचमी	-	पंचमि	त्रयोदशी-	तिरोदसि	
षष्ठी	-	खस्टि	चतुर्दशी	-	चौदसि
सप्तमी	-	सप्तमि	पूर्णमासी	-	पूर्णमासि

5.11.5 महीने

हिंदी		गढ़वाली	हिंदी		गढ़वाली
चैत्र	-	चैत	वैशाख	-	बैसाख
ज्येष्ठ	-	जेठ	आषाढ़ -	असाड़	
श्रावण	-	सौण	भाद्रपद	-	भादो
आश्विन	-	असूज	कार्तिक	-	कातिग
मार्गशीर्ष	-	मंगसीर	पौष	-	पूस
माघ	-	मौ	फाल्गुन	-	फागुण

5.11.6 गिनती

हिंदी		गढ़वाली	हिंदी		गढ़वाली
एक	-	एक	ग्यारह	-	ग्यारा
दो	-	द्वी	बारह	-	बारा
तीन	-	तीन	तेरह	-	तेरा
चार	-	चार	चौदह	-	चौद्दा
पाँच	-	पांच	पन्द्रह	-	पन्दरा
छह	-	छै	सोलह	-	सोला
सात	-	सात	सत्रह	-	सतरा
आठ	-	आट	अठारह	-	अठारा
नौ	-	नौ	उन्नीस	-	उन्नीस
दस	-	दस	बीस	-	बीस

इक्कीस	–	इक्कीस	छत्तीस	–	छत्तीस
बाईस	–	बाईस	सैंतीस	–	सैंतीस
तेईस	–	त्याईस	अड़तीस	–	अड़तीस
चौबीस	–	चौबीस	उन्तालीस	–	उणचालीस
पच्चीस	–	पच्चीस	चालीस	–	चालीस
छब्बीस	–	छब्बीस	इकतालीस	–	इकतालीस
सत्ताईस	–	सतैस	बयालीस	–	बयालीस
अट्ठाईस	–	अट्ठैस	तैंतालीस	–	तेतालीस
उन्तीस	–	उणतीस	चवालीस	–	चवालीस
तीस	–	तिरीस	पैंतालीस	–	पैंतालीस
इकतीस	–	इकतीस	छयालीस	–	छियालीस
बत्तीस	–	बतीस	सैंतालीस	–	सैंतालीस
तैंतीस	–	तेतीस	अड़तालीस	–	अड़तालीस
चौंतीस	–	चौतीस	उनचास	–	उणपचास
पैंतीस	–	पैंतीस	पचास	–	पचास

(गढ़वाल में गिनती कुल बीस तक ही की जाती थी। बीस के आगे इक्कीस के लिए एक बीसि एक, एक बिसि दो, एक बिसि ग्यारा, द्वी बिसि सात आदि कही जाती थी।)

5.12 अभ्यास प्रश्न

1. 'पतरोळ' कौन कहलाता है?
2. मछुआरे को गढ़वाली में क्या कहते हैं?
3. 'धुरपळो' किस शब्दावली से सम्बन्धित शब्द है?
4. 'पंच पथरी' शब्द.....से सम्बन्धित शब्द है।
5. 'पंद्यारो' जल से सम्बन्धित शब्द है। सत्य/असत्य

5.13 सारांश

इस इकाई का अध्ययन करने से आप गढ़वाली भाषा में लोक जीवन से जुड़ी मकान, बर्तन, कृषि, जल, लकड़ी, पत्थर, बालपन में खेले जाने वाले खेल, लोक व्यवसाय, आदि सम्बन्धी शब्दावली से परिचित हो गए होंगे। इस इकाई का उद्देश्य गढ़वाल के लोक जीवन की वर्गीकृत शब्दावली से आपका परिचय करवाना है।

5.14 शब्दार्थ

वर्गीकृत- अलग-अलग कोटि में विभाजित, पारंपरिक- परंपरा से चला आता, लोकशैली- उस समाज का शिल्प, सिद्धहस्त- कुशल, बहुतायत- अधिकता, अर्थोपार्जन- धन कमाना।

उत्तर- 1. जंगल का चौकीदार, 2. मछोई, 3. मकान, 4. बचपन के खेल, 5. सत्य

5.15 संदर्भ

1. गढ़वाली हिंदी शब्दकोश- अरविंद पुरोहित एवं बीना बेंजवाल
2. हिंदी गढ़वाली अंग्रेजी शब्दकोश- रमाकान्त बेंजवाल एवं बीना बेंजवाल
3. गढ़वाली भाषा की शब्द संपदा- रमाकान्त बेंजवाल
4. 'धाद' पत्रिका वर्ष 2021 में भीष्म कुकरेती का आलेख

5.16 निबन्धात्मक प्रश्न

1. पत्थर से सम्बन्धित 15 गढ़वाली शब्द हिंदी अर्थ सहित लिखिए।
2. मकान से सम्बन्धित शब्दों की विशेषताएँ लिखिए।

इकाई-6

गढ़वाली की विशिष्ट शब्दावली (Special vocabulary of Garhwali Language)

6.1 प्रस्तावना
6.2 उद्देश्य
6.3 अनुभूति बोधक शब्दावली
6.4 ध्वन्यर्थक शब्दावली
6.5 गंध बोधक शब्दावली
6.6 स्पर्श बोधक शब्दावली
6.7 स्वाद बोधक शब्दावली
6.8 समूहवाचक शब्दावली
6.9 संख्यावाची शब्दावली
6.10 अभ्यास प्रश्न
6.11 सारांश
6.12 शब्दावली
6.13 संदर्भ ग्रंथ सूची
6.14 निबंधात्मक प्रश्न

6.1 प्रस्तावना

आधुनिक युग में क्षेत्रीय भाषाओं की शब्दावली का विशेष महत्व हो गया है। वह युग बीत गया है जब हिंदी क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों की उपेक्षा करती थी। कई क्षेत्रीय भाषाओं में ऐसे शब्दों की भरमार है जिनके लिए हिंदी में कोई शब्द नहीं है। गढ़वाली में अनेक प्रकार की विविध विषयों की भावपरक शब्दावली है क्योंकि यह हिंदी की अपेक्षा माटी से जुड़ी है। गढ़वाली की भाषिक क्षमता यहाँ के प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक वैभव से सहभूत है। यहाँ के श्रमशील जीवन ने स्थानीय निवासियों को भावप्रवण हृदय प्रदान किया है। जेठ की भरी दुपहरी में और सावन की झड़ी में काम पर जुटी परदेश गए पति की याद में झूरती नवेली, पहाड़ी ढलानों पर घास काटते हुए 'छुणक्याळि दाथुलि' से गुंजित मधुर संगीत की लय पर खुदेड़ गीत गाती घसियारिन, वनों के एकांत में पशुओं को चराते वंशी की तान और गीतों में अपनी पीड़ा भुलाता चरवाहा; पर्वत शिखरों पर अपनी पूरी सुंदरता में उगता सूर्य, गरजते मेघ, झर-झर करते झरने, पक्षियों के सुरीले बोल, घर-घर में संबंधों से बंधी स्नेह की डोर- न जाने कितने-कितने मनोभावों, आवेगों और अनुभूतियों को जगाते शब्दों में व्यक्त होती आई है। गढ़वाली भाषा में ऐसी भिन्न-भिन्न पीड़ाओं, ध्वनियों, स्वादों, अनुभूतियों, गंधों, स्पर्श के लिए अलग-अलग कई शब्द

हैं।[1] हिंदी जैसी भाषा को ऐसे शब्दों को अपनाना चाहिए तथा हिंदी में इनका प्रयोग किया जा सकता है। गढ़वाली में खेतों के लिए ही देखिए, धान या साट्टि' के खेत के लिए 'सट्याड़ा', मकई का खेत 'मुंगर्याड़ा', गेहूँ का खेत 'गिंवाड़ा', आलू का खेत 'अल्वाड़ा', मिर्च का खेत 'मरच्वाड़ा', तिल का खेत 'तिल्वाड़ा', सरसों या 'घर्या' का खेत 'घर्याड़ा', जौ का खेत 'जवाड़ा', मंडवे या कोदे का खेत 'क्वदाड़ा', गन्ने का खेत 'लिख्वाड़ा', गहथ का खेत 'गथ्वाड़ा', सांवा या 'झंगोरे' का खेत 'झंगर्याड़ा', तंबाकू का खेत 'तमाख्वाड़ा' आदि अलग-अलग शब्द प्रचलित हैं जबकि हिंदी में इनके लिए अलग से कोई शब्द नहीं हैं।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आपको जानकारी मिलेगी कि:-

- हिंदी या अन्य भाषाओं की अपेक्षा गढ़वाली भाषा की ये शब्दावली कितनी समृद्ध है।
- गढ़वाली भाषा की विशिष्ट शब्दावली से परिचित होंगे।
- गढ़वाली भाषा की अति विशिष्ट गंधबोधक शब्द-संपदा के विषय में जानेंगे।
- सूक्ष्म अर्थभेद तथा अलग-अलग फसलों वाले खेतों के लिए प्रयोग किए जाने वाले शब्दो का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

6.3 अनुभूति बोधक शब्द

श्रमशील जीवन एवं प्रकृति का सान्निध्य पहाड़ के निवासियों को भावप्रवण बना देता है। यही कारण है कि माटी से जुड़े इस जन-मन की अपनी लोकभाषा भी भावपरक शब्दावली से लकदक है। गढ़वाली में मन की विभिन्न दशाओं, आवेगों एवं अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने वाले अनेकानेक शब्द हैं। इस शब्द भण्डार में से विविध मनोभावों को ध्वनित करने वाले कुछ शब्द इस प्रकार हैं:-

अणमणि- बेचैनी, उदासी.

अमोखो- घुटन, दम घुटने की स्थिति.

उकताट-अकुलाहट, बेचैनी.

उचाट- उद्विग्नता.

उचामुचि- देखिए 'उचाट'

उपास- जी न लगने की स्थिति.

एकुलांस- अकेलापन.

कबजाळ- दुविधा.

कबलाट-अकुलाहट, उद्विग्नता.

करास- पेट में तेज चुभन वाला दर्द.

कळकळि- किसी की दीन-हीन दशा अथवा कष्ट की स्थिति को देखकर मन में उत्पन्न होने वाली दया, करुणा और कष्ट की मिली-जुली अनुभूति.

कौंकाळि- किसी चीज जैसे गरम या कच्ची अरबी को खाने से मुँह में होने वाली जलन.

क्याप- अजीब-सा.

खज्याळि- खुजली.

खुद- प्रियजन या अपनों से दूर रहने पर होने वाली उदासी भरी व्याकुलता.

खुरखुरि-प्रतिशोध की भावना.

खेद्द- ईर्ष्या, जलन.

खोप- अनकहा दर्द जिसका शरीर और मन पर बुरा असर पड़े.

घबळाट- शरीर पर किसी छोटे कीट जैसे पिस्सू, खटमल आदि के चलने का एहसास. घांटु-

भूख (विशेषकर किसी बीमार व्यक्ति के संदर्भ में प्रयुक्त).
घुतघुति- किसी अपूर्ण इच्छा को निरंतर स्मरण करने की दशा.
घुमताळ- गुप्त कष्ट, वेदना.
चचड़ाट- शरीर के किसी भाग में अचानक होने वाली तीव्र पीड़ा.
चड़क- पीड़ा की लहर.
चणचणि- फोड़े के सूजने पर होने वाली पीड़ा.
चमराट/चिरि- कटे या जले स्थान पर होने वाली जलन.
चमळाट- शरीर के फोड़े वाले स्थान पर होने वाली हल्की मीठी खुजली.
चसक- शरीर के किसी अंग में रह-रह कर होने वाली पीड़ा.
चळकण- चौंकने की स्थिति.
चांट- बदले की भावना.
चाखु- चस्का.
चिड़ंग- झल्लाहट.
चिरड़- नाराजगी.
छपछपि- तृप्ति, पूर्ण संतुष्टि का भाव.
जळ्त- जलन.
झणझणि- त्वचा पर होने वाली घृणाजनित झरझराहट.
झमज्याट- बिच्छू घास आदि के लगने से शरीर पर होने वाली सरसराहट.
झरझरि- झरझराहट.
झसाक- किसी अंग के मुड़ने या मोच आने की चुभन-सी पीड़ा.
झिंगरि, झिड़बिड़ि- घृणा.
झुर्याट- आंतरिक कष्ट, इच्छा के विपरीत किसी कार्य को करने के लिए कहे जाने पर होने वाली चिंता.
झुरै- दुख महसूस करना.
टणक- उत्तेजना.
टऽणि- अंग विशेष पर ठंड से होने वाली पीड़ा.
टिटक, टिटखि- किसी हृदय विदारक दृश्य या दीन-हीन व्यक्ति को देखकर उमड़ने वाली दया की भावना.
तीस- प्यास.
दऽन- चिंता.
दौंकार- ईर्ष्याजनित क्रोध.
धुकधुकि- निरंतर बनी रहने वाली चिंता.
धगद्याट- किसी कारणवश मन में उत्पन्न होने वाली चिंता या भय.
निसेद्द- घुटन, दम घुटने की स्थिति.
पराज- पैर के तलुवों में होने वाली हल्की-सी सरसराहट जिससे यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि कोई याद कर रहा है.
पुळ्याट- प्रसन्नता, आह्लाद.
फिफड़ाट- दूसरे के कष्ट से होने वाली वेदना.
बगछट- अत्यधिक उल्लास की स्थिति.
बबराट- वेदना, पीड़ा.
बाडुळि- किसी के स्मरण किए जाने पर आने वाली हिचकी.
बिखळाण- किसी खाद्य पदार्थ से जी भर जाना.
भणमणि- किसी पदार्थ की तीव्र इच्छा.
भिरंगि- छोटी-सी बात पर अचानक आने वाला क्रोध.
ममराट, मिमराट- किसी नुकसान या हानि पर होने वाला उत्तेजनायुक्त कष्ट.
रंफणाट- प्रियजन की अत्यधिक याद आने पर होने वाली बेचैनी.
रणमणि- विरह की वेदना एवं मिलन की कल्पना के साथ आने वाली प्रियजन की याद.
रौंस- कार्य करते समय होने वाली सुखानुभूति, आनंद.
सबळाट- जूँ के शरीर पर रेंगने से होने वाली सरसराहट.
सेळी- दर्द की तीव्रता में आने वाली कमी.
हुबलास- उल्लास, उमंग.

6.4 ध्वन्यर्थक शब्द

सौंदर्यपरक शब्द गढ़वाली भाषा की शक्ति हैं। इनमें भी प्रचुर ध्वन्यात्मक शब्द इसकी विशिष्ट संपदा हैं। रमणीय प्रकृति एवं जन-जीवन की लोकभाषा गढ़वाली में रची-बसी ये शब्दावली अधिकांशतः 'आट'

प्रत्यय के योग से बनी है। जैसे- झर-झर झरते झरने का स्वर 'छछड़ाट', उन्मुक्त हँसने का स्वर 'खिकताट' आदि।

अड़ाट- भयभीत पशुओं की चिल्लाहट.

ककड़ाट- लगातार की जाने वाली व्यर्थ की बड़बड़ाहट.

कणाट- कराहने की आवाज.

कवारोळी- बहुत सारे कौओं की एक साथ कांव-कांव करने की आवाज.

किकलाट- ज़ोर-ज़ोर से बोलने पर होने वाला शोर.

किड़कताळ- आकाश में बिजली कड़कने की आवाज़.

किबलाट- शोर, कोलाहल, हल्ला.

किराट- शिशु के ज़ोर-ज़ोर से रोने की आवाज़.

किल्कताळ- ज़ोर की चीख.

खकड़ाट- किसी वस्तु को घसीटने की ध्वनि.

खबड़ाट- दरवाजे या बर्तनों के बजने की ध्वनि.

खमणाट- बर्तनों के टकराने की ध्वनि.

खलाट- तेजी से चलने वाली साँस की आवाज.

खबताट- आधा भरे बर्तन में द्रव के हिलने की ध्वनि.

खिकचाट- व्यर्थ की हँसी.

खिकताट- उन्मुक्त हँसी.

खिबच्याट- पक्षियों का कलरव.

खिबळाट- पानी के खौलने की ध्वनि.

खुबसाट- फुसफुसाहट.

गगड़ाट- बादलों के गरजने की ध्वनि.

गगदाट- पेट में वायु के कारण उत्पन्न ध्वनि.

गगराट- गले से निकलने वाली हल्की घर्र-घर्र की ध्वनि.

गबदाट- बहुत से लोगों की एक-साथ बोलने की ध्वनि.

गबळाट- अस्पष्ट ध्वनि.

गमग्याट- पानी के बहने की ध्वनि.

गिड़कताळ- आकाश में बिजली चमकने के बाद होने वाली गड़गड़ाहट.

गुंगनाट- नाक से बोलने की आवाज़.

गुगड़ाट- हुक्के की गुड़गुड़ाहट.

गुमणाट- भौंरों एवं मधुमक्खियों की आवाज़, धीमी और अस्पष्ट आवाज़.

घगसाट- श्वास अवरोध के कारण गले में होने वाला शब्द.

घगराट- गले से निकलने वाली घर्र-घर्र की आवाज़ ('घगराट' में घर्र-घर्र की हल्की और स्पष्ट ध्वनि होती है जबकि 'घगसाट' में घर्र-घर्र की ध्वनि स्पष्ट नहीं होती है).

घमणाट- बैलों के गले में बँधी घंटियों का स्वर.

घुंग्याट- मोटर या वायुयान की ध्वनि.

घुघराट- गुर्राहट.

घुस्याट- नाराजगी में की गई बड़बड़ाहट.

चचड़ाट- पेड़ या पेड़ की शाखा के टूटने से उत्पन्न ध्वनि.

चचराट- तेजी से तीखा बोलने की आवाज़. चटकताळ- थप्पड़ अथवा बेंत के प्रहार से उत्पन्न ध्वनि.

चटाक- देखिए 'चटकताळ' (चटाक और 'चटकताळ' में समय का अंतर होता है 'चटाक' से कम समय का बोध तथा 'चटकताळ' से अधिक समय का बोध होता है).

चिबड़ाट- गर्म तेल में पानी की बूँदें पड़ने पर उत्पन्न ध्वनि.

च्युंच्याट- पक्षियों अथवा चूहों की ध्वनि.

च्वींच्याट- दरवाजे या चारपाई के हिलने पर उत्पन्न होने वाली ध्वनि.

छछड़ाट- झरने का स्वर.

छणमण- गहनों के बजने की ध्वनि.

छबताट- पानी भरे बर्तन में पानी के छलकने के लिए प्रयुक्त शब्द.

छमणाट- चूड़ियों, सिक्कों या गहनों के बजने की ध्वनि.

छिंछ्याट- ऊँचाई से पानी गिरने का स्वर.

छिबड़ाट- झाड़ी या सूखे पत्तों में चलने से उत्पन्न ध्वनि.

झमणाट- पहने हुए गहनों की ध्वनि.

ठकट्याट- किसी बर्तन को खाली करने के लिए जमीन पर ठक-ठक कर बजाने की ध्वनि, पत्थर तोड़ने एवं लकड़ी पर कील ठोकने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि.

ठकठकि- खाँसी की आवाज़.

डिमड्याट- कच्चे फर्श में की गई उछल-कूद से उत्पन्न ध्वनि.

डुकरताळ- गुर्राहट, गर्जना.

ततड़ाट- कम ऊँचाई से थोड़ा पानी गिरने की आवाज.

तबड़ाट- अनाज भूनते हुए तड़-तड़ की आवाज.

थचाक- किसी भारी वस्तु के जमीन पर गिरने की ध्वनि.

दमड़ाट- ओलों, बारिश की बूँदों तथा पेड़ से फलों के गिरने की ध्वनि.

धड़ाक- कपड़ा फटने की आवाज़.

धड़ाम- वस्तु के गिरने की ध्वनि.

धाद/धै- किसी को बुलाने के लिए जोर से दी गई आवाज.

धिधराट- पशुओं द्वारा उछल-कूद से उत्पन्न ध्वनि.

धौंतर्याट- मनुष्यों द्वारा उछल-कूद से उत्पन्न ध्वनि.

निकन्याट- अनावश्यक रूप से हँसना.

पटासुल्कि- उंगलियों को मुँह में रखकर ज़ोर से सीटी बजाने की आवाज़.

पपड़ाट- सूखी पत्तियों में चलने या कागज़ के हिलने से उत्पन्न ध्वनि.

पिपड़ाट- सूखी फलियों से दाना निकालते समय उत्पन्न होने वाली ध्वनि.

प्वांऽ- बस के हॉर्न की आवाज़.

प्वींप्याट- छोटे बच्चों के रोने की आवाज़.

फचाक- आटे के थैले या पानी भरे गुब्बारे के जमीन पर गिरकर फटने/फूटने की आवाज़.

फफड़ाट- पक्षी के पंख फड़फड़ाने की ध्वनि.

फफराट- तेज़ हवा चलने पर कपड़ों से उत्पन्न ध्वनि.

फुंकराफुंकरि- गहरी नींद में सोये व्यक्ति के नाक से आने वाली आवाज़.

बबड़ाट- बड़बड़ाना.

भचाक- किसी धातु वाली वस्तु पर ज़ोर से किसी चीज़ के लगने की आवाज़.

भणाक- दूर से कान में पड़ती ध्वनि.

भबड़ाट- चूल्हे में जलती लकड़ियों से निकलने वाली भर्र-भर्र की आवाज़.

भिचोळाभिचोळि- किसी दरवाज़े को ज़ोर-ज़ोर से धक्का देने की आवाज़.

भिमणाट- मक्खियों की भिनभिनाहट.

लुल्याट- ज़ोर-ज़ोर से रोने की आवाज़.

ल्यराट- बकरियों की मिमियाहट.

ससराट, सिंस्याट- हवा की सरसराहट.

सिमणाट- जुकाम के कारण नाक बंद होने पर साँस लेते समय नाक से उत्पन्न ध्वनि.

सुबड़ाट- किसी तरल पदार्थ के बड़े-बड़े घूँट लेते हुए निकलने वाली सुड़-सुड़ की आवाज़.

हैंसारोळी- समूह में हँसने का स्वर.

6.5 गंध बोधक शब्द

गंध के विभिन्न प्रकारों के लिए गढ़वाली में अनूठी शब्दावली है. ये शब्द-संपदा गढ़वाली की अपनी महत्वपूर्ण निधि है.

कचाण- कच्चे या अधपके खाने से आने वाली गंध.

किकराण- ऊनी वस्त्र जलने की गंध.

किड़ाण- बालों के जलने या बाघ से आने वाली गंध.

किसराण- सुगंध.

कुकराण- कुत्तों के शरीर से आने वाली दुर्गंध.
कुतराण- सूती कपड़े जलने की गंध.
कुमराण- ताजा घी बनने की गंध.
कौंखाण- अनाज से आने वाली गंध.
खटाण- छाँछ या दही से आने वाली खट्टेपन की गंध.
खिकराण- मिर्च या कोई तीखी चीज़ जलने की गंध.
खुड़क्याण- छौंक की गंध.
खुमसाण- पुराने अनाज से आने वाली गंध.
गुवाण- मल से आने वाली दुर्गंध.
गौंताण- गौमूत्र से आने वाली गंध.
घियाण- घी की गंध.
चिलखाण- कच्चे तेल की गंध.
चुराण- पेशाब की गंध.
चौंळाण- चावलों के पानी से आने वाली गंध.
छौंकाण- छौंक की गंध.
जराण- ज्वर के कारण शरीर से आने वाली गंध.
टौंकाण- बदबू, दुर्गंध.
तमळाण- ताँबे के बर्तन में रखी वस्तु से आने वाली गंध.
तेलांण- किसी तली हुई चीज़ पर आने वाली कच्चे तेल की गंध.
त्वमाण- लौकी की प्रजाति 'त्वमड़ी' की गंध.
दुधाण- दूध की गंध.
दौंदाण- भिगाई हुई दाल को पीसकर बनाए गए अधपके साग पर आने वाली गंध.
धुवांण- धुएँ की गंध.
पदाण- अधोवायु की गंध.
पितळाण- पीतल के बर्तन में रखी खट्टी वस्तु से आने वाली गंध.
पिपराण- प्याज, मिर्च या सरसों के तेल आदि से आने वाली तीखी गंध.
फुक्याण- जलने की गंध.
बखराण- बकरियों पर आने वाली गंध.
ब्वखलाण/लुराण- छोटे बच्चों के शरीर से आने वाली तेल आदि की गंध.

भुज्याण- किसी अनाज को भूनने पर आने वाली गंध.
भुटाण- छौंक की गंध.
भुभलाण- खराब घी की गंध.
मछल्याण- मछली की गंध.
मटाण- मिट्टी की गंध.
मुंगाण- मूंग दाल की गंध.
मोळाण- गोबर की गंध.
सड्याण- सड़ी हुई वस्तु से आने वाली दुर्गंध.
सिलपाण- सीलन की गंध.
सुमर्याण- अरसा, पकोड़ी आदि बनाते समय आने वाली तैलीय खुशबू.
हळ्दाण- हल्दी की गंध.

6.6 स्पर्श बोधक शब्द

कंड्या- कंटीली वस्तु का स्पर्श.
कटकटो- सख्त.
खळखळो- चिकना (पत्थर).
गलगलो- ऐसी वस्तु जो उँगलियों से दबाने पर पिचक जाए.
गुदखली- मांसल.
गदगदी- मोटी एवं मुलायम.
गळ्तो- गुनगुना.
गिंजगिंजो- कीचड़युक्त, लिजलिजा.
चड़चड़ो- अत्यंत गर्म (पानी)
चस्सो- ठंडा.
चिपचिपो- चिपकने वाला तरल पदार्थ.
चिफळो- फिसलन वाला.
चिफळपट्ट- अत्यंत फिसलनयुक्त.
चिफल्वाणि- लिजलिजा.
छसाक- नुकीली वस्तु की हल्की चुभन.
झमज्याट- बिच्छू घास का स्पर्श.
टंगटंगो- सख्त जिसमें लचीलापन न हो.
तातो- गरम.
दरदरो- मोटा, खुरदरा.

पलपलो- सूजे हुए भाग का स्पर्श.
बग्वड्या-खुरदरे (हाथ-पाँव).
मनततो- हल्का गरम (पानी).
मुलैम- मुलायम.
लसलसो- महीन (मिट्टी, आटा).
लिचलिचो- चिपचिपा.

6.7 स्वाद बोधक शब्द

अमलाण्याँ- अम्लीय स्वाद.
अलोणो- नमक रहित स्वाद.
असवदि- स्वादहीन.
आमलो (जौ०)- खट्टा.
उगळाण्याँ/अवांण- किसी धातु के बर्तन पर रखे खाद्य पदार्थ से आने वाला स्वाद.
कच्याण- किसी कच्ची वस्तु का स्वाद.
कड़ो- कड़वा.
कळताण्याँ- खराब स्वाद.
कौंकळ्या- कच्ची अरबी का स्वाद.
खट्टो- खट्टा.
गळताण्याँ- बुखार के कारण मुँह में आने वाला मीठापन.
घळताण्याँ- फीका, अत्यंत कम मीठा.
चंगचंगो- चबाने में कठिन हो.
चटपटो- चटपटा.
चलमलो- वसायुक्त स्वाद.
चरचरो- तीखा.
चिलखाण्याँ- कच्चे तेल का स्वाद.
टटमरो- कच्ची हरड़ का स्वाद.
तीतो- कड़वा.
तेलाण्यां- तैलीय स्वाद.
दुधाळो- दूध के स्वाद वाला.
दौंदाण्याँ- भिगोकर पीसी गई दाल से बने कम पके साग से आने वाला स्वाद.
पीरु/पिराण्यां- प्याज खाने पर लगने वाला तीखा स्वाद.
फकफको- जो कठिनाई से निगला जाए.
फसफसो- फीका.
बरबरो- तीखा, मिर्चयुक्त.
मरचाण्याँ- मिर्च वाला.
मळमळो- स्वादहीन.
मिट्ठु- मीठा.
लोणकिट्ट- अत्यधिक नमकयुक्त.
ल्वण्यां- नमकीन.

6.8 समूह वाचक शब्दावली

गढ़वाली की शब्द संपदा समृद्ध है. यहाँ के लोक-जीवन में समूहों के लिए प्रयोग किए जाने वाले शब्दों की अपनी विशेषता है. समूह के द्योतक इन शब्दों का ज्ञान गढ़वाली भाषा सीखने में मदद करेगा.

दुबड़ै	गौंछि	पोथल्वी	घिमसाण
नोट्वी	गड्डी	ग्वेर्वी	पल्टण
ठांकर्वी	ग्वऽद	बांदर्वी	डाऽर
खंदेरो	छलको	म्वारू	भ्यऽल
छेम्या	झुंकळा	फुलार्वी	टोलकि
चाब्या	छुबका	घासै	गडोळी
अंगूरा	झुंका	म्वार्वी	घाण
ऊनौ	पुंजळु	सळो कि	घ्वाड़
लाखड्वी	कठगळ	बळो कु	थुपड़ो
साट्यू	कुनको	ढुंगू	चट्टा

मोळै	मरास	माटै	ढांग
साग-भुज्जी लगुल्यो कु	झिल्ल	भातै	मताळ
बौणे लगुल्यू	झिपल्याण	कपड़ौ	बोदगु
न्यारौ	ठट्ट	केळौ	फिरकु
साट्यों कि	रास	बीड़ूयौ	बण्डल
पराळौ	खुम्म/परखुंडो	धागौ	लच्छा
भण्ड्वी	चळंत	किरमल्वी	लूंग
बाखरू	रेड़	कागजौ	रिम
पुंगड़ू	धऽड़ो	पिसड़्वी	लकदड़
गैंण्वी	गुरमळि	जातरू	जत्था
लस्यों का	कुरमुळा	छुलक्वी	मुट्ट।

6.9 संख्यावाची शब्द

गढ़वाली में भी कुछ विशिष्ट अर्थ वाले संख्यावाची शब्दों का प्रयोग होता है. इन शब्दों का ज्ञान कराने के लिए कुछ शब्द नीचे दिए जा रहे हैं:-

अधेळ- आधा भाग.
त्याढ़- एक तिहाई.
पैल्वाण- पहली बार बच्चा देने वाला पशु.
यकानि- एक आने का सिक्का.
यकहड़्या- तवे में एक ही ओर पकाई गई रोटी.
इकसौंडाळ- एक समान.
इखारो- इकहरा.
एकमुखी- एक मुख वाला.
यकहत्या- ऐसी चीज़ जो एक ही व्यक्ति द्वारा संचालित हो.
यखुट्या- एक पाँव वाला.
इखरौण- ओखल में धान एक बार कूटना.
यकुळा- दिन में एक बार, आधा दिन.
दुकुळा- दोनों समय.
दुखंडो- दो खंड वाला (मकान).
दुघर्या- पूर्व पति का घर छोड़कर दूसरे पति के घर रहने वाली स्त्री.
दुफांग्याळो- दो शाखाओं वाला.
दुगड्डा- दो गाडों के मिलने वाला स्थान.
दुणगोड- दूसरी बार की गुड़ाई.
दुण्यौण- धान की बुवाई से पहले दूसरी बार खेत जोतना.
दुतरफु- दोनों तरफ.
दुधड़ो- दो भागों में बंटा हुआ.
दुनाळ्या- दो नाल वाली.
दुबाटो- दोराहा.
दुपाया- दो पैरों वाला.
दुपाळ्या- दो तरफ वाला.
दुफाड़- दो टुकड़ों में बंटा.
दुबाळो- नदी में वह स्थान जहाँ पर धारा दो भागों में बंट जाए और बीच में छोटा-सा टापू बन जाए.
दुमाग- दो मार्ग.
दुरंगी- दो रंग की.
दुलय्या- एक बार काटने के बाद दुबारा बढ़ी हुई घास.
दुसांद- सरहद, दो गाँवों की सीमा का मिलन स्थान.
दुहत्या- दोनों हाथों से.
दुसराण- दूसरी बार बच्चा देने वाला पशु.
दोण- दो 'डलोणे' का एक मात्रक, द्रोण.
द्वग्गा- दो एक साथ जुड़े हुए.
द्वारो- दुहरा.
तिकोण्यां- तीन कोने वाला.
तिपुरो- तीन मंजिला मकान.

तिमाण्याँ- तीन सोने के मनकों वाला गले का आभूषण.
तिमुंड्या- तीन सिर वाला.
तिरपुंड- तीन आड़ी रेखाओं का तिलक.
तिरसूळ- त्रिशूल.
तिलड्या- तीन लड़ियों वाला.
तिसराण- तीसरी बार बच्चा देने वाला पशु.
त्यारु- तिहरा.
चौदिसि- चार दिशाएँ.
चौखंबा- चार शिखरों वाला पर्वत.
चौखुंट- चारों किनारे.
चौखुंटू- चौकोर, जिसके चारों किनारे बराबर दूरी पर हों.
चौथ- चतुर्थी तिथि.
चौथो- हर चौथे दिन आने वाला बुखार.
चौपल- जिसके चारों फलक ठीक आयताकार या वर्गाकार हों.
चौपायो- चार पैरों वाला.
चौपुर्तु- चार तह वाला, चौहरा.
चौबाटा- चौराहा.
चौमास- वर्षा ऋतु के चार माह.
चौमुख्या- चार मुख वाला.
चौसिंग्या- चार सींगों वाला (मेढ़ा).
चौसेरो- चार सेर का पात्र (पाथो).
चौहड्या- चारों ओर से.
पंच- पंचायत के पांच सदस्य.
पंचगब- पंचगव्य (दूध, दही, घी, गौमूत्र एवं शहद का अभिमंत्रित मिश्रण).
पंचदेव- पाँच देव (शिव, गणेश, विष्णु, सूर्य, दुर्गा).
पंचप्रयाग- पाँच प्रयाग (विष्णुप्रयाग, नंदप्रयाग, कर्णप्रयाग, रुद्रप्रयाग, देवप्रयाग).
पंचकेदार- पाँच केदार (केदारनाथ, तुंगनाथ, रुद्रनाथ, कल्पनाथ, मद्महेश्वर).
पंचबदरी- पाँच बदरी (बदरीनाथ, आदिबदरी, योगध्यान बदरी, भविष्य बदरी, वृद्ध बदरी).
पंचपथरी- पाँच पत्थरों का एक खेल.
पंचपात्र- पाँच पात्र.
पंचमि- पंचमी तिथि.
पंचकुंड- पाँच कुंड.
पंचगै- पाँच गाँवों का समूह.
पंचाळु- प्रसूता स्त्री का प्रसव के बाद पाँचवाँ दिन.
पंचैत- पंचायत.
छट- बच्चे के जन्म का छठे दिन का पूजन.
सतनाजो- सात अनाजों का मिश्रण.
सत्वांसो- वह बच्चा जो सातवें महीने में ही पैदा हो जाए.
सप्ताह- सात दिन तक चलने वाली भागवत की कथा.
सत्वाळा- प्रसूता का सातवाँ दिन.
अठ्वाड़- आठ दिनों का अनुष्ठान जिसके अंत में आठ बलियाँ दी जाती हैं।
अठ्वांसो- समय से पूर्व आठवें मास में उत्पन्न होने वाला (बच्चा).
नवग्रह- नौ ग्रह (सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु).
नवरातरा- नवरात्र.
नौछमी- नौ लीलाओं वाला.
नौमी- नवमी, नवमी तिथि.
नौलड्या- नौ लड़ियों वाला (हार).
नौसेरु- नौ शिराओं वाला.
नौलो- नौवें दिन की जाने वाली पूजा.
नौसुर्या- नौ सुरों वाला.
इगास- एकादशी तिथि.
यकासु- ग्यारहवीं, मृतक की ग्यारहवें दिन की जाने वाली क्रिया.
बारमस्या- बारह महीनों लगने वाले फल.
बारामासा- बारह महीनों.
तिरिसु- मृतक का तीसवें दिन किया जाने वाला श्राद्ध.
बावनी- संवत् 1852 का दुर्भिक्ष.
चौरासि- चारों ओर से विपत्ति आना, चौरासी योनियों के दुख एक साथ आना.

लोक मात्रक

अनाज, पानी, घास, लकड़ी आदि की उचित मात्रा के लिए ऐसे अद्‌भुत मात्रा सूचक शब्द गढ़वाली के समृद्ध कोश में ही मिल सकते हैं।

अंग्वाळ्ठो- हाथों को गोलाई में मोड़कर बनी जगह में समाने लायक मात्रा.

अंज्वाळ- मिली हुई दोनों हथेलियों में समाने वाली वस्तु की मात्रा.

अधेळ- आधा हिस्सा (भूमि मालिक द्वारा अपने खेत किसी को फसल उगाने के लिए देना तथा आधा हिस्सा लेना).

खार- 20 'दोण' का मापक.

घटूड़- घराट चलाने लायक जल की मात्रा.

घट्वाळ- पनचक्की में एक बार में पीसने के लिए रखी गई अनाज की मात्रा.

घाण- एक बार में कूटे या पीसे जाने लायक अनाज की मात्रा.

चुटकी- दो उंगलियों के बीच समा सके इतनी मात्रा.

जड़खो- दोनों बाँहों को फैलाकर समेटी गई वस्तु की मात्रा.

डलोणि- रिंगाल का बना लगभग 16 किलो का बड़ा टोकरा, जो फसल की पैदावार नापने के काम आता है.

तामि- एक पाव.

त्याढ़- तिहाई.

थुमक्या- बर्तन का तीन चौथाई भाग, एक मात्रक.

दबाळ- एक हथेली में समाने लायक मात्रा.

दोण- दो 'डलोणि' का मात्रक, अनाज नापने का लगभग 32 किलो का मात्रक.

न्याणी- बाँहों में समा सकने लायक धान आदि कटे हुए अनाज की मात्रा.

पाथो- चार सेर का मात्रक.

पौळि- द्रव का मात्रक.

बात- एक दिन में जोती जाने वाली जमीन.

मुंड्यथ- हाथ की मुट्ठी बंद करके कोहनी से लेकर मुट्ठी तक की लंबाई.

वीलु- हाथ की चक्की (जंदरी) में पीसते समय एक बार में डाला जाने वाला मुट्ठी भर अनाज.

सेर/माणा- लगभग आधा किलो के बराबर की तोल की एक इकाई.

हात- कोहनी से मध्यमा उंगली के सिरे तक की दूरी.

6.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. मनोभावों से सम्बन्धित शब्द कहलाते हैं?
2. तातो शब्द का हिंदी अर्थ होगा क्या होगा?
3. समूह वाचक शब्दावली में लाखड़ूवी के लिए.....शब्द आएगा।
4. गढ़वाली में अत्यधिक नमकयुक्त स्वाद को क्या कहा जाता है?
5. गढ़वाली में सतनाजो स्पर्श बोधक शब्द है। सत्य/असत्य

6.11 सारांश

गढ़वाली भाषा के पास ऐसी विशिष्ट शब्द संपदा है जो उसे अन्य भाषाओं से अलग पहचान देती है। ये वे शब्द हैं जिनके लिए हिंदी या अन्य भाषाओं में ठीक-ठीक कोई शब्द नहीं है। जैसे हिंदी में गेहूँ की

फसल वाले खेतों को 'गेहूँ के खेत' ही कहते हैं। लेकिन इसी के लिए गढ़वाली में 'गिंवाड़ा' एक शब्द है। इसी तरह अन्य फसल वाले खेतों के लिए भी अलग-अलग शब्द हैं। विभिन्न प्रकार की गंधों के लिए गढ़वाली में 50 से अधिक शब्द, 32 से अधिक स्वाद बोधक शब्द, 100 के आसपास ध्वन्यर्थक शब्द, 26 से अधिक स्पर्श बोधक, 60 के आसपास अनुभूति बोधक तथा दर्जनों संख्यावाची शब्द हैं। ऐसी शब्दावली को अन्य भाषाएँ ग्रहण कर सकती हैं।

6.12 शब्दार्थ

सहभूत- साथ-साथ उत्पन्न, भावप्रवण- भावुक, भावपरक- हृदय के भावों से सम्बन्धित, मनोभावों- मन के भावों, ध्वनित- ध्वनि रूप में प्रकट हुआ, भाषिक- भाषा से सम्बद्ध।

उत्तर- 1. अनुभूति बोधक, 2. गरम, 3. कठगळ, 4. लोणकिट्ट 5. असत्य

6.13 संदर्भ

1. गढ़वाली हिंदी शब्दकोश- अरविंद पुरोहित एवं बीना बेंजवाल (गोविंद चातक जी की भूमिका)
2. हिंदी गढ़वाली अंग्रेजी शब्दकोश- रमाकान्त बेंजवाल एवं बीना बेंजवाल
3. गढ़वाली भाषा की शब्द संपदा- रमाकान्त बेंजवाल

6.14 निबन्धात्मक प्रश्न

1. गढ़वाली के 25 ध्वन्यर्थक शब्दों को हिंदी में अर्थ सहित लिखिए।
2. गंध बोधक शब्दों की दृष्टि से गढ़वाली भाषा बहुत समृद्ध है, स्पष्ट कीजिए।

इकाई-7

शब्दकोश निर्माण एवं प्रयोग विधि (Making of Dictionary and it's use)

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 शब्दकोश की परिभाषा

7.4 शब्दकोश निर्माण विधि

7.5 शब्दकोशों के प्रकार

7.6 शब्दकोश में अभीष्ट शब्द देखने की विधि

7.7 शब्दकोश और ज्ञानकोश में अंतर

7.8 शब्दकोश और थिसारस (समांतर कोश) में अंतर

7.9 गढ़वाली भाषा के शब्दकोश

7.10 अभ्यास प्रश्न

7.11 सारांश

7.12 शब्दावली

7.13 संदर्भ ग्रंथ सूची

7.14 निबंधात्मक प्रश्न

7.1 प्रस्तावना

शब्दकोश शब्दों का भण्डार होता है। इसे हम शब्दों का संग्रह भी कह सकते हैं। इसमें एक भाषा-भाषी समुदाय में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को संचित किया जाता है। शब्दकोश में सभी भाषाओं के वर्णानुक्रम या अन्य किसी निश्चित क्रम में शब्द दिए होते हैं और साथ ही उसी भाषा के साथ अन्य भाषा के अर्थ भी लिखे होते हैं। शब्दकोश से हमें शब्दों के अर्थ जानने में बहुत मदद मिलती है। शब्दकोश में शब्दों की व्युत्पत्ति, स्रोत, लिंग, शब्द-रूप एवं विभिन्न संदर्भपरक अर्थों के बारे में जानकारी दी जाती है। शब्दकोश को अंग्रेजी में डिक्शनरी कहते हैं। ये कई प्रकार के होते हैं। किसी एक भाषा के शब्द का अर्थ उसी भाषा में (जैसे- गढ़वाली शब्दकोश), किसी भाषा के शब्दों का अर्थ दूसरी भाषा में (जैसे- गढ़वाली हिंदी शब्दकोश) तथा किसी भाषा के शब्दों का दो से अधिक भाषाओं (जैसे- हिंदी गढ़वाली अंग्रेजी शब्दकोश) में अर्थ दिया जाता है।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आपः-

- शब्दकोशों का महत्व समझेंगे।
- शब्दकोशों की प्रयोग विधि जानेंगे।
- गढ़वाली भाषा के अभी तक उपलब्ध शब्दकोशों की जानकारी हासिल करेंगे।
- थिसारस और ज्ञानकोश क्या होते हैं, यह जानेंगे।

7.3 शब्दकोश की परिभाषा

'कोश' शब्द देवनागरी लिपि में दो प्रकार से लिखा जाता है। प्राचीन संस्कृत कोशों में 'ष' की प्रधानता होते हुए भी आधुनिक विद्वान शब्दकोश (डिक्शनरी) के लिए 'कोश' और खजाना के लिए 'कोष' का प्रयोग अधिक युक्ति संगत मानते हैं। 'कोश' शब्द अंग्रेजी के डिक्शनरी शब्द का समानार्थी है। हिंदी में कोश के लिए नाममाला, शब्दमाला, शब्दरत्न समुच्चय इत्यादि नाम प्रचलित हैं। सामान्य रूप से कहा जा सकता है कि शब्दकोश 'एक बड़ी सूची या ऐसा ग्रन्थ जिसमें शब्दों की वर्तनी, उनकी व्याकरणिक कोटि, व्युत्पत्ति, अर्थ, परिभाषा एवं उस शब्द का प्रयोग दिया हो'। अधिकांश शब्दकोशों में उच्चारण के लिए भी व्यवस्था होती है। आई. पी. ए. (International Phonatic Alphabet) द्वारा उसका उच्चारण स्पष्ट किया जाता है। वर्तमान में ऑनलाइन शब्दकोशों में शब्द का उच्चारण ऑडियो में भी आ रहा है। उस शब्द की पहचान के लिए चित्र भी प्रदर्शित किया जाता है।

लुईस शोर्स के अनुसार- 'भाषागत शब्दों की संग्रहात्मक पुस्तक को कोश कहते हैं। इसमें शब्द वर्णानुक्रमानुसार या अन्य किसी निश्चित क्रम से संयोजित रहते हैं और उनकी अर्थपरक व्याख्या तथा अन्य सूचनाएँ उसी भाषा या अन्य भाषा में दी हुई रहती हैं। वेबस्टर्स न्यू इंटरनेशनल डिक्शनरी में शब्दकोश की परिभाषा इस प्रकार दी गई है- 'शब्दकोश एक संदर्भ ग्रन्थ है, जो विषय विशेष या कार्य से सम्बन्धित शब्दों अथवा नामों की सूची अंकित कर उनका अर्थ और उपयोग की व्याख्या प्रस्तुत करता है'।

7.4 शब्दकोश निर्माण विधि

कोश विज्ञान भाषा विज्ञान की शाखाओं को एकीकृत करता है। किसी भी कोश के निर्माण में आरंभिक सामग्री संग्रह करने से पूर्व निर्माता के मन में यह प्रश्न उठता है कि इस कोश का प्रयोक्ता कौन है? उसी के अनुसार वह कोश का स्वरूप एवं संरचना की रूपरेखा तैयार करता है। कोश निर्माण दो तरीके से किया जाता है। पहला यह कि लगभग 5x3 इंच के कार्ड बनाकर उन शब्दों को वह कार्ड पर लिखता है। उनकी व्याकरणिक कोटि क्या है उसे उसके बाद ( ) कोष्ठक में लिखता है। फिर उनके अर्थ सामने लिखता है। यदि उस शब्द की व्युत्पत्ति, स्रोत तथा अन्य संदर्भपरक जानकारी कोशकार के पास है तो

उसे भी दिया जाता है। उस शब्द को कैसे प्रयोग किया जाएगा, उसको भी लिखा जा सकता है। जब कोशकार के पास उपलब्ध सभी शब्द कार्ड पर लिख लिए जाते हैं तो फिर उन्हें वर्णानुक्रम में लगाया जाता है। गढ़वाली कोश में हिंदी की भाँति देवनागरी वर्णमाला का अनुसरण किया जाता है। 'अं' से प्रारम्भ होने वाले शब्द सबसे पहले दिए जाते हैं। जब कोश की पाण्डुलिपि तैयार हो जाती है तो फिर टाइप करवाने के लिए दिया जाता है। कोश को किस फॉण्ट में टाइप करना है, कोष्ठक में क्या आएगा, किस साइज के फॉण्ट होंगे, शब्द को बोल्ड किया जाना है, इटेलिक क्या किया जाएगा आदि सब पहले ही तय करना पड़ता है।

दूसरे प्रकार से वर्तमान में कंप्यूटर में वर्णानुक्रम करने के लिए साफ्टवेयर बन गए हैं। रोमन लिपि के लिए तो पहले से ही यह सुविधा थी लेकिन देवनागरी में यह कार्य कठिन था क्योंकि देवनागरी में मात्राएँ, संयुक्ताक्षर होने से असुविधा होती थी। हालांकि अभी भी देवनागरी वर्णानुक्रम के लिए सर्वसुलभ सॉफ्टवेयर नहीं है। कोशकार अपनी सुविधा के लिए व्यक्तिगत रूप से ऐसे सॉफ्टवेयर बनवा कर अपना काम करते हैं। वर्तमान में शब्दाकोशों के मोबाइल एप भी बन गए हैं। मोबाइल एप में सरलता से उसी समय वांछित शब्द का अर्थ देखा जा सकता है। इस दिशा में गढ़वाली शब्दकोश के मोबाइल एप पर भी कार्य चल रहा है।

7.5 शब्दकोशों के प्रकार

भाषा के आधार पर-

1. एकभाषी- एक भाषिक कोश में स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा एक ही होती है। जिस भाषा में शब्दों की प्रविष्टि दी जाती है, शब्दों के अर्थ व्याख्या आदि भी उसी भाषा में दिये जाते हैं। जैसे- गढ़वाली-गढ़वाली, हिंदी-हिंदी, अंग्रेजी-अंग्रेजी आदि। एकभाषी कोश कई प्रकार के हो सकते हैं- जैसे- शब्दकोश, उपसर्ग कोश, प्रत्यय कोश, धातु कोश, मुहावरा कोश, पर्याय कोश, विलोम कोश, अंतर्कथा कोश, विषय कोश आदि।

2. द्विभाषी- वे शब्दकोश जो स्रोत भाषा का अर्थ व उपयोग अन्य भाषा में बतलाते हैं, द्विभाषी शब्दकोश कहलाते हैं। जैसे- हिंदी गढ़वाली शब्दकोश। अंकुर (पु०)- अंगरा. अंकुरना (क्रि०)- अंगर्‌यण।

3. बहुभाषी- दो या दो से अधिक भाषाओं के शब्दकोश बहुभाषी शब्दकोश कहे जाते हैं। अंगूठी (स्त्री०)- मुंदड़ी, गुंठि ring- *mundari, gunthti.* जैसे- हिंदी-कुमाउनी-गढ़वाली-जौनसारी शब्दकोश, उत्तराखण्ड की 13 लोकभाषाओं का शब्दकोश 'झिक्कल कामची उडियाली'।

उपयोग के आधार पर-

1. शिक्षार्थी शब्दकोश
2. मानक शब्दकोश

3. व्युत्पत्ति शब्दकोश
4. विषय शब्दकोश- अलग-अलग विषयों के शब्दकोश/व्यक्ति
5. पर्यायवाची शब्दकोश
6. ज्ञानकोश

7.6 शब्दकोश में अभीष्ट शब्द देखने की विधि

यहाँ हम देवनागरी लिपि में निर्मित शब्दकोशों की बात करेंगे। क्योंकि गढ़वाली साहित्य का लेखन देवनागरी लिपि में किया जाता है।

1. कोश में अँ/अं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ क ख ग घ च छ ज झ ट ठ ड/ड़ ढ/ढ़ त थ द ध न प फ ब भ म य र ल/ळ व श ष स ह देवनागरी वर्णमाला क्रम में अक्षरों को रखा जाता है। ङ ञ ण से कोई शब्द आरंभ नहीं होते हैं।

दूसरे अक्षर के रूप में- अँ/अंक, अक, अख, अग, अघ, अच, अछ, अज, अझ, अट, अठ, अड/अड़, अढ/अढ़, अण, अत, अथ, अद, अध, अन, अप, अफ, अब, अभ, अम, अय, अर, अल/अळ, अव, अश, अष, अस, अह होते हैं।

उक्त क्रम के बाद मात्राओं का क्रम इस प्रकार होता है- का, कि, की, कु, कू, कृ, के, कै, को, कौ. तत्पश्चात् क्रमशः क्क, क्ख, क्च, क्त, क्थ, क्न, क्प, क्म, क्य, क्र, क्ल/क्ळ, क्व, क्श, क्ष, क्स होते हैं।

संयुक्ताक्षर- संयुक्त अक्षरों में 'क्ष' को 'क' के, 'त्र' को 'त' के, 'ज्ञ' को 'ज' के तथा 'श्र' को 'श' के साथ रखा जाता है।

क्ष (क्+ष) उदाहरण के लिए- कलर्की (स्त्री०)- कलर्कि. क्रोधी (वि०)- गुस्साबाज, कुरोधि, घुस्यड्डु. क्लांत (वि०)- थक्यूं, पळेख्यूं. क्लेश (पु०)- कलेश, दुख, पिड़ा, घुमताळ. क्वार (पु०)- असूज. क्वार्टर (पु०)- क्वाटर, एक चौथे. क्षण (पु०)- घड़ि, पल. क्षणिक (वि०)- घड़ेक, झिटघड़ि. क्षति (स्त्री०)- नुकसान, हानि।

त्र (त्+र) उदाहरण के लिए- तौलिया (स्त्री०)- अंग्वीछा. त्यक्त (वि०)- छोड्यूं, त्याग्यूं. त्याग (पु०)- त्याग, छोड़ण. त्यागना (क्रि०)- त्यागण, वर्जण, छोड़ण. त्यागी (पु०)- त्यागी, बैरागी. त्योहार (पु०)- त्यवार, पर्व, बार-त्योहार. त्यौं (अव्य०)- वनि, उन्नि. त्यौरी (स्त्री०)- कपाळे नस्स. त्रय (वि०)- तीन. त्रयोदशी (स्त्री०)- तिरोदसि. त्रस्त (वि०)- दुखि, परेसान. त्राण (पु०)- मुक्ति, उद्धार. त्रास (स्त्री०)- दुख, कष्ट, तरास. त्रासदी (स्त्री०)- विपदा, संकट. त्रिया (स्त्री०)- तिरिया. त्रुटि (स्त्री०)- गल्ति, कमी, भूल. त्रैमासिक (वि०)- तिमाही. त्वचा (स्त्री०)- खाल, खलड़ि।

ज्ञ (ज्+ञ), उदाहरण के लिए- जोशीला (वि०)- जोसिलो, हौंसिलो. जौहरी (पु०)- सुनार. ज्ञान (पु०)- ज्ञान. ज्ञानी (वि०)- जणगुरु, जाणकार, ज्ञानी. ज़्यादा (वि०)- जादा, अति, झकाझोर. ज्येष्ठ (वि०)- ठुलो, ज्यठो.

श्र (श्+र), उदाहरण के लिए- शौक़ीन (वि०)- सौकीन, श्मशान (पु०)- मड़घाट, श्रद्धालु (वि०/पु०)- जैका मन मा सरद्धा हो, श्रद्धेय (वि०)- पूज्य, श्रम (वि०)- मीनत, मेनत, श्रमिक (पु०)- भुर्त्या, कामदार, मजूर, श्रेष्ठ (वि०)- बड़ो, महान, श्लोक (पु०)- श्लोक, श्वास (पु०)- सांस, श्वेत (वि०)- सुकेलो, सुफेद, धौळ्या।

2. सामान्यतः मुख्य प्रविष्टि बोल्ड कर लिखी जाती है। शब्द की प्रविष्टि के बाद कोष्ठक (....) में व्याकरणिक कोटि- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय, क्रिया विशेषण, निपात, योजक, कारक, उपसर्ग, आदि दिए जाते हैं। संज्ञा या तो पुल्लिंग होती है या स्त्रीलिंग। सामान्यतः कोश में पु० या स्त्री० से समझना चाहिए कि ये संज्ञा के भेद हैं। साथ ही स्तरीय शब्दकोशों में शब्दों के स्रोत, व्युत्पत्ति, उनके प्रयोग आदि भी दिए जाते हैं।
3. व्याकरणिक परिचय के बाद मूल प्रविष्टि शब्द का अर्थ दिया/दिए जाते हैं।
4. व्याकरणिक चिह्न परिचय- पु०- पुल्लिंग, स्त्री०- स्त्रीलिंग, सर्व०- सर्वनाम, क्रि०- क्रिया, वि०- विशेषण, अ०- अव्यय, क्रि०वि०- क्रिया विशेषण, विस्मय०- विस्मयादिबोधक, संबो०- संबोधन, नि०- निपात, यो०- योजक, उप०- उपसर्ग, प्रत्य०- प्रत्यय, का०- कारक, मुहा०- मुहावरा, ए०व०- एकवचन।

7.7 शब्दकोश और ज्ञानकोश में अंतर

जिस प्रकार 'शब्दकोश' में शब्दों के अर्थ दिए होते हैं उसी प्रकार 'ज्ञानकोश' में मानव द्वारा संचित ज्ञान को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाता है। हालांकि शब्दकोश भी एक ज्ञानकोश ही होता है। शब्दकोश में किसी शब्द का सूक्ष्म अर्थ दिया होता है लेकिन ज्ञानकोश ऐसा ग्रंथ होता है जिसमें जानकारी या विमर्श के लिए कुछ विशिष्ट प्रसंगों की बातें देखी जाती हैं। ज्ञानकोश कई प्रकार के होते हैं। ज्ञानकोश का सबसे विशद रूप 'विश्व ज्ञानकोश' है। इसमें मानव द्वारा संचित हर प्रकार की जानकारी और सूचना का संक्षिप्त संकलन होता है।

हम ज्ञानकोश को संदर्भ ग्रंथ भी बोल सकते हैं। संदर्भ ग्रंथों के अन्य महत्वपूर्ण प्रकार 'साहित्य कोश' और 'चरित कोश' होते हैं। 'साहित्य कोश' में साहित्यिक विषयों से सम्बन्धित जानकारियाँ संकलित होती हैं। 'चरित कोश' में साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, खेल, अर्थशास्त्र, राजनीति आदि क्षेत्रों के महान व्यक्तियों के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में जानकारी संकलित होती है।

ज्ञानकोश गागर में सागर समान होते हैं। जब भी किसी विषय पर तुरंत जानकारी की आवश्यकता होती है, संदर्भ ग्रंथ या ज्ञानकोश हमारे काम आते हैं। ज्ञानकोशों में जानकारियों का सिलसिलेवार संकलन 'शब्दकोश' के नियमों के अनुसार ही होता है। आज के समय में सबसे बड़ा ज्ञानकोश 'गूगल सर्च इंजन' है। हालांकि इन सूचनाओं को प्रामाणिक मानने में अपने विवेक का इस्तेमाल करना पड़ता है। विकिपीडिया गूगल में सबसे बड़े ज्ञानकोशों में एक है। सर्व प्रथम विकिपीडिया अंग्रेजी में जनवरी, 2001

में आरंभ हुआ। हिंदी में विकिपीडिया जुलाई, 2003 से शुरू हुआ। इसमें दुनिया की लगभग 309 भाषाओं में सूचनाएँ संकलित हैं। इनका स्रोत कोई भी हो सकता है। प्रयोक्ता इसमें अपनी सूचनाओं को अपडेट कर सकता है। यह एक मुक्त ज्ञानकोश है।

7.8 शब्दकोश एवं थिसारस (समांतर कोश) में अंतर

आप कुछ पढ़ रहे हैं और कोई नया शब्द आपने पढ़ा जिसका अर्थ आपको पता नहीं है तो आप अपने पास उपलब्ध शब्दकोश में उसका अर्थ देखकर लिखे हुए को समझ सकते हैं। शब्दकोश की सहायता से आप किसी भी शब्द का अर्थ जान सकते हैं। लेकिन यदि आप कुछ लिख रहे हैं और अपने विचार को अभिव्यक्त करने के लिए किसी सटीक शब्द की तलाश में हैं तो शब्दकोश आपकी मदद नहीं कर पाएगा। ऐसे में आपको थिसारस की शरण में जाना होगा। थिसारस के लिए शब्द विज्ञानी अरविंद कुमार जी ने हिंदी में 'समांतर कोश' नाम दिया है।

समांतर कोश शब्दकोश के ही समान संदर्भ पुस्तक को कहा जाता है जिसमें शब्दों के अर्थ व उच्चारण के बजाय उसके समानार्थक तथा विलोम शब्दों व उनके प्रयोग पर जोर दिया जाता है। शब्दकोश की भांति समांतर कोश में शब्दों को परिभाषित नहीं किया जाता है बल्कि समान शब्दों में भेद स्पष्ट कर सटीक शब्द के चुनाव को आसान बनाया जाना इसका ध्येय होता है। इस प्रकार समांतर कोश को शब्दसूची नहीं समझा जाना चाहिए।

हिंदी का पहला समांतर कोश बनाने का श्रेय अरविंद कुमार एवं उनकी पत्नी कुसुम कुमार को दिया जाता है। इसके दो खण्ड हैं। पहला 'अनुक्रम खण्ड' और दूसरा 'संदर्भ खण्ड'। अनुक्रम खण्ड में आपको शब्दकोश की भाँति वर्णानुक्रम में अपना अभीष्ट शब्द देखना होगा तथा उस शब्द के समांतर अन्य शब्द का क्रमांक इसी पहले खण्ड में मिलेगा। उदाहरण के लिए आप कोई कविता या कहानी लिख रहे हैं। आपको कहीं पर 'ओखा' शब्द लिखना पड़ रहा है। लेकिन आप इस शब्द से संतुष्ट नहीं हैं और इसकी जगह कोई अन्य समानार्थी शब्द चाहते हैं। तब आप पहले अनुक्रम खण्ड में देखेंगे। इसमें यह 'ओखा/ओखी' लिखा मिलेगा। इसके ठीक नीचे -छिद्रिल- 291.31 लिखा होगा। यदि आपका काम 'छिद्रिल' से चल जाता है तो यहीं आपकी समस्या का समाधान हो गया। लेकिन आप 'छिद्रिल' से भी संतुष्ट नहीं हैं तो फिर आप समांतर कोश के 'संदर्भ खण्ड' को खोलेंगे। 'संदर्भ खण्ड' संख्या क्रम में है। अब आप संख्या क्रम 291.31 में देखेंगे। इसमें 'छिद्रिल' मूल प्रविष्टि दिखेगी।

इसके आगे- *ओखा/ओखी, खखरा/खखरी, खाँखर, छलनीदार, छिदरा/छिदरी, छिदा/छिदी, छिद्रयुक्त, छेदित, छेदीला/छेदीली, जजंरीक, जालीदार, झंझरा, झंझरीदार, झनैना/झनैनी, झांझर, झिरझिरी, झिलमिल, झिल्लड़, झीना/झीनी, धोतर, रंध्रिल, रंध्री, रिसता/रिसती, शुषिर, सुराखदार, स्रावशील, स्रावी* आदि हैं। अब आपको मन वांछित पर्यायवाची जो भी ठीक लगे, उसे लिख सकते हैं। इस प्रकार क्रमांक से संदर्भ खण्ड में वांछित शब्द के समांतर शब्दों को देखा जाता है। अरविंद कुमार जी लिखते हैं कि

शिव के ही 2,519 पर्याय शब्द इसमें दिए गए हैं। समांतर कोश में 988 शीर्षक हैं तथा 25,562 उपशीर्षकों के 2,90,477 अभिव्यक्तियाँ दी गई हैं।

इस प्रकार एक शब्द के समान अर्थ वाले शब्दों को थिसारस (समांतर कोश) में समाहित किया जाता है। जैसे- मीठा स्वाद सं- *गुड़ जैसा स्वाद, चीनी जैसा स्वाद, मधु जैसा स्वाद, मधुराई, मधुरिमा, माधुरी, माधुर्य, मिठास, मीठापन, रसालता, सरसता, ॰ईख रस ॰कैरेमल ॰खौड़ ॰गुड़ ॰चाशनी ॰चीनी ॰बूरा ॰मिसरी ॰शक्कर ॰शर्करा ॰शहद ॰शीरा ॰स्वीटनर आदि।* थिसारस हिंदी भाषा में नब्बे के दशक में सामने आया है। इस प्रकार के काम क्षेत्रीय भाषाओं में भी हो सकते हैं।

7.9 गढ़वाली भाषा के शब्दकोश

स्वतंत्रता से पूर्व गढ़वाली भाषा के शब्दों के संग्रह पर गढ़वाल के पहले प्रकाशक विशालमणि शर्मा तथा गढ़वाली साहित्य परिषद, लाहौर के विशिष्ट सदस्य पं० बलदेव प्रसाद नौटियाल जी के मन में आया। विशालमणि शर्मा जी ने कुछ गढ़वाली शब्दों का संग्रह भी किया था। पं० बलदेव प्रसाद नौटियाल जी ने एक शब्दाकोश निर्माण समिति का गठन किया, जिसके संयोजक पं० श्रीधरानंद घिल्डियाल एवं पं० शिव प्रसाद घिल्डियाल जी बनाए गए। लाहौर के बाहर से भी चक्रधर बहुगुणा जी, भगवती प्रसाद पांथरी जी, महंत योगेन्द्र पुरी जी, पं० श्रीधरानंद नैथानी जी, भक्त दर्शन जी आदि विभूतियाँ इस समिति में सम्मिलित की गई थीं। नमूने के तौर पर इस शब्दकोश के कुछ पन्ने प्रकाशित भी हुए। देश की आजादी के बाद पाकिस्तान अलग देश बन गया। समिति द्वारा जितना भी गढ़वाली शब्दों का संग्रह किया गया था इस राजनैतिक घटनाक्रम के कारण वह शब्दकोश का रूप नहीं ले पाया। ये संकलित शब्द किसके पास हैं, यह भी जानकारी नहीं है।

गढ़वाली का पहला शब्दकोश मास्टर जयलाल वर्मा जी द्वारा वर्ष 1982 में प्रकाशित किया गया। इसकी पांच सौ प्रतियाँ छपीं। इसका दूसरा संस्करण कुंवर सिंह नेगी 'कर्मठ' जी द्वारा 1992 में प्रकाशित किया गया। 168 पृष्ठों के इस कोश में लगभग पांच हजार शब्द संकलित हैं। मूल प्रविष्टि गढ़वाली में है। उसके बाद व्याकरणिक कोटि और फिर शब्द का अर्थ दिया गया है। दूसरा गढ़वाली शब्दकोश मालचंद रमोला जी द्वारा सन् 1994 में श्रद्धम, पौड़ी द्वारा प्रकाशित किया गया। 228 पृष्ठों के इस शब्दकोश में भी लगभग पांच हजार शब्द संगृहीत हैं। इस शब्दकोश में गढ़वाली भाषा के टिहरियाली रूप की शब्दावली ज्यादा है, जो टिहरी राजभाषा के नजदीक है।

तीसरा गढ़वाली हिंदी शब्दकोश वर्ष 2007 में अरविंद पुरोहित एवं बीना बेंजवाल द्वारा प्रकाशित किया गया जिसका संपादन रमाकान्त बेंजवाल ने किया। इसकी भूमिका डॉ० गोविंद चातक जी द्वारा लिखी गई है। इसका द्वितीय संस्करण सन् 2013 में प्रकाशित हुआ। 520 पृष्ठों के इस शब्दकोश में लगभग 21 हजार शब्द संकलित हैं। मूल प्रविष्टि गढ़वाली में दी गई है और उसके बाद कोष्ठक में व्याकरणिक कोटि, कुछ शब्दों का स्रोत तथा फिर शब्दार्थ दिया गया है। कतिपय शब्दों के समानार्थी, विलोम तथा

कहीं-कहीं शब्दों की व्याख्या में कोई पदबंध या छोटा-सा वाक्य दिया गया है जिससे शब्द का प्रयोग अधिक स्पष्ट हो जाता है। पाठकों की सुविधा के लिए इस शब्दकोश में वर्गीकृत शब्दावली की एक लम्बी सूची दी गई है। प्राकृतिक वनस्पति, वनौषधि, जल, पत्थर, लकड़ी, रिंगाल से संबंधित, लोक परंपराएं, लोक व्यवसाय, लोक विश्वास, मानव स्वभाव, लोक वाद्य, लोक गीत, मकान, बर्तन, पशु एवं कीट, अनाज, सब्जी, फल, वस्त्र, आभूषण, भोजन, पक्षी, कृषि उपकरण, शरीर के अंग, पहर, शारीरिक विकार/बीमारियों से संबंधित शब्द, रिश्ते-नाते, रिश्ते के गाँव, ऋतुएँ/मौसम, तंत्र-मंत्र संबंधी शब्दावली, गाँव के स्थान नाम, रंग, गिनती, दिन, राशि, नक्षत्र, तिथि, महीने, अनुभूति बोधक, ध्वन्यर्थक, गंध बोधक, स्वाद बोधक, स्पर्श बोधक, समूह वाचक, संख्यावाची शब्द, बचपन के खेल-खिलौने, मात्रक आदि वर्गीकृत शब्दावली परिशिष्ट में दी गई है। इनके अतिरिक्त गढ़वाली, जौनसारी एवं भोटिया शब्दों की तुलनात्मक सूची के साथ पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, शब्द युग्म, अनेकार्थी शब्द, समानता सूचक शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, पहेलियाँ आदि भी संक्षिप्त रूप में दिए गए हैं।

चौथा शब्दकोश अखिल गढ़वाल सभा, देहरादून द्वारा संस्कृति विभाग उत्तराखण्ड के आर्थिक सहयोग से तैयार करवाया गया। वर्ष 2014 में प्रकाशित इस शब्दकोश के प्रधान संपादक डॉ० अचलानंद जखमोला एवं प्रबन्ध एवं संयोजक संपादक भगवती प्रसाद नौटियाल जी और सम्पादक मण्डल में शिवराज सिंह रावत 'निःसंग' जी, डॉ० आर० एस० असवाल जी, रामकुमार कोटनाला जी हैं। गढ़वाली हिंदी अंग्रेजी के इस पहले त्रिभाषी शब्दकोश में 748 पृष्ठ हैं। मूल प्रविष्टि गढ़वाली में दी गई है। फिर व्याकरणिक कोटि और उसके बाद शब्दों का अर्थ दिया गया है। मूल प्रविष्टि में कई शब्दों के औच्चारणिक विभेद एक साथ दिए गए हैं। प्रविष्टि के पहले शब्द को मानक माने जाने की बात कही गई है। संस्कृति विभाग उत्तराखण्ड द्वारा प्रकाशित यह शब्दकोश आम पाठक तक नहीं पहुँच सका। अखिल गढ़वाल सभा, देहरादून द्वारा सन् 2016 में इसे स्वयं प्रकाशित किया गया। संस्कृति विभाग द्वारा प्रकाशित शब्दकोश की तुलना में टाइप सेटिंग के कारण इसमें पृष्ठ भले ही कम हैं लेकिन कुछ और शब्द जोड़ने से शब्द संख्या बढ़ी है। 640 पृष्ठों के इस संस्करण में एक पृष्ठ में 30 से 35 प्रविष्टियाँ हैं यदि एक पेज की 33 प्रविष्टि भी लगाएँ तो कुल शब्दों की प्रविष्टियों की संख्या 21,120 के आसपास होती है।

हिंदी कुमाउंनी गढ़वाली जौनसारी शब्दकोश वर्ष 2015 में प्रकाशित हुआ। इस कोश की संपादक भारती पाण्डे जी हैं। इस कोश में गढ़वाली के लिए बीना बेंजवाल जी तथा जौनसारी के लिए रतन सिंह जौनसारी जी ने कार्य किया है। 252 पृष्ठों के इस शब्दकोश में मूल प्रविष्टि हिंदी में दी गई है फिर कुमाउंनी, गढ़वाली और जौनसारी भाषा के शब्द क्रमशः दिए गए हैं। परिशिष्ट में वर्गीकृत शब्दावली भी दी गई है। डॉ० अचलानंद जखमोला जी द्वारा इंगलिश गढ़वाली हिंदी डिक्शनरी सन् 2016 में प्रकाशित की गई। 246 पृष्ठों के इस शब्दकोश में लगभग 6-7 हजार शब्द हैं। मूल प्रविष्टि अंग्रेजी भाषा में दी गई है फिर व्याकरणिक कोटि, उसके बाद गढ़वाली और हिंदी में अर्थ दिया गया है।

पीपुल्स लिंग्वेस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया द्वारा उत्तराखण्ड की 13 भाषाओं का सर्वेक्षण होने के बाद इन भाषाओं का एक व्यावहारिक शब्दकोश 'झिक्कल काम्ची उडायली' नाम से प्रकाशित हुआ। 1500 व्यावहारिक शब्दों के इस कोश में मूल प्रविष्टि हिंदी में है उसके बाद कुमाउंनी, गढ़वाली, जाड, जौहारी, जौनपुरी, जौनसारी, थारू, बंगाणी, बोक्साड़ी, माच्छी, रं-ल्वू, रवांल्टी फिर राजी के शब्द दिए गए हैं।

हिंदी गढ़वाली (रोमन रूप सहित) अंग्रेजी त्रिभाषी कोश रमाकान्त बेंजवाल एवं बीना बेंजवाल द्वारा वर्ष 2018 में प्रकाशित किया गया। 480 पृष्ठों के इस कोश में मूल प्रविष्टि हिंदी में फिर व्याकरणिक कोटि तब गढ़वाली अर्थ, अंग्रेजी अर्थ और गढ़वाली का रोमन रूप भी दिया गया है। लगभग नौ हजार शब्दों के इस कोश में पूर्व में प्रकाशित गढ़वाली हिंदी शब्दकोश में संकलित वर्गीकृत शब्दावली भी दी गई है। कुंज बिहारी मुंडेपी जी का 'तमऽळि उंद गंगा' गढ़वाली हिंदी अंग्रेजी शब्दकोश भी 2021 में प्रकाशित हुआ है। इस कोश में मूल प्रविष्टि गढ़वाली में तथा उसके बाद हिंदी और अंग्रेजी में भी अर्थ दिया गया है। इनके अतिरिक्त कन्हैयालाल डंडरियाल जी द्वारा संकलित शब्दकोश और महेशानंद जी का गढ़वाली हिंदी शब्दकोश प्रकाशनाधीन हैं। अभी तक गढ़वाली में शिक्षार्थी कोशों पर ही कार्य हुए हैं। अब मानक शब्दकोश, व्युत्पत्ति कोश तथा ऑन लाइन मोबाइल एप शब्दकोश पर कार्य करने की आवश्यकता है। जिसके लिए प्रयास जारी हैं।

7.10 अभ्यास प्रश्न

1. शब्दकोश में भाषाओं के शब्द किस क्रम में दिए जाते हैं?
2. जयलाल वर्मा जी के गढ़वाली शब्दकोश का पहला संस्करण कब प्रकाशित हुआ?
3. अरविंद कुमार एवं कुसुम कुमार का थिसारस किस नाम से प्रकाशित है?
4. हिंदी गढ़वाली अंग्रेजी शब्दकोश के रचयिता कौन हैं?
5. गढ़वाली शब्दकोश में वर्णानुक्रम 'अं' से शुरू होता है। सत्य/असत्य

7.11 सारांश

इस इकाई के अध्ययन करने से आप यह जान चुके होंगे कि शब्दकोश का निर्माण कैसे होता है तथा उस शब्दकोश को देखने का तरीका क्या है। साथ ही शब्दकोश कितने प्रकार के होते हैं और शब्दकोश तथा ज्ञानकोश में क्या अंतर होता है। शब्दकोश की एक विधा थिसारस (समांतर कोश) पर भी आपको यह जानकारी मिली होगी कि इसका प्रयोक्ता कौन होता है तथा इसे कैसे देखा जाता है। इसके साथ ही गढ़वाली शब्दकोशों के प्रकाशन की जानकारी से भी आप अवगत हुए होंगे।

7.12 शब्दार्थ

वर्णानुक्रम- वर्णों का नियत क्रम, व्युत्पत्ति- उत्पत्ति, युक्तिसंगत- तर्कपूर्ण, भाषिक- भाषा से सम्बन्धित, सिलसिलेवार- क्रमवार, प्रविष्टि- प्रवेश या विवरण आदि लिखना, व्याकरणिक- व्याकरण सम्बन्धी, पदबंध- पदों का समूह।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर- 1. वर्णानुक्रम, 2. 1982, 3. समांतर कोश, 4. रमाकान्त बेंजवाल व बीना बेंजवाल 5. सत्य

7.13 संदर्भ

1. गढ़वाली शब्दकोश- जयलाल वर्मा
2. गढ़वाली शब्दकोश- मालचंद रमोला
3. गढ़वाली हिंदी शब्दकोश- अरविंद पुरोहित एवं बीना बेंजवाल
4. हिंदी गढ़वाली अंग्रेजी शब्दकोश- रमाकान्त बेंजवाल एवं बीना बेंजवाल
5. गढ़वाली भाषा की शब्द संपदा- रमाकान्त बेंजवाल
6. गढ़वाली हिंदी अंग्रेजी शब्दकोश- डॉ० अचलानंद जखमोला एवं भगवती प्रसाद नौटियाल
7. झिक्कल काम्ची उडायली- उमा भट्ट एवं चन्द्रकला रावत
8. हिंदी कुमाउंनी गढ़वाली जौनसारी शब्दकोश- भारती पाण्डे
9. अभिव्यक्ति और माध्यम- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद

7.14 निबन्धात्मक प्रश्न

1. गढ़वाली भाषा के प्रकाशित शब्दकोशों पर विस्तार से जानकारी दीजिए।
2. शब्दकोश तथा थिसारस (समांतर कोश) में क्या अंतर है? उदाहरण सहित स्पष्ट करें।

इकाई-8

गढ़वाली में अनुवाद (Traslation in Garhwali Language)

इकाई संरचना

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 कविता अनुवाद

8.4 कहानी अनुवाद

8.5 गढ़वाली से हिंदी में अभिलेख अनुवाद

8.6 जीवनी अनुवाद

8.7 अभ्यास प्रश्न

8.8 सारांश

8.9 शब्दार्थ

8.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

8.11 निबंधात्मक प्रश्न

8.1 प्रस्तावना

किसी भी भाषा में लिखी या बोली बात को दूसरी भाषा में बदलने को अनुवाद कहते हैं। एक भाषा की विचार सामग्री दूसरी भाषा में मौखिक या लिखित रूप में पहुँचाई जा सकती है। ये माना जाता है कि संस्कृत में लिखी पोथी 'वज्रच्छेदिका प्रज्ञापारमिता सूत्र' को सबसे पहले सन् 868 ई. में चीन की भाषा में अनुवाद किया गया था। साहित्य में अनुवाद मौलिक नहीं होने से उसका महत्व कम आंका जाता है। क्योंकि साहित्य के रूप में देखें तो मौलिक रचना का जो भाव अपनी भाषा में अभिव्यक्त होता है वह भाव किसी दूसरी भाषा में नहीं आ सकता। फिर भी अनुवाद का अपना महत्व है।

माना जाता है कि ईसाई मिशनरी ने सन् 1820 के आसपास बाइबिल 'न्यू टेस्टामेंट' ('नया नियम' बाइबिल का उत्तरार्द्ध, जिसमें ईसा मसीह की जीवनी, शिक्षाएँ और उनके शिष्यों द्वारा धर्म प्रचार शामिल हैं) का अनुवाद करवाया था और अमेरिकी मिशनरियों ने सन् 1876 में 'गोस्पेल ऑफ मैथ्यू' का गढ़वाली अनुवाद प्रस्तुत किया। इससे पहले गढ़वाली में अनुवाद की जानकारी नहीं मिलती है। ईसाई धार्मिक साहित्य के अलावा जहाँ तक गढ़वाली में अनुवाद की बात है वह 20वीं सदी से ही इसकी शुरूआत हुई। वर्ष 1902 में गोविन्दराम घिल्डियाल जी द्वारा 'हितोपदेश' का पांच खण्डों में गढ़वाली

अनुवाद प्रकाशित हुआ। सन् 1920 में कुलानंद स्वयंपाकी द्वारा अनुदित 'जर्जर मंजरी' का गढ़वाली अनुवाद 'गढ़भाषोपदेश' नाम से प्रकाशित हुआ। वर्ष 1940 के आसपास बलदेव प्रसाद नौटियाल जी ने वाल्मीकि का 'छाया रामायण' का तथा सन् 1947 के आसपास तुलाराम शास्त्री ने गीता के 'कर्मयोग' का गढ़वाली में अनुवाद किया। अबोधबंधु बहुगुणा ने सन् 1965 में 'गोविंद स्तोत्र' का 'भज गोविंद स्तोत्र' गढ़वाली अनुवाद किया। धर्मानंद जमलोकी एवं भोलादत्त देवरानी ने कालिदास के 'मेघदूत' का गढ़वाली में अनुवाद किया।

श्रीमद्भागवतगीता का डॉ० नंदकिशोर ढौंडियाल 'अरुण', मोहनलाल नौटियाल, जयदेव, वेदराज पोखरियाल, देवेन्द्र प्रसाद चमोली, गोपाल दत्त मिश्र, आदित्यराम दुदपुड़ी, बचन सिंह नेगी आदि ने गढ़वाली अनुवाद किया है। बचन सिंह नेगी, परशुराम थपलियाल, आदित्यराम दुदपुड़ी, देवेन्द्र प्रसाद चमोली आदि ने रामचरित मानस का गढ़वाली में अनुवाद किया है। सन् 1935 में तारादत्त गैरोला ने 'हिमालयन फॉक लोर' अंग्रेजी में तथा दीपक बिजल्वाण ने नरेन्द्र सिंह नेगी के गीतों का अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत किया है। वर्ष 1946 में 'स्नो बॉल्स ऑफ गढ़वाल' में नरेन्द्र सिंह भण्डारी ने 60 गढ़वाली लोक गीतों का अंग्रेजी अनुवाद किया। प्रेमलाल भट्ट ने अंग्रेजी नाटकों का गढ़वाली में अनुवाद किया है। भीष्म कुकरेती ने अनेक नाटकों, पुस्तकों एवं रचनाओं का गढ़वाली अनुवाद किया, जिसमें चरक संहिता मुख्य रूप से है। इनकी अनेक समीक्षाएँ एवं अनुवाद नेट पर उपलब्ध हैं।

डॉ० उमेश चमोला ने टॉलस्टाय की कहानियों 'छै फुटै जमीन' और विमल नेगी व महेशानंद ने 'गीतांजलि' का गढ़वाली अनुवाद किया है। नेत्र सिंह असवाल एवं गीतेश नेगी भी गीत, गजल, कविताओं का गढ़वाली अनुवाद कर रहे हैं। अखिलेश अलखनियां ने 'मधुशाला' का गढ़वाली अनुवाद किया है। रमेश पोखरियाल 'निशंक' की दर्जनभर पुस्तकों का गढ़वाली में अनुवाद हुआ है। शूरवीर सिंह रावत ने विवेकानंदः देशवासियों तैं वूंको संदेश, वीरेन्द्र पंवार, नरेन्द्र कठैत, गणेश खुगशाल 'गणी', बीना बेंजवाल, कांता घिल्डियाल आदि ने भी कुछ पुस्तकों के गढ़वाली अनुवाद किए हैं। देवेश जोशी ने अंग्रेजी शासन काल की सैनिकों की चिट्ठियों का अंग्रेजी रूपान्तरण प्रस्तुत किया है।

उक्त के अलावा नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया ने 50 हिंदी बाल साहित्य की पुस्तकों का गढ़वाली अनुवाद करवाया है। दो या तीन पुस्तकों का एक लेखक ने अनुवाद किया है।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः-

- अनुवाद विधा से परिचित होंगे।
- अनुवाद की आवश्यकता एवं महत्व समझेंगे।
- गढ़वाली में अनुवाद विधा की दशा-और दिशा के विषय में जानकारी हासिल करेंगे।

8.3 हंडा (हिंदी कविता) नीलेश रघुवंशी	बंठा (गढ़वाली अनुवाद)
एक पुराना और सुंदर हंडा	एक पुराणु अर सजिलु बंठा
भरा रहता उसमें अनाज	भर्यूं रैंदु छौ जे उंद नाज
कभी भरा जाता पानी	कबि भर्यै जांदु पाणि
भरे थे इससे पहले सपने	भर्यां छा यां से पैलि स्वीणा
वह हंडा	सु बंठा
एक युवती लाई अपने साथ दहेज में	एक ब्योंलि ल्यायि छै देजा मा अफु दगड़ि
देखती रही होगी रास्ते भर	देखदि रै होलि सैरा बाटा
उसमें घर का दरवाज़ा।	वे उंद घौरौ द्वार।
बचपन उसमें अटाटूट भरा था	बाळपन वे उंद ठसाठस भर्यूं छौ
भरे थे तारों से डूबे हुए दिन।	भर्यां छा गैंणौ डूब्यां दिन।
नहीं रही युवती	नि रै वा
नहीं रहे तारों से भरे दिन	नि रैन गैंणौन भर्यां दिन
बच नहीं सके उमंग से भरे सपने।	नि बचि सकिन उलार भर्यां स्वीणा।
हंडा है आज भी	बंठा छ आज बि
जीवित है उसमें	ज्यूंदो छ वे उंद
ससुराल और मायके का जीवन	मैत अर सौर्यासौ जीवन
बची है उसमें अभी	बच्यीं छ वे उंद अबि
जीने की गंध	जीणै गंध
बची है स्त्री की पुकार	बच्यीं छ जनानी धै
दर्ज है उसमें	दर्ज छ वे उंद
किस तरह सहेजती रही वह घर।	कै तरां सैंकदि रै वा घौर।
टूटे न कोई	टूटु ना क्वी
बिखरे न कोई	बिखरु ना क्वी
बचे रह सकें मासूम सपने	बच्यां रै सकन क्वांसा स्वीणा
इसी उधेड़बुन में	ये हि घंघतोळ मा
सारे घर में लुढ़कता फिरता है हंडा।	सैरा घौर मा घिरकणू रैंदु बंठा।

8.4 मुर्गा और बांग- विष्णु नागर (नीति कथा)

मुर्गे ने दिनभर बहुत दौड़-धूप की थी इसलिए रात को वह सोया तो उसकी नींद तभी खुली, जब सूरज आसमान पर चढ़ चुका था।

वह जागा तो उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। आज उसकी बांग के बगैर ही सवेरा हो गया था। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि जो आज तक नहीं हुआ, वह आज कैसे हो गया!

मुर्गा बहुत परेशान था मगर अपनी परेशानी किसे बताता? जिसे भी बताता, उसे यह 'रहस्य' पता चल जाता कि मुर्गे की बांग के बगैर भी सवेरा होने लगा है। आदमी को बताना तो सबसे खतरनाक था। वह कहता अब मुर्गे की क्या जरूरत? इसे मारो, पकाओ और खा जाओ।

मुर्गे का यह चिंतन जारी था कि तभी मालिक आया और उसे हलाल करने ले चला। मुर्गे ने अपनी तरह से मालिक को बार-बार समझाया कि आज भी सवेरा उसके बांग देने पर ही हुआ है। मगर मालिक तो मालिक था, उसने नहीं सुना।

हलाल होते समय मुर्गा अपने आप से भी नाराज था और अपने मालिक से भी। मालिक से इसलिए नाराज था कि सिर्फ एक दिन उसने बांग नहीं दी तो उसे हलाल कर दिया। अपने आप से नाराज इसलिए था कि पहली बार उसने झूठ बोला और फिर भी उसकी जान नहीं बची! इससे तो वह सत्यवादी बना रहता तो अच्छा था।

(बच्चा और गेंदः गुजरी शताब्दी से नीतिकथाएँ- विष्णु नागर से साभार)

मैर अर बांग (गढ़वाली अनुवाद)

मैरन दिनभर भौत दनका-दनकि करि छै। इलै वु रात मा स्ये त वेकि निंद तब खुलि जब सुर्ज सर्ग पर दिखेण लगी छौ।

वु उठि त वे तैं बड़ो अफसोस ह्वे। आज वेकि बांगा बगैरै सुबेर ह्वेगे। वेकि समझ मा नि छौ औणू कि जु आज तलक नि ह्वे, आज कनै ह्वेगे।

मैर भौत परेसान छौ पण अपणि परेसानि कै तैं बतौंदु? जे तैं बि बतौंदु वे तैं यु राज पता चलि जांदु। मैरै बांगा बगैर बि सुबेर होण लगी छै। मनखि तैं बतौण त सबचुलै खरतनाक छौ। वु बोलदु अब मैरै क्य जर्वत? ये सणि मारा, पका अर खै द्या।

मैर यनु सोचणू हि छौ कि तबारि मालिक ऐगे अर वे तैं हलाल कन्नौ ल्हीगे। मैरन अपणा हिसाबन गुसैं हर्बि-हर्बि समझायि कि आज बि सुबेर वेकि बांग देण पर हि ह्वे छ। पण गुसैं त गुसैं छौ, वेन नि सूणि।

हलाल होंदि दां मैर अफु से बि रुसायूं छौ अर अपणा मालिक से बि। गुसैं से इलै नाराज छौ कि सिरप एक दिन वेन बांग नि दीनि त वे तैं हलाल करि दीनि। अफु से गुस्सा इलै छौ कि पैलि दां वेन झूठ बोलि अर फिर बि वेकि जान नि बचि! यां से त वु सच्चु बण्यूं रैंदु त अच्छु छौ।

8.5 गढ़वाली भाषा की पहली लेखिका विद्यावती डोभाल

18वीं शताब्दी में प्रबल गढ़वाल राज्य के प्रसिद्ध एवं प्रभावशाली दीवान कृपाराम डोभाल के वंशज श्रीराम डोभाल के यहाँ 26 जनवरी, 1901 में विद्यावती जी का जन्म हुआ। माँ का नाम सीता देवी था। वह टिहरी के अकरी पट्टी में ग्राम सैंज पिपोला में पैदा हुई। उनके परनाना जी महाराजा विलासपुर (हिमाचल) के राज पुरोहित थे। जिनकी अकाल मृत्यु हुई। नाना-नानी ने विद्यावती का पालन-पोषण किया, हालांकि वे भी बहुत जल्द परलोक चले गए। उनके बाद मामाओं ने विद्यावती तथा इनकी चार बड़ी बहनों का पालन-पोषण किया।

तत्कालीन सामंती प्रथा की वजह से विद्यावती को शिक्षा से वंचित रहना पड़ा। वैसे एक राजकीय कन्या पाठशाला में कुछ दिन जाने का अवसर बालिका विद्यावती को प्राप्त हुआ था। जिससे इनके मन में शिक्षा प्राप्त करने की प्रबल अभिलाषा जाग उठी। पांच-छह दिन पढ़ने के बाद इनके चाचा जी आए और इन्हें अपने गाँव पिपोला ले गए। साढ़े बारह वर्ष की आयु में मामा और बड़ी मौसी ने विद्यावती का विवाह सकलाना घराने में किया। ताल्लुकेदार मुआफीदार साहब राय महेन्द्रदत्त सकलानी गढ़वाल राज्य के अंतर्गत उच्चाधिकारी थे। महेन्द्र दत्त सकलानी का दर्जा टिहरी के राजा के बाद दूसरा था। उनको पहली पत्नी से 11 बच्चे थे। ससुराल में सब प्रकार से सम्पन्नता थी। किसी प्रकार का अभाव नहीं था। हालांकि उस परिवार में आपसी तालमेल ठीक नहीं था। विद्यावती जी एवं उनके पति की उम्र में 30 साल का अंतर था। विवाह के बाद भी विद्यावती की पढ़ने की लगन बुढ़ापे तक ज्यों की त्यों बरकरार रही। 28 वर्ष की आयु तक विद्यावती नौ संतानों की माँ बन चुकी थीं। इनमें मात्र दो पुत्रियाँ व एक पुत्र जीवित रहे। 28 मार्च सन् 1928 में उनेके पति का भी अप्रत्याशित निधन हो गया।

एक तो मातृ-पितृ विहीन नव यौवना विद्यावती, ऊपर से सौतिया परिवार। विद्यावती के लिए वैधव्यपूर्ण जीवन निर्वाह करना अति दुष्कर था। विद्यावती स्वयं को असहाय समझने लगीं। हालांकि वह हिम्मत जुटाकर खुद से केवल एक साल छोटी अपनी सौतेली पुत्री मंगला देवी के साथ ही पढ़ने लगीं। घर के कामकाज के लिए नौकर-चाकर पर्याप्त थे। माता विद्यावती और पुत्री मंगला देवी के बीच अगाध प्रेम था। सन् 1918-19 से विद्यावती ने टूटे-फूटे शब्दों में आत्माभिव्यक्ति के लिए लेख लिखना और प्रकाशनार्थ भेजना शुरू किया। हाँ, अपने नाम के आगे सकलानी न लिखकर डोभाल लिखा करती थीं। क्योंकि उस समय महिलाओं को लेखन की स्वतंत्रता नहीं थी। न ही महिला लेखन का चलन था। विद्यावती जल्द ही इतनी सुशिक्षित हो गई कि शिक्षिका बन सकीं।

विद्यावती ने दो बार कन्या गुरुकुल में अध्यापिका का कार्य किया। हरिद्वार में भी दो पाठशालाओं में पढ़ाया। जब इनका आत्मविश्वास बढ़ा तो सन् 1934 में मूलचन्द कम्पनी में हवाई जहाज में विमान परिचारिका का कार्य किया। तत्कालीन समाज में घोर रुढ़िवादिता के पोषक जन के प्रति यह कार्य सर्वथा वर्जित था। तथापि साहसी और नित्य अग्रगामी विद्यावती ने विमान परिचारिका के पद पर कार्य किया। दुर्भाग्यवश विमान में आग लगने के कारण दुर्घटनाग्रस्त होने से परियोजना असफल हुई और बंद कर दी गई।

इसके पश्चात् सन् 1935-36 में छह महीने तक दो कन्या पाठशालाओं में अध्यापिका रहीं और 1937 में ही पंजाब के बहावलपुर राज्य में प्रधानाध्यापिका के पद पर कुशलतापूर्वक कार्य किया। धनी परिवारों की बेटी-बहुओं को धार्मिक ग्रंथ पढ़ाने का काम भी वर्षों तक करती रहीं। विद्यावती मिचनाबाद में ही 22 अगस्त, 1947 तक रहीं। वे अपने नाम के आगे 'समाज पीड़िता' लिखती थीं। अपने पुत्र को सैन्य अधिकारी बनाना उनके संघर्षपूर्ण जीवन की बड़ी उपलब्धि थी।

विद्यावती जी ने आजीवन साहित्य सृजन एवं महिला उत्थान के काम में अपना अमूल्य योगदान दिया। वे सदैव शिक्षा के प्रचार-प्रसार में लगी रहीं। उनकी अभिरुचि चित्रांकन में भी थी। कुछ चित्र उनकी पुत्री वसुंधरा ने अपनी माँ की श्रद्धांजलि पुस्तिका (वर्ष 1988) में भी छपवाये। विद्यावती जी को बागवानी का भी शौक था। जो उनकी दिनचर्या में शामिल था। वे पशु-पक्षी प्रेमी थीं। जब तक महेन्द्रपुर में रहीं उन्होंने कुत्ते, बिल्ली, गाय पालीं। विद्यावती ने हिंदी, संस्कृत व धार्मिक ग्रंथों के अतिरिक्त मुस्लिम समाज की कुरीतियों के विरोधी पंजाबी शायर मौलाना अल्ताफ हुसैन 'हाली' का अध्ययन किया। उनकी दो पुस्तकों का उर्दू से हिंदी में अनुवाद भी किया। विद्यावती जी हरिद्वार प्रवास के दौरान सन् 1933 में लाहौर तथा क्वेटा की गढ़वाली सामाजिक संस्थाओं के संपर्क में आईं। सन् 1947 में स्वाधीनता के साथ ही पाकिस्तान बनने पर बहुत बुरा हाल हुआ। वहाँ हृदय को दहलाने वाले भयंकर दृश्य देखे। जिस घर में वे रहती थीं उसके समीप के घर में रहने वाले मुसलमान भाई की मदद से सब कुछ छोड़कर अपनी जान बचा सकी थीं। भिखारिन का वेष बनाकर आठ माह अबोहर में रहीं। बाद में देहरादून आकर रिफ्यूजी स्कूल काबुल हाउस में पढ़ाया।

सन् 1923 से इनकी लिखी कविताएँ इलाहाबाद की चांद, गृहलक्ष्मी तथा मेरठ से सुकवि में प्रकाशित हुईं। विद्यावती जी ने मई सन् 1928 में 'अमृत की बूंदें' और 'पगली के प्रलाप' पुस्तकों का प्रकाशन किया। इसके बाद 'तीन गढ़वाली गीतिका' (1975), 'माँ की ममता', 'बाल विधवा', 'स्वर्गीय मंगला देवी की जीवनी', 'श्रद्धांजलि', 'खण्डूड़ी कुल की विभूतियाँ' और 'एवरेस्ट के देवता' जैसी किताबें लिखीं। गढ़वाली प्रेस के स्वामी और प्रतिष्ठित 'गढ़वाली' पत्रिका के संपादक विश्वम्भर दत्त चंदोला जी ने विद्यावती जी को लेखन के लिए प्रोत्साहित किया और कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित कीं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में इनके लेख एवं कविताएँ प्रकाशित होती रहीं। विद्यावती जी को वर्ष 1987 में अखिल भारतीय साहित्य समिति, मथुरा द्वारा 'राष्ट्रभाषा आचार्या' की उपाधि, गंगा प्रसाद साहित्यिक मंच,

टिहरी द्वारा अभिनंदन एवं 'जय श्री सम्मान' से सम्मानित किया गया। 25 नवम्बर, 1993 को विद्यावती डोभाल जी पंचतत्व में लीन हो गईं।

(उत्तराखण्ड की महिलाएँ : संघर्ष और सफलता की कहानियाँ- वीणा पाणी जोशी से साभार)

गढ़वाळि भाषै पैलि महिला लिख्वार विद्यावती डोभाल (गढ़वाली अनुवाद)

18वीं सदि मा प्रबल गढ़वाळ राज्या परसिद्ध अर जण्या-मण्या दीवान कृपाराम डोभाल का वंशज श्रीराम डोभाला यख 26 जनवरी सन् 1901 मा विद्यावती जी को जलम ह्वे। ब्वे को नौं सीता देवी छौ। सि टीरि मा अकरी पट्‌या सैंज पिपोला गौं मा जलमिन। वूंका परनाना जी माराजा बिलासपुरा (हिमाचल) राजपुरोहित छा। जौंकि असमै मिरत्यु ह्वेगे। नना-ननिन विद्यावती तैं सैंति-पाळि, हालांकि सि बि भौत जल्दि परलोक चलि गेन। वूंका बाद मामौंन विद्यावती अर वूंकि चार बड़ि बैण्यौं कु लालन-पालन करि।

वे बगतै सामन्ती परथै वजै से विद्यावती जी तैं पढ़ै से वंचित रैण पड़ि। वन एक राजकीय कन्या पाठशाला मा कुछ दिन जाणौ मौका नौनि विद्यावती तैं मिलि जांसे यूंका मन मा पढ़णै उत्कट इच्छा जागि। पाँच-छै दिन पढ़णा बाद यूंका चचा जी ऐन अर यूं तैं अपणा गौं पिपोला ल्हीगिन। साढ़ै बारा सालै उमर मा मामा अर बड़ि मौसिन विद्यावती कु ब्यो सकलाना घराना मा करै। ताल्लुकेदार मुआफीदार साहबराय महेन्द्रदत्त सकलानी गढ़वाळ राज्या अंतर्गत उच्च अधिकारि छा। महेन्द्रदत्त सकलानी कु दर्जा टीरी रज्जा बाद दुसरो छौ। वूंका पैलि घौरवाळि से 11 बच्चा छा। सौर्यास मा सबि परकारै संपन्नता छै, कै बि तरां कि कमि-कसर नि छै। हालांकि वे कुटुम मा आपसी तालमेल ठिक नि छौ। विद्यावती जी अर वूंका पति कि उमर मा 30 सालौ फरक छौ। ब्यो का बाद बि विद्यावती जी कि पढ़णै या लगन बुढ्यांदि दौं तलक जन्योतनि बणी रै। 28 बरसै उमर तलक विद्यावती जी नौ बच्चौं कि ब्वे बणिगि छा। यूं मदे सिरफ द्वी नौनि अर एक नौनु ज्यूंदा रैन। 28 मार्च, 1928 मा विद्यावती जी का पति कु बि अचणचक निधन ह्वेगे।

एक त ब्वे-बाबै छत्रछाया पैलि हि उठिगे छै अर वे पर सौतेलु कुटुम। विद्यावती जी सणि विधवै जिन्दगी बितौण भौत कठिण ह्वेगे। अफु तैं असहाय समझण लगिन। हालांकि सि हिकमत बिटोळी अफु से सिरफ एक बर्स छोटि अपणि सौतेलि बेटि मंगला देवी का दगड़ा हि पढ़ण लगिन। घौरा काम-काजा वास्ता नौकर-चाकर भौत छा। ब्वे विद्यावती अर बेटि मंगला देवी का बीच गैरु प्रेम छौ। सन् 1918-19 बिटि विद्यावती जीन टूट्यां-फूट्यां शब्दों मा मना भाव परगट कन्ना वास्ता लेख लिखण अर छपणौ भेजण सुरु करिन। हँ, अपणा नौं का अगनै सकलानी नि लिखिक डोभाल लिखद छा किलैकि वे जमाना मा जनान्यूं तैं लिखणै आजादि नि छै। ना हि जनान्यूं का लिखणौ रिवाज छौ। विद्यावती जी जल्द हि बिना इस्कूल जयां इतगा पढ़ि-लिखि गेन कि शिक्षिका बणि गेन।

विद्यावती जीन द्वी दौं कन्या गुरुकुल मा अध्यापन करि। हरिद्वार मा बि द्वी इस्कुल्यूं मा पढ़ायि। जब यूंको मनोबल बढ़ि त सन् 1934 मा मूलचन्द कम्पनी मा हवै जाज मा विमान परिचारिका बणिन। वे जमाना मा

घोर रुढ़िवादि विचारों वाळा मनख्यूं का परति यो काम हरहाल मा वर्जित छौ, फेर बि सूरो सांसु करी सदानि अगनै बढ़ण वाळि विद्यावतिन विमान परिचारिका पद पर काम करि। दुर्भाग से विमान मा आग लगणा कारण हादसा होण से परियोजना नाकाम रै अर बंद ह्वेगे।

येका बाद सन् 1935-1936 मा छै मैना तलक द्वी कन्या पाठशालों मा अध्यापिका रैन अर 1937 मा हि पंजाबा बहावलपुर राज्य मा प्रधानाध्यापिका पद पर भौत हौंस अर रौंस का दगड़ा काम करि। सौकार कुटुम्वी बेटि-ब्वार्यूं सणि धार्मिक ग्रंथ पढ़ौणौ कारिज बि बरसों तलक करदि रैन, विद्यावती जी मिचनाबाद मा हि 22 अगस्त, 1947 तलक रैन। सि अपणा नौं का अगनै 'समाज पीड़िता' लिखदा छा। अपणा नौना तैं सेना मा अफसर बणौण वूंका संघर्षपूर्ण जीवनै बड़ि उपलब्धि छै।

विद्यावती जीन जिंदगि भर साहित्य लिखण अर जनान्यूं तैं अगनै बढ़ौण मा अपणु अमूल्य योगदान दीनि। सि सदानि शिक्षा प्रचार-प्रसार मा लगीं रैन। वूंकु मन चित्रकारि कन्न मा खूब रमद छौ। कुछ चित्र वूंकि नौनि वसुंधरान अपणि ब्वे कि श्रद्धांजलि पुस्तिका (वर्ष 1988) मा बि छपवैन। विद्यावती जी तैं बाड़ी-सग्वाड़्यौं को बि खूब शौक छौ। जु वूंकि सदानी आदत जन बणी छै। सि धौन-चौन सी बि खूब लाड-प्यार करदा छा। जब तलक सि महेन्द्रपुर मा रैन वूंन कुत्ता, बिराळा, गौड़ि पाळिन। विद्यावती जीन हिंदी, संस्कृत अर धार्मिक पोथ्यों का अलावा मुस्लिम समाजै कुरीत्यों का विरोधी पंजाबी शायर मौलाना अल्ताफ हुसैन 'हाली' को साहित्य पढ़ि। वूंकि द्वी किताब्यूं को उर्दू से हिंदी मा अनुवाद बि करि। विद्यावती जी जब हरिद्वार रैन तब सन् 1933 मा लाहौर अर क्वेटै गढ़वाळि सामाजिक संस्थों का संपर्क मा ऐन। सन् 1947 मा जब देस आजाद ह्वे तब पाकिस्तान बण्न पर भौत बुरा हाल ह्वेन। वख जिकुड़ि तैं झकोळण वाळा दृश्य देखिन। जे घौर मा सि रैंदा छा वेका नजीक रैण वाळा मुसलमान भै-बंदौंन वूंकि मदद करि, ये तरां से वूंकि जान बचि सकि। मंगण्या बणी तैं आठ मैना अबोहर मा रैन। बाद मा देहरादून ऐ तैं रिफ्यूजी स्कूल काबुल हाउस मा पढ़ायि।

सन् 1923 बिटि यूंकि लिखीं कविता इलाहाबादै 'चांद', 'गृहलक्ष्मी' अर मेरठ बिटि 'सुकवि' मा छपण बैठिन। विद्यावती जीन मई सन् 1928 मा 'अमृत की बूंदें' अर 'पगली के प्रलाप' किताबों को प्रकाशन करि। येका बाद 'तीन गढ़वाली गीतिका' (1975), 'माँ की ममता', 'बाल विधवा', 'स्वर्गीय मंगला देवी की जीवनी', 'श्रद्धांजलि', 'खण्डूड़ी कुल की विभूतियाँ' और 'एवरेस्ट के देवता' जन किताब लिखिन। गढ़वाली प्रेसा मालिक अर जाणि-माणि 'गढ़वाली' पत्रिका संपादक विश्वम्भरदत्त चंदोला जीन विद्यावती जी तैं लिखणौ प्रेरित करि अर वूंकि कुछ किताब बि छपैन। अलग-अलग पत्र-पत्रिकों मा लेख अर कविता प्रकाशित होणी रैन। विद्यावती जी वर्ष 1987 मा अखिल भारतीय साहित्य मथुरा बिटि 'राष्ट्रभाषा आचार्या' कि उपाधि, गंगा प्रसाद साहित्यिक मंच, टिहरी बिटि भव्य अभिनंदन का दगड़ा 'जय श्री सम्मान' से सम्मानित ह्वेन। 25 नवम्बर, 1993 का दिन विद्यावती डोभाल जी भग्यान ह्वेगेन।

8.6 महाराजा प्रदीपसाह का 1757 ई० द्यूल केदारेश्वर मंदिर शासनलेख

राज मुद्रा 3 वृतों में	राजमुद्रा 3 वृत्तों में
1. श्री बदरीनाथ जी दरम्यान दीक गुसा-	बदरीनाथ जी को बीच में रख कर
2. -ञी इछागीर जी सुमेरगीर जी कौ हम-	गुसाई इच्छा गिरी व सुमेर गिरी को
3. -न धर्मपत्र लेषी दीन्यु (1) जो तुमारी गा-	धर्मपत्र लिख दिया। पूर्वकाल में
4. -ण पाछ की हमारा पास छ सो धै जो	आपका धन जो हमने संन्यासियों से
5. तुमारा हातु और संन्यास्यु को कर्ज गा-	उधार लिया था राज्य की भलाई के
6. -डा य तुमारो कर्ज गाड़े मुलक का वास्ता	कार्यों में लगा हुआ है।
7. गाडण लग्यां छौ (1) से रुपैञा हमन	इस फसल पर आपका धन-मूल व
8. ञी फसल पर सब ते पैले रास ब्याज	ब्याज अलग-अलग
9. सुदा हमारा चुकौणा (1) तब और का-	चुका दिया जायेगा। उसके बाद ही
10. म करणो (1) तुमारा रुपैञा तारण का	हम अन्य कार्य करेंगे।
11. फीकर का वास्ता श्रीवीलास तष आं-	आपके धन की चिंता मिटाने के लिए
12. द (1) तुमन षात्र जमा सेती हमारो तष	श्रीविलास वहाँ आयेंगे। आप ध्यान से
13. को काम चलाइ देणो (1) 1814 भादो 28 (1)	वहाँ का काम निपटा देना। संवत् 1814 के सौर मास भादौं 28वां दिन।

(संदर्भ- उत्तराखण्ड का नवीन इतिहास- डॉ० यशवन्त सिंह कठोच, 2016, पृ. 391, हिंदी अनुवाद- श्री संदीप बडोनी)

8.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. गढ़वाली भाषा में सर्वप्रथम किसका अनुवाद हुआ?
2. 'हिमालयन फॉक लोर' के रचयिता कौन हैं?
3. 'गीतांजलि' के अनुवादक कौन हैं?
4. 'हंडा' कविता की कवि का नाम बताइये।
5. धर्मानंद जमलोकी जी ने 'मेघदूत' का गढ़वाली अनुवाद किया है। सत्य/असत्य

8.8 सारांश

इस इकाई के अध्ययन करने से आप यह जान चुके होंगे कि दुनिया में कब अनुवाद की शुरूआत हुई तथा अनुवाद का क्या महत्व है। हालांकि गढ़वाली भाषा गढ़वाल की राजभाषा रही है लेकिन गढ़वाली भाषा में पुस्तक रूप में साहित्य लेखन अनुवाद (न्यू टेस्टामेंट) से ही शुरू हुआ। वर्तमान में श्रीमद्भागवतगीता, रामायण, गीतांजलि, विवेकानंद का संदेश, कविता, कहानियों, उपन्यास, टॉलस्टाय की कहानियों का गढ़वाली में अनुवाद हुआ है।

8.9 शब्दार्थ

मुर्गा- मैर, चरक संहिता- ऋषि चरक के विधि या नियमों का संग्रह, विनिमय- आदान-प्रदान, शताब्दी- सौ वर्षों का समय, ताल्लुकेदार- जमींदार, मुआफीदार- माफीदार।

उत्तर-1. न्यू टेस्टामेंट, 2. तारादत्त गैरोला, 3. विमल नेगी व महेशानंद, 4. नीलेश रघुवंशी 5. सत्य

8.10 संदर्भ

1. भीष्म कुकरेती जी का आलेख नेट से।
2. बच्चा और गेंद- विष्णु नागर
3. संदीप बडोनी द्वारा अभिलेख का हिंदी अनुवाद
4. उत्तराखण्ड की महिलाएँ- वीणा पाणी जोशी
5. उत्तराखण्ड का नवीन इतिहास- डॉ० यशवन्त सिंह कठोच

8.11 निबन्धात्मक प्रश्न

1. गढ़वाली की प्रथम महिला लेखिका विद्यावती डोभाल का जीवन परिचय गढ़वाली में लिखें।
2. गढ़वाली में अनुवाद विधा पर प्रकाश डालें।